इस्लाही ख़ुतबात

12

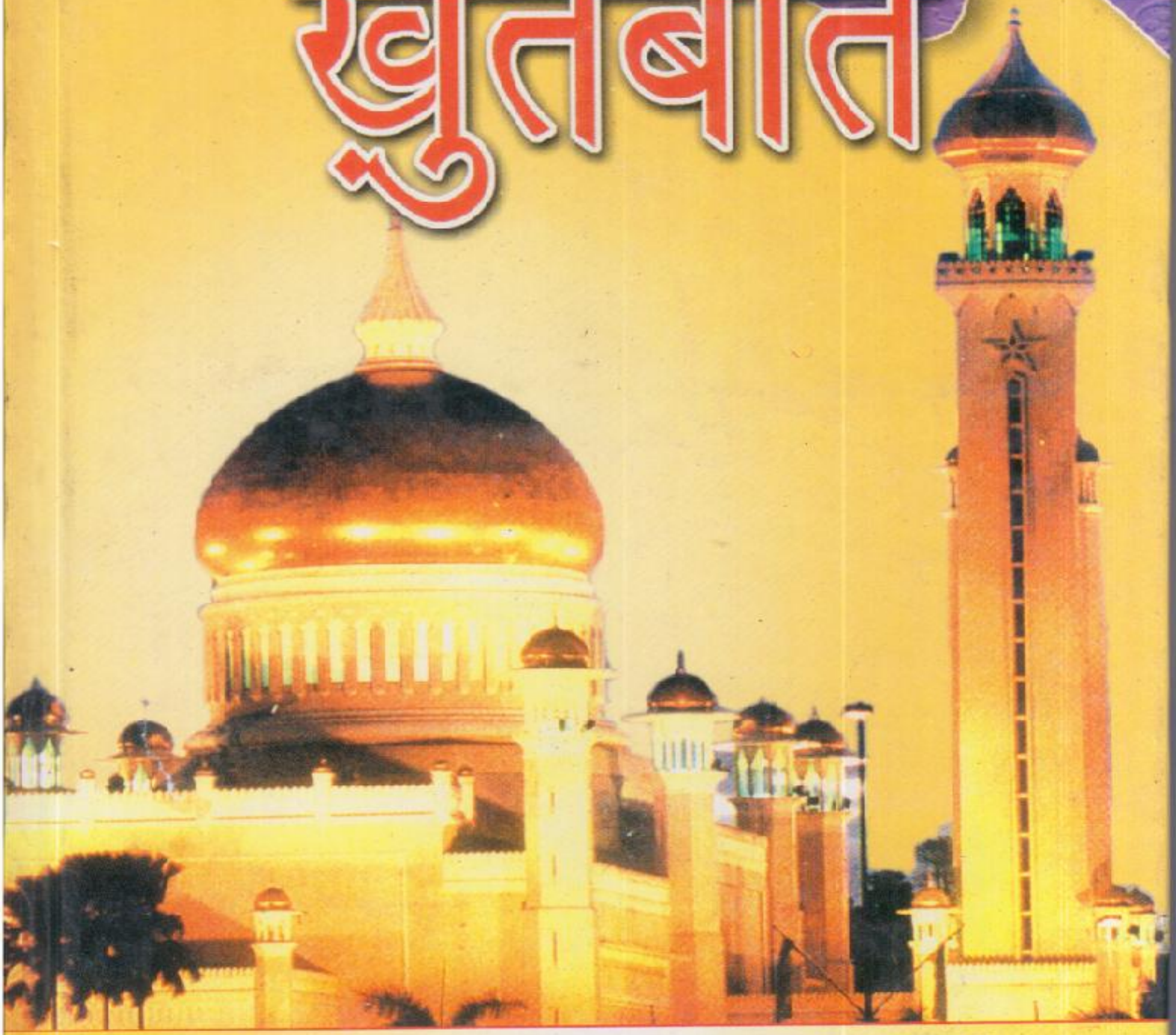

जस्टिस मोलाना मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी साहिब उस्मानी

RELIABLE SHOP
Badi Masjid (Markaz) Gali,
Ranitalav, SURAT-395003.
Mo. 98981-36436

इस्लाही ख़ुतबात

जिल्द - 12

तक़रीरें

जस्टिस मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी साहिब उस्मानी

हिन्दी अनुवादः मुहम्मद इमरान क़ासमी

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो (प्रा. लि.)
422, मटिया महल, उर्दू मार्किट, जामा मस्जिद
देहली-110006

सर्वाधिकार प्रकाशक के लिए सुरक्षित हैं

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

नाम किताब	इस्लाही ख़ुतबात जिल्द- 12
तक़रीरें	मौलाना मुहम्मद तक़ी उस्मानी
हिन्दी अनुवाद	मुहम्मद इमरान क़ासमी
संयोजक	मुहम्मद नासिर ख़ान
तायदाद	2100
प्रकाशन वर्ष	मई 2004
कम्पोज़िंग	इमरान कम्प्यूटर्स मुज़फ़्फ़र नगर (0131-2442408)

❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि०

422, मटिया महल, उर्दू मार्किट, जामा मस्जिद देहली-110006

फ़ोन आफ़िस, 23289786, 23289159 आवास, 23280786

पेश लफ़्ज़

हज़रत मौलाना मुहम्मद तक़ी साहिब उस्मानी

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

الحمد للہ و کفیٰ وسلام علی عبادہ الذین اصطفیٰ، امابعد:

अपने बाज़ बुज़ुर्गों के इरशाद की तामील में नाचीज़ कई साल से जुमे के दिन अस्र के बाद जामा मस्जिद बैतुल मुकर्रम गुलशन इक़बाल कराची में अपने और सुनने वालों के फ़ायदे के लिए कुछ दीन की बातें किया करता है। इस मज्लिस में हर तब्क़ा-ए-ख़्याल के हज़रात और औरतें शरीक होते हैं। अल्हम्दु लिल्लाह! अह्क़र को ज़ाती तौर पर भी इसका फ़ायदा होता है और अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से सुनने वाले भी फ़ायदा महसूस करते हैं। अल्लाह तआला इस सिलसिले को हम सब की इस्लाह का ज़रिया बनाएँ। आमीन।

अह्क़र के ख़ुसूसी मददगार मौलाना अ़ब्दुल्लाह मेमन साहिब सल्ल-महू ने कुछ मुद्दत से अह्क़र के उन बयानात को टेप रिकार्डर के ज़रिये महफ़ूज़ करके उनके कैसेट तैयार करने और उनको शाया करने का एहतिमाम किया, जिसके बारे में दोस्तों से मालूम हुआ कि अल्लाह के फ़ज़्ल से उनसे भी मुसलमानों को फ़ायदा पहुँच रहा है।

उन कैसेटों की तायदाद अब कई सौ हो गयी है। उन्हीं में से कुछ कैसेटों की तक़रीरें मौलाना अ़ब्दुल्लाह मेमन साहिब सल्ल-महू ने लिख भी लीं और उनको छोटे छोटे रिसालों की शक्ल में शाया किया। अब वह उन तक़रीरों का मजमूआ "इस्लाही ख़ुतबात" के नाम से शाया कर रहे हैं।

उनमें से बाज़ तक़रीरों पर नाचीज़ ने नज़रे-सानी भी की है, और मौसूफ़ ने उन पर एक मुफ़ीद काम भी किया है, कि तक़रीरों में जो हदीसें आती हैं उनको असल किताबों से निकाल करके उनके हवाले भी दर्ज कर

दिए हैं, और इस तरह उनका फ़ायदा और ज़्यादा बढ़ गया है।

इस किताब के मुताले (अध्ययन) के वक़्त यह बात ज़ेहन में रहनी चाहिए कि यह कोई बाक़ायदा तसनीफ़ नहीं है, बल्कि तक़रीरों का खुलासा है जो कैसेटों की मदद से तैयार किया गया है। इसलिये इसका अन्दाज़ तहरीरी नहीं बल्कि ख़िताबी है। अगर किसी मुसलमान को इन बातों से फ़ायदा पहुँचे तो यह महज़ अल्लाह तआला का करम है, जिस पर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करना चाहिए। और अगर कोई बात ग़ैर मोहतात या ग़ैर-मुफ़ीद है तो वह यक़ीनन अह्क़र की किसी ग़लती या कोताही की वजह से है। लेकिन अल्हम्दु लिल्लाह! इन बयानात का मक़सद तक़रीर बराय तक़रीर नहीं, बल्कि सब से पहले अपने आपको और फिर सुनने वालों को अपनी इस्लाह की तरफ़ मुतवज्जह करना है।

अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल व करम से इन ख़ुतबात को ख़ुद अह्क़र की और तमाम पढ़ने वालों की इस्लाह (सुधार) का ज़रिया बनायें, और ये हम सब के लिए ज़ख़ीरा-ए-आख़िरत साबित हों। अल्लाह तआला से यह दुआ भी है कि वह इन ख़ुतबात के मुरत्तिब और नाशिर (प्रकाशक) को भी इस ख़िदमत का बेहतरीन सिला अ़ता फ़रमाएँ। आमीन।

मुहम्मद तक़ी उस्मानी
दारुल उलूम कराची 14

بسم الله الرحمٰن الرحيم

प्रकाशक की ओर से

अल्हम्दु लिल्लाह "इस्लाही खुतबात" की बारहवीं जिल्द आप तक पहँचाने की हम सआदत हासिल कर रहे हैं। ग्यारहवीं जिल्द की मक़बूलियत और फ़ायदेमन्द होने के बाद मुख़्तलिफ़ हज़रात की तरफ़ से बारहवीं जिल्द को जल्द से जल्द शाया करने का शदीद तक़ाज़ा हुआ, और अब अल्हम्दु लिल्लाह, दिन रात की मेहनत और कोशिश के नतीजे में सिर्फ़ चन्द माह के अन्दर यह जिल्द तैयार होकर सामने आ गयी। इस जिल्द की तैयारी में बिरादरे मुकर्रम मौलाना अ़ब्दुल्लाह मेमन साहिब ने अपनी मसरूफ़ियात के साथ-साथ इस काम के लिए अपना क़ीमती वक़्त निकाला, और दिन रात की मेहनत और कोशिश करके बारहवीं जिल्द के लिए मवाद तैयार किया। अल्लाह तआ़ला उनकी सेहत और उम्र में बरकत अ़ता फ़रमाए, और मज़ीद आगे काम जारी रखने की हिम्मत और तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन।

हम जामिया दारुल उलूम कराची के उस्तादे हदीस जनाब मौलाना महमूद अशरफ़ उस्मानी साहिब मद्दज़िल्लहुम और मौलाना अ़ज़ीज़ुर्रहमान साहिब मद्दज़िल्लहुम के भी शुक्र गुज़ार हैं, जिन्होंने अपना क़ीमती वक़्त निकाल कर इस पर नज़रे-सानी फ़रमाई, और मुफ़ीद मश्विरे दिए, अल्लाह तआ़ला दुनिया व आख़िरत में उन हज़रात को बेहतरीन अज्र अ़ता फ़रमाए। आमीन।

तमाम पढ़ने वालों से दुआ़ की दरख़्वास्त है कि अल्लाह तआ़ला इस सिलसिले को और आगे जारी रखने की हिम्मत और तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, और इसके लिए साधनों और असबाब में आसानी पैदा फ़रमाए। और इस काम को इख़्लास के साथ जारी रखने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

.....प्रकाशक

ख़ुतबात की मुख़्तसर फ़ेहरिस्त

(124)	ख़ुश-नसीबी की तीन निशानियाँ	19 - 43
(125)	जुमा अल्-विदा की शरई हैसियत	44 - 56
(126)	ईदुल्-फ़ित्र- एक इस्लामी त्यौहार	57 - 67
(127)	जनाज़े के आदाब और छींकने के आदाब	68 - 86
(128)	ख़ुश-मिज़ाजी से मिलना सुन्नत है	87 - 105
(129)	हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की आख़िरी वसीयतें	106 - 130
(130)	यह दुनिया खेल-तमाशा है	131 - 154
(131)	दुनिया की हक़ीक़त	155 - 172
(132)	सच्ची तलब पैदा करें	173 - 192
(133)	क़ुरआन करीम का ख़त्म शरीफ़ और दुआ	193 - 208

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

क्र.स.	क्या?	कहाँ?
	(124) ख़ुश-नसीबी की तीन निशानियाँ	
1.	पहली चीज़: बड़ा और खुला हुआ घर	19
2.	वुज़ू के बाद की दुआ	20
3.	इनसान का अपना घर हो	20
4.	हर अंग धोने की अलग दुआ	21
5.	ये अच्छी दुआएँ हैं	23
6.	वे दुआएँ जो सुन्नत हैं	23
7.	दोनों दुआओं में फ़र्क़ करना चाहिये	24
8.	असल चीज़ "बरकत" है	24
9.	पैसा अपने आप में राहत की चीज़ नहीं	25
10.	इब्रतनाक वाक़िआ	25
11.	रुपये से राहत नहीं ख़रीदी जा सकती	25
12.	ख़राब पैसा काम नहीं आता	26
13.	मालदार तबक़ा ज़्यादा परेशान है	27
14.	बरकत नहीं तो माल बेकार है	27
15.	घर की कुशादगी माँगने की चीज़	28
16.	'नेक पड़ोसी' बड़ी नेमत है	28
17.	हज़रत अबू हमज़ा रहमतुल्लाहि अलैहि का वाक़िआ	29
18.	'ख़ुशगवार सवारी' बड़ी नेमत है	30
19.	तीन चीज़ों में नहूसत	30
20.	मकान में नहूसत का मतलब	31
21.	सवारी में नहूसत	31
22.	अच्छी बीवी दुनिया की जन्नत	32

क्र.स.	क्या?	कहाँ?
23.	बुरे पड़ोसी से पनाह माँगना	32
24.	यह औरत जहन्नमी है	33
25.	यह औरत जन्नती है	34
26.	जहन्नमी होने की वजह	34
27.	यह ज़बान जहन्नम में डालने वाली है	34
28.	नफ़्ली इबादतें गुनाहों के अज़ाब से नहीं बचा सकतीं	35
29.	ज़बान की हिफ़ाज़त करें	35
30.	मुफ़्ती अज़ीज़ुर्रहमान साहिब का बेवाओं की ख़िदमत करना	36
31.	किसी को मुँह पर नहीं झुठलाना चाहिये	37
32.	असली मुसलमान कौन है?	37
33.	पड़ोसन की बकरी का रोटी खा जाना	38
34.	रोटी की वजह से पड़ोसी को तकलीफ़ मत देना	39
35.	हम उस रोटी की क़द्र क्या जानें	40
36.	ऐसा पड़ोसी जन्नत में नहीं जाएगा	40
37.	एक नौ-मुस्लिम अंग्रेज़ का वाक़िआ	41
38.	पड़ोस की भेजी हुई चीज़ की क़द्र करनी चाहिये	41
39.	यहूदी पड़ोसी को गोश्त का हदिया	42
40.	पड़ोसी के साथ अच्छा सुलूक करना	43
	(125) जुमा अल्-विदा की शरई हैसियत	
1.	मुबारक महीना	44
2.	आख़िरी जुमा और ख़ास तसव्वुरात	45
3.	जुमअतुल्-विदा कोई त्यौहार नहीं	45
4.	यह आख़िरी जुमा ज़्यादा क़ाबिले क़द्र है	45
5.	अल्-विदाई जुमा और शुक्र का जज़्बा	46
6.	ग़ाफ़िल बन्दों का हाल	46
7.	नमाज़-रोज़े की नाक़द्री मत करो	47

क्र.स.	क्या?	कहाँ?
8.	सज्दे की तौफ़ीक़ बड़ी नेमत है	48
9.	आज का दिन डरने का दिन भी है	48
10.	तीन दुआओं पर तीन बार आमीन	49
11.	इन दुआओं की अहमियत के असबाब	50
12.	माँ-बाप की ख़िदमत करके जन्नत हासिल न करना	50
13.	हुज़ूर सल्ल० का नाम सुनकर दुरूद शरीफ़ न पढ़ना	51
14.	दुरूद पढ़ने में कन्जूसी न करें	51
15.	रमज़ान गुज़र जाने के बावजूद मग़फ़िरत न होना	52
16.	मग़फ़िरत के बहाने	53
17.	अल्लाह तआला से अच्छी उम्मीद रखो	53
18.	ईदगाह में सब की मग़फ़िरत फ़रमाना	53
19.	वरना तौफ़ीक़ क्यों देते?	54
20.	ईद के दिन गुनाहों में बढ़ौतरी	54
21.	मुसलमानों की ईद दुनिया की दूसरी क़ौमों से निराली है	55
22.	ईद की ख़ुशी का हक़दार कौन?	56
	(126) ईदुल-फ़ित्र- एक इस्लामी त्यौहार	
1.	रोज़ेदार के लिए दो ख़ुशियाँ	57
2.	इफ़्तार के वक़्त ख़ुशी	58
3.	इस्लामी त्यौहार दूसरे मज़हबों के त्यौहारों से अलग तरह के हैं	58
4.	इस्लामी त्यौहार गुज़रे ज़माने की किसी घटना से जुड़े हुए नहीं	59
5.	"ईदुल-फ़ित्र" रोज़ों के पूरा होने पर इनाम	60
6.	"ईदुल-अज़्हा" हज के पूरा होने पर इनाम	60
7.	ईद का दिन "इनाम का दिन" है	61
8.	इनसान की पैदाईश पर फ़रिश्तों के एतिराज़ का जवाब	62
9.	आज मैं इन सब की मग़फ़िरत कर दूँगा	63
10.	ईदगाह में नमाज़ अदा की जाए	63

क्र.स.	क्या?	कहाँ?
11.	अपने आमाल पर नज़र मत करो	64
12.	उनके फ़ज़्ल से उम्मीद रखो	64
13.	हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाहि अ़लैहि का इरशाद	65
14.	अ़मल किये बग़ैर उम्मीद बाँधना ग़लती है	65
15.	आईन्दा भी इस दिल को साफ़ रखना	66
16.	खुलासा	67
	(127) जनाज़े के आदाब और छींकने के आदाब	
1.	जनाज़े के पीछे चलने का हुक्म मर्दों के लिए है	68
2.	जनाज़े के पीछे चलने की फ़ज़ीलत	69
3.	जनाज़े में शिर्कत के वक़्त नीयत क्या हो?	69
4.	जनाज़े के साथ चलते वक़्त कलिमा-ए-शहादत पढ़ना	70
5.	जनाज़ा उठाते वक़्त मौत का ध्यान करें	71
6.	जनाज़े के आगे न चलें	71
7.	जनाज़े को कन्धा देने का तरीक़ा	71
8.	जनाज़े को तेज़ क़दम से लेकर चलना	72
9.	जनाज़ा ज़मीन पर रखने तक खड़े रहना	73
10.	इस्लामी अलफ़ाज़ और परिभाषायें	73
11.	इस्लामी परिभाषाओं से जानकारी न होने का नतीजा	73
12.	अंग्रेज़ी अलफ़ाज़ का रिवाज	74
13.	आज "मआ़रिफ़ुल क़ुरआन" समझ में नहीं आती	74
14.	छींकने के आदाब	75
15.	जमाई सुस्ती की निशानी है	75
16.	हुज़ूर सल्ल० का आ़जिज़ी और सुस्ती से पनाह माँगना	76
17.	छींक अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से है	77

क्र.स.	क्या?	कहाँ?
18.	अल्लाह तआला को मत भूलो	77
19.	यह सुन्नत छूटती जा रही है	78
20.	छींकने वाले का जवाब देना वाजिब है	78
21.	अलबत्ता वाजिब अ़लल्-किफ़ाया है	78
22.	'फ़र्ज़े-ऐन' और 'फ़र्ज़े-किफ़ाया' का मतलब	79
23.	सुन्नत अ़लल्-किफ़ाया	79
24.	यह मुसलमान का एक हक़ है	80
25.	कितनी बार जवाब देना चाहिये?	80
26.	हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का तरीक़ा	80
27.	यह जवाब देना कब वाजिब है?	81
28.	हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का जवाब न देना	81
29.	छींकने वाला भी दुआ़ दे	82
30.	एक छींक पर तीन बार ज़िक्र	82
31.	कमज़ोर और मज़लूम की मदद करना	83
32.	मज़लूम की मदद वाजिब है	83
33.	वरना अल्लाह तआ़ला का अ़ज़ाब आ जाएगा	83
34.	अ़ज़ाब की मुख़्तलिफ़ शक्लें	84
35.	उपकरण मुरव्वत के एहसास को कुचल देते हैं	84
36.	एक इब्रतनाक वाक़िआ़	85
37.	मुसलमान की मदद करने की फ़ज़ीलत	85
38.	ज़मीन वालों पर रहम करो, आसमान वाला तुम पर रहम करेगा	85
39.	क़सम खाने वाले की मदद करना	86
	(128) ख़ुश-मिज़ाजी से मिलना सुन्नत है	
1.	खिले हुए चेहरे से पेश आना ख़ुदा की मख़्लूक़ का हक़ है	87
2.	नबी करीम की इस सुन्नत पर काफ़िरों का एतिराज़	88
3.	मिलनसारी का निराला अन्दाज़	89

क्र.स.	क्या?	कहाँ?
4.	पाकिस्तान के सबसे बड़े मुफ़्ती हैं या आम राहगीर	90
5.	मस्जिदे नबवी से मस्जिदे कुबा की तरफ़ आमियाना चाल	91
6.	शायद यह ज़्यादा मुश्किल सुन्नत हो	91
7.	मख़्लूक़ से मुहब्बत करना हक़ीक़त में अल्लाह से मुहब्बत करना है	92
8.	हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर बिन आ़स की नुमायाँ ख़ुसूसियात	93
9.	तौरात में अब भी किताबुल्लाह का नूर झलकता है	94
10.	बाईबल से क़ुरआन तक	94
11.	आपकी सिफ़तें तौरात में भी मौजूद हैं	95
12.	तौरात की इब्रानी भाषा में आप सल्ल० की सिफ़तें	97
13.	ज़िक्र हुई हदीस से इमाम बुख़ारी रह० का मक़सद	98
14.	बुराई का जवाब अच्छे सुलूक से देना	99
15.	हज़रत डॉक्टर अ़ब्दुल हई साहिब का अ़जीब वाक़िआ़	100
16.	मौलाना रफ़ीउद्दीन साहिब का वाक़िआ़	100
17.	आपकी सारी सुन्नतों पर अ़मल ज़रूरी है	101
18.	अल्लाह तआ़ला के नज़दीक पसन्दीदा घूँट	102
19.	अल्लाह तआ़ला के यहाँ सब्र करने वालों का अज्र	103
20.	माफ़ करने और सब्र का मिसाली वाक़िआ़	103
21.	हम में और सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम में फ़र्क़	104
22.	ज़िक्र हुई हदीस का आख़िरी टुकड़ा	104
	(129) हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की आख़िरी वसीयतें	
1.	वफ़ात वाली बीमारी में लिखने के लिए थाल मंगवाना	106
2.	हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की आख़िरी वसीयतें	107
3.	हज़रत उमर से लिखने के लिए काग़ज़ तलब करना	108

क्र.स.	क्या?	कहाँ?
4.	शियाओं का हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ि० पर बोहतान	108
5.	यह बोहतान ग़लत है	109
6.	हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु पर एतिराज़ क्यों नहीं करते?	110
7.	दोनों बुज़ुर्ग सहाबा ने सही अ़मल किया	110
8.	वे बातें आप सल्ल० ने इरशाद भी फ़रमा दीं	111
9.	हुज़ूर सल्ल० के हुक्म का पालन न करने की वजह	112
10.	यह बे-अदबी नहीं	112
11.	पूरे दीन का ख़ुलासा	113
12.	नमाज़ और मातेहतों के हुक़ूक़ की अहमियत	113
13.	आख़िरत में नमाज़ के बारे में सबसे पहले सवाल होगा	114
14.	मुख़्तसर तौबा का तरीक़ा	114
15.	पिछली नमाज़ों का हिसाब	115
16.	क़ज़ा-ए-उम्री अदा करने का तरीक़ा	115
17.	नमाज़ों के फ़िदये की वसीयत	116
18.	आज ही से अदायगी शुरू कर दो	117
19.	आज का काम कल पर मत टलाओ	118
20.	सेहत और फ़ुरसत को ग़नीमत जानो	118
21.	क़ज़ा नमाज़ों की अदायगी में सहूलियत	118
22.	जागते ही पहले फ़ज्र की नमाज़ अदा करो	119
23.	फ़ज्र के लिए जागने का इन्तिज़ाम कर लो	119
24.	ज़कात का पूरा-पूरा हिसाब करो	120
25.	ज़कात की अहमियत	121
26.	ग़ुलाम और बाँदियों का ख़्याल रखो	121
27.	"मा म-लकत् ऐमानुकुम" में तमाम मातेहत दाख़िल हैं	121
28.	मातेहत अपना हक़ नहीं माँग सकता	122
29.	नौकर को कमतर मत समझो	122
30.	तुम और तुम्हारा नौकर दर्जे में बराबर हैं	123

क्र.स.	क्या?	कहाँ?
31.	तुम्हारे नौकर तुम्हारे भाई हैं	123
32.	अल्लाह तआला को तुम पर ज़्यादा क़ुदरत हासिल है	123
33.	यह अहमक़ाना ख़्याल है	124
34.	ज़्यादा सज़ा देने पर पकड़ होगी	125
35.	हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तरबियत का अन्दाज़	126
36.	एक बार का वाक़िआ	127
37.	अच्छे सुलूक के नतीजे में बिगाड़ नहीं होता	127
38.	हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अ़न्हु को तंबीह	128
39.	हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० का ग़ुलाम पर नाराज़ होना	128
40.	मातेहतों के साथ तौहीन का मामला न करो	129
41.	यह पश्चिमी तहज़ीब की लानत है	129
42.	ड्राईवर के साथ सुलूक	129

(130) यह दुनिया खेल-तमाशा है

1.	तमहीद	131
2.	बच्चों का खेल है यह दुनिया मेरे आगे	132
3.	ज़िन्दगी के मुख़्तलिफ़ दौर	132
4.	पहला दौर- बे-मक़सद खेल	133
5.	दूसरा दौर- बा-मक़सद खेल	133
6.	तीसरा दौर- सजने-संवरने की फ़िक्र	134
7.	चौथा दौर- कैरियर बनाने की फ़िक्र	134
8.	पाँचवा दौर- दौलत जमा करने की फ़िक्र	135
9.	पिछले मर्हले से बेज़ारी	135
10.	छठा दौर- आँख बन्द होने के बाद	136
11.	दुनिया की ज़िन्दगी की मिसाल	136
12.	माँ का पेट उसके लिए कायनात है	137
13.	बच्चे को इन बातों पर यक़ीन नहीं आएगा	137

क्र.स.	क्या?	कहाँ?
14.	यह ख़ून मेरी ख़ुराक है	138
15.	दुनिया में आने के बाद यक़ीन आना	138
16.	धीरे-धीरे हर चीज़ की सच्चाई खुल जाएगी	139
17.	एक बुढ़िया का वाक़िआ	139
18.	उस बुढ़िया की ख़ता नहीं	140
19.	हमारे दिमाग़ सिमित कर दिए गए	141
20.	दुनियावी ज़िन्दगी धोखा है	141
21.	हज़रत मुफ़्ती साहिब रह० के बचपन का वाक़िआ	142
22.	वहाँ पता चल जाएगा	142
23.	दुनिया की हक़ीक़त नज़र के सामने रखो	143
24.	यह दुनिया क़ैदख़ाना है	143
25.	मोमिन की इच्छा जन्नत में पहुँचना है	144
26.	अल्लाह तआ़ला से मुलाक़ात का शौक़	145
27.	अल्लाह का शुक्र है, वक़्त क़रीब आ रहा है	146
28.	दुनिया छोड़ना मक़सूद नहीं	146
29.	दुनिया दिल व दिमाग़ पर सवार न हो	147
30.	दूनिया ज़रूरी है लकिन शौचालय की तरह	147
31.	हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु की दुआ़	148
32.	इस दुनिया को आख़िरत का ज़ीना बनाओ	149
33.	हराम तरीक़े से दुनिया हासिल नहीं करूँगा	149
34.	हराम कामों में इस्तेमाल नहीं करूँगा	149
35.	क़ारून का क्या हाल हुआ?	150
36.	हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम को भी दुनिया मिली	150
37.	दोनों में फ़र्क़	151
38.	दृष्टिकोण बदल लो	151
39.	देखने का अन्दाज़ बदलने का तरीक़ा	152
40.	खाने पर शुक्र अदा करो	153

क्र.स.	क्या?	कहाँ?
	(131) दुनिया की हक़ीक़त	
1.	असली ज़िन्दगी	156
2.	क़ब्र तक तीन चीज़ें साथ जाती हैं	156
3.	माल और यार-रिश्तेदार काम आने वाले नहीं	156
4.	जन्नत का बाग़ या जहन्नम का गड्ढा	157
5.	इस दुनिया में अपना कोई नहीं	158
6.	जहन्नम की एक डुबकी	159
7.	जन्नत का एक चक्कर	160
8.	दुनिया बे-हक़ीक़त चीज़ है	160
9.	दुनिया की हैसियत एक पानी का क़तरा है	161
10.	दुनिया एक मुरदार बकरी के बच्चे की तरह है	162
11.	उहुद पहाड़ के बराबर सोना ख़र्च कर दूँ	163
12.	वह कम-नसीब होंगे	163
13.	हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हुक्म न टूटे	164
14.	ईमान वाला जन्नत में ज़रूर जाएगा	164
15.	गुनाहों पर जुर्रत मत करो	165
16.	दुनिया में इस तरह रहो	166
17.	दुनिया एक "ख़ूबसूरत टापू" की तरह है	166
18.	दुनिया सफ़र की एक मन्ज़िल है, घर नहीं	168
19.	दुनिया को दिल व दिमाग़ पर हावी न होने दो	169
20.	दिल में दुनिया होने की एक निशानी	170
21.	एक सबक़ लेने वाला क़िस्सा	170
22.	दुनिया की मुहब्बत दिल से निकालने का तरीक़ा	172

क्र.स.	क्या?	कहाँ?
	(132) सच्ची तलब पैदा करें	
1.	फ़ुज़ूल सवालात और बहस व मुबाहसे से बचें	173
2.	छोटे से इल्म सीखना	173
3.	इल्म के लिए इच्छा और ज़रूरत का इज़हार चाहिये	174
4.	हज़रत मुफ़्ती-ए-आज़म रहमतुल्लाहि अ़लैहि और इल्म की तलब	175
5.	हज़रत मुफ़्ती-ए-आज़म का सुनहरा क़ौल	176
6.	हज़रत थानवी की मजलिस की बरकतें	176
7.	आग माँगने का वाक़िआ	178
8.	तलब की चिंगारी पैदा करो	178
9.	सबक़ के दौरान तलब दिखाई देती है	179
10.	कलाम में तासीर अल्लाह की तरफ़ से होती है	180
11.	हज़रत फ़ुज़ैल बिन अ़याज़ का वाक़िआ	180
12.	जो बात दिल से निकलती है, वह दिल पर असर करती है	181
13.	मुख़्तसर हदीस के ज़रिये नसीहत	182
14.	छह चीज़ें	183
15.	पहली चीज़- फ़ुज़ूल बहस व मुबाहसा	183
16.	वक़्त की क़द्र करो	183
17.	बोलने की ताक़त अल्लाह की बड़ी नेमत है	184
18.	हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की नसीहत	185
19.	सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम और बुज़ुर्गाने दीन का तरीक़ा	185
20.	इस्लाह का एक वाक़िआ	185
21.	आजकल की पीरी-मुरीदी	187
22.	मज़हबी बहस व मुबाहसा	187
23.	फ़ालतू अ़क़्ल वाले	188
24.	यज़ीद के फ़ासिक़ होने के बारे में सवाल का जवाब	188

क्र.स.	क्या?	कहाँ?
25.	बिना ज़रूरत ज़्यादा सवालात करने की मनाही	189
26.	अहकाम की हिक्मतों के बारे में सवालात	189
27.	एक मिसाल	189
	(133) क़ुरआन करीम का ख़त्म शरीफ़ और दुआ	
1.	तमहीद	193
2.	बहुत बड़े इनाम से नवाज़ा है	193
3.	"तरावीह" एक बेहतरीन इबादत	194
4.	"सज्दा" एक बहुत बड़ी नेमत	195
5.	"नमाज़" मोमिन की मेराज है	195
6.	अल्लाह मियाँ ने मुझे प्यार कर लिया	196
7.	यह पेशानी एक ही चौखट पर टिकती है	196
8.	अल्लाह तआला अपने कलाम की तिलावत सुनते हैं	197
9.	क़ुरआन शरीफ़ के ख़त्म के मौक़े पर दो काम करें	197
10.	इबादत से इस्तिग़फ़ार	198
11.	इबादत का हक़ कौन अदा कर सकता है?	198
12.	हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का क़ौल	199
13.	रमज़ान की इबादतों पर शुक्र अदा करो	199
14.	अपनी कोताहियों पर इस्तिग़फ़ार करो	200
15.	उनकी रहमत पर नज़र रहनी चाहिए	200
16.	दुआ की क़बूलियत के मौक़े जमा हैं	201
17.	ख़ास तवज्जोह से दुआ करें	202
18.	सामूहिक दुआ भी जायज़ है	202
19.	दुआ से पहले दुरूद शरीफ़	202
20.	अरबी में दुआएँ	203
21.	उर्दू में दुआएँ	204

ख़ुशनसीबी की तीन निशानियाँ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَنَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا. اَمَّابَعْدُ!

हदीसः हज़रत नाफ़ेअ़ बिन अ़ब्दुल हारिस रज़ियल्लाहु अ़न्हु रिवायत करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः मुसलमान की ख़ुशनसीबी में तीन चीज़ें ख़ास महत्तव रखती हैं। यानी ये तीन चीज़ें मुसलमान की ख़ुशनसीबी का हिस्सा हैं। पहली चीज़- बड़ा-सा (खुला हुआ) मकान। दूसरी चीज़- नेक पड़ोसी। तीसरी चीज़- ख़ुशगवार सवारी। ये तीन चीज़ें मुसलमान की ख़ुशनसीबी का हिस्सा हैं। यानी अगर इनसान को ये तीन चीज़ें हासिल हो जाएँ तो ये दुनिया की नेमतों में बड़ी अ़ज़ीम नेमत हैं। (मुस्नद अहमद जिल्द 3 पेज 407)

पहली चीज़ः बड़ा और खुला हुआ घर

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने घर के सिलसिले में जिस चीज़ की तारीफ़ बयान की वह उसकी कुशादगी यानी बड़ा और खुला होना है। घर की ख़ूबसूरती, उसकी साज सज्जा, और उसकी टीप-टॉप एक बेकार की चीज़ है। असल चीज़ मकान का बड़ा यानी कुशादा होना है जिसकी वजह से इनसान तंगी महसूस न करे और आराम व सुकून के साथ उसमें ज़िन्दगी गुज़ार सके।

वुज़ू के बाद की दुआ

इसलिए वुज़ू के बाद जो दुआ हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से साबित है, वह यह है:

"अल्लाहुम्मग़्फ़िर् ली ज़म्बी व वस्सिअ् ली फ़ी दारी व बारिक् ली फ़ी रिज़्क़ी" (कन्ज़ुल उम्माल हदीस न० 3633)

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मेरे गुनाहों को माफ़ फ़रमा दीजिए और मेरे घर में वुस्अत अ़ता फ़रमाइये और मेरे रिज़्क़ में बरकत अ़ता फ़रमाइये।

गोया कि वुज़ू के बाद आप तीन चीज़ें माँगा करते थे। उनमें से एक गुनाहों की माफ़ी है। यह ऐसी चीज़ है कि अल्लाह तआ़ला अ़ता फ़रमा दें तो बस आख़िरत संवर गयी। इसलिए पहला सवाला आख़िरत की दुरुस्तगी का फ़रमाया और दुनिया में अल्लाह तआ़ला से दो चीज़ें माँगीं, एक घर की कुशादगी, दूसरे रिज़्क़ में बरकत। इससे मालूम हुआ कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को कुशादा यानी बड़ा और खुला हुआ मकान पसन्द था।

इनसान का अपना घर हो

मेरे वालिद माजिद हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाया करते थे कि लोग दुनिया की बहुत-सी चीज़ों के पीछे दौड़ते हैं और लोगों की इच्छा यह होती है कि अगर पैसा मिल जाए तो फ़लाँ चीज़ हासिल कर लें और फ़लाँ चीज़ हासिल कर लें। लेकिन दुनिया की ज़रूरियात में जिस चीज़ की ख़ास अहमयित (विशेष महत्तव) है और जिस चीज़ की इनसान को फ़िक्र करनी चाहिए, वह यह है कि इनसान का अपना घर हो और रिहाईश के सिलसिले में वह किसी का मोहताज न हो। इसकी कोशिश इनसान को करनी चाहिये और इस खाते में जो पैसा लगा वह ठिकाने लग गया और बाक़ी बेकार की चीज़ों में इनसान जो कुछ ख़र्च करता है उसका कुछ हासिल नहीं। बहरहाल! घर की वुस्अ़त एक नेमत और सआ़दत है जिसकी हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने वुज़ू के वक़्त दुआ़ फ़रमाई।

हर अंग धोने की अलग दुआ

यहाँ यह बात अर्ज़ कर दूँ कि वुज़ू के वक़्त आम तौर पर कुछ दुआएँ मशहूर हैं कि फ़लाँ अंग धोते समय फ़लाँ दुआ माँगी जाए। ये दुआएँ बड़ी अच्छी हैं। मसलन जब कुल्ली करे तो यह दुआ पढ़े:

"अल्लाहुम्-म अ-इन्नी अ़ला तिला-वति ज़िक्रि-क"

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! अपने ज़िक्र की तिलावत करने पर मेरी मदद फ़रमा। (कन्ज़ुल उम्माल हदीस न० 26990)

और जब नाक में पानी डाले तो यह दुआ पढ़े:

"अल्लाहुम्-म ला तहरिम्नी राईहतल् जन्नति"

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मुझे जन्नत की खुशबू से मेहरूम न फ़रमाइये।

और जब चेहरा धोए तो यह दुआ पढ़े:

"अल्लाहुम्-म बय्यिज़् वज्ही यौ-म तब्यज़्ज़ु वुजूहुवं-व तस्वद्दु वुजूहुन्'

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मेरा चेहरा उस दिन सफ़ेद कर दीजिए जिस दिन बहुत-से चेहरे सफ़ेद होंगे और बहुत-से स्याह होंगे, यानी आख़िरत में।

(कन्ज़ुल उम्माल हदीस न० 26990)

और जब दाहिना हाथ धोए तो यह दुआ पढ़े:

"अल्लाहुम्-म अअ्तिनी किताबी बि-यमीनी व हासिब्नी हिसाबयं-यसीरा"

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मेरा आमालनामा मेरे दाहिने हाथ में अ़ता फ़रमाइये। क्योंकि जो नेक बन्दे हैं उनको आमालनामा दाएँ हाथ में दिया जाएगा। और मेरा हिसाब आसान फ़रमा दीजिए।

(कन्ज़ुल उम्माल हदीस न० 26990)

और जब बायाँ हाथ धोए तो यह दुआ करे:

'अल्लाहुम्-म ला तुअ्तिनी किताबी बिशिमाली व ला मिंव्वरा-इ ज़ह्री'

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! आख़िरत में मेरा आमालनामा मुझे बाएँ हाथ में न दीजिए और न मुझे मेरी पीठ की तरफ़ से दीजिए। क्योंकि काफ़िरों और जहन्नमियों को उनका आमालनामा पीछे से बाएँ हाथ में दिया

जाएगा। (कन्ज़ुल उम्माल हदीस न० 26990)

और सर का मसह करे तो यह दुआ करे:

"अल्लाहुम्-म अज़िल्लिनी तह्-त ज़िल्लि अ़र्शि-क यौ-म ला ज़िल्-ल इल्ला ज़िल्लु अ़र्शि-क"

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मुझे उस दिन अपने अ़र्श का साया अ़ता फ़रमाइये जिस दिन आपके अ़र्श के साए के अ़लावा कोई साया नहीं होगा। (कन्ज़ुल उम्माल हदीस न० 26990)

जब कानों का मसह करे तो यह दुआ पढ़े:

"अल्लाहुम्मज्अ़ल्नी मिनल्लज़ी-न यस्तमिऊनल् क़ौ-ल फ़-यत्तबिऊ-न अह्स-नहू"

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मुझे उन लोगों में से कीजिए जो सुनी हुई बातों में से अच्छी बातों की पैरवी करते हैं। (कन्ज़ुल उम्माल हदीस 26991)

जब गर्दन का मसह करे तो यह दुआ पढ़े:

"अल्लाहुम्-म ग़श्शिनी बि-रहमति-क"

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! आप मुझे अपनी रहमत में ढाँप लीजिए।

(कन्ज़ुल उम्माल हदीस न० 26990)

और जब दाहिना पाँव धोए तो यह दुआ पढ़े:

"अल्लाहुम्-म सब्बित् क़-दमय्-य अ़लस्सिराति यौ-म तज़िल्लु फ़ीहिल् अक़्दामु"

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मेरे क़दम पुलसिरात पर जमाये रखिये उस दिन जिस दिन बहुत-से क़दम डगमगा जाएँगे। (कन्ज़ुल उम्माल हदीस 26990)

और जब बायाँ पाँव धोए तो यह दुआ पढ़े:

"अल्लाहुम्मज्अ़ल् ली सअ़्यम्-मश्कूरंव् व ज़म्बम्-मग़फ़ूरंव् व तिजारतल् लन् तबूर"

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मेरे अ़मल को क़बूल फ़रमा लीजिए और मेरी मग़फ़िरत फ़रमाइये और मेरी तिजारत को नफ़ा देने वाली बना दीजिए।

(कन्ज़ुल उम्माल हदीस न० 26991)

ये अच्छी दुआएँ हैं

ये दुआएँ बुज़ुर्गों ने वुज़ू करते वक़्त पढ़ने के लिए बतायी हैं और बड़ी अच्छी दुआएँ हैं। अगर अल्लाह तआला इन दुआओं को हमारे हक़ में क़बूल फ़रमा ले तो बेड़ा पार हो जाए। लेकिन इन मौक़ों पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इन दुआओं को पढ़ना या पढ़ने के लिए कहना साबित नहीं इसलिए ये दुआएँ पढ़ना इस एतिबार से सुन्नत नहीं हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हाथ धोते वक़्त यह दुआ पढ़ी, चेहरा धोते वक़्त यह दुआ पढ़ी वग़ैरह। इसलिए सुन्नत समझकर इन दुआओं को नहीं पढ़ना चाहिये लेकिन वैसे ही पढ़ना बड़ी अच्छी बात है। ख़ुद हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से दूसरे मौक़ों पर इन दुआओं का पढ़ना साबित है। बड़ी अच्छी दुआएँ हैं इनको ज़रूर पढ़ें लेकिन सुन्नत समझकर नहीं पढ़ना चाहिये।

वे दुआएँ जो सुन्नत हैं

लेकिन वह मसनून दुआ जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने वुज़ू के दौरान पढ़ी वह दुआ यह है:

"अल्लाहुम्मग़्फ़िर् ली ज़म्बी व वस्सिअ् ली फ़ी दारी व बारिक् ली फ़ी रिज़्क़ी"

और दूसरी दुआ यह पढ़ा करते थे:

"अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्-न मुहम्मदन् अ़ब्दुहू व रसूलुहू"

और जब वुज़ू ख़त्म फ़रमाते तो यह दुआ फ़रमाते:

"अल्लाहुम्मजूअ़ल्नी मिनत्तव्वाबी-न वजूअ़ल्नी मिनल् मु-ततह्हिरीन"

और दूसरी दुआ यह पढ़ा करते थे:

"सुब्हानकल्लाहुम्-म अश्हदु अल्ला इला-ह इल्ला अन्-त वह्द-क ला शरी-क ल-क अस्तग़्फ़िरु-क व अतूबु इलै-क"

दोनों दुआओं में फ़र्क़ करना चाहिये

ये दुआएँ हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से पढ़ना साबित हैं इसलिए जो दुआएँ आप से पढ़ना साबित हैं उनका तो ख़ास ध्यान रखें और जो दुआएँ हर अंग को धोते वक़्त बुज़ुर्गों से पढ़ना नक़ल की गयी हैं वे दुआएँ भी बहुत अच्छी हैं, उनको भी याद कर लेना चाहिये, उनको भी पढ़ लेना चाहिये। लेकिन दोनों तरह की दुआओं में फ़र्क़ रखना चाहिये कि जो दुआएँ आप से सीधे इन मौक़ों पर पढ़ना साबित हैं उनका ख़्याल ज़्यादा रखना चाहिये और जो दुआएँ आप से साबित नहीं उनका इस दर्जे एहतिमाम नहीं होना चाहिये बल्कि उनको दूसरे दर्जे पर रखना चाहिये।

असल चीज़ "बरकत" है

बहरहाल! वुज़ू के वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जो दुआ माँगी उसमें घर के बड़े होने की दुआ माँगी और रिज़्क़ में बरकत की दुआ माँगी। ज़रा इसमें ग़ौर करें कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने रिज़्क़ की कसरत (अधिकता) की दुआ नहीं फ़रमाई कि या अल्लाह! मुझे रिज़्क़ बहुत ज़्यादा दीजिए बल्कि यह फ़रमाया कि या अल्लाह! मेरे रिज़्क़ में बरकत अ़ता फ़रमाइये। यानी गिनती के एतिबार से चाहे रिज़्क़ में अधिकता न हो, पैसे बहुत ज़्यादा न हों, माल व दौलत बहुत ज़्यादा न हो लेकिन उस रिज़्क़ में बरकत हो।

आज की दुनिया गिनती की दुनिया है। हर चीज़ में गिनती की फ़िक्र है कि गिनती में मेरा माल बढ़ जाए। मेरा बैंक बैलेंस बढ़ जाए और इस फ़िक्र के नतीजे में हर वक़्त इनसान अपने पैसे गिनता रहता है कि मेरे पास कितने पैसे हो गये। इसके बारे में क़ुरआन करीम में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया:

"अल्लज़ी ज-म-अ़ मालंव्-व अ़द्द-दहू। यह्सबु अन्-न मालहू अख़्ल-दहू"

तर्जुमा: यानी यह वह आदमी है जो माल जमा करता है और हर

समय गिनता रहता है और ख़ुश हो रहा है कि हज़ार के लाख हो गये और लाख के करोड़ हो गये लेकिन उसको यह मालूम नहीं कि उसकी गिनती के ज़रिये राहत हासिल नहीं हो सकती।

पैसा अपने आप में राहत की चीज़ नहीं

"पैसा" अपनी ज़ात से राहत की चीज़ नहीं। ख़ुद इनसान को आराम नहीं पहुँचा सकता। अगर इनसान के पास पैसा हो लेकिन उसमें अल्लाह तआला की तरफ़ से बरकत न हो तो वह पैसा राहत का सबब बनने के बजाए उल्टा अज़ाब का सबब बन जाता है।

इब्रतनाक वाक़िआ

जनाब मौलाना अशरफ़ अली साहिब थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि ने अपनी तक़रीर में एक वाक़िआ बयान फ़रमाया है कि एक शख़्स के पास सोने-चाँदी के बड़े ख़ज़ाने थे और वह हर हफ़्ते उन ख़ज़ानों का मुआयना करने जाया करता था। उसका एक चौकीदार भी रखा हुआ था और उस ख़ज़ाने के ताले ऐसे थे कि कोई आदमी अन्दर से वे ताले नहीं खोल सकता था। एक दिन वह उन ख़ज़ानों की गिनती करने के लिए और उनका मुआयना करने के लिए अन्दर गया तो वह दरवाज़ा बन्द हो गया। अब वह अन्दर से उस दरवाज़े को खोलने की हज़ार कोशिश करता है, मगर नहीं खुलता, और वह सारे ख़ज़ानों के बीच बैठा है। वहाँ सोना है, चाँदी है, रुपया-पैसा है, ज़मीन से लेकर छत तक सोना भरा हुआ है, लेकिन वह न तो उसकी भूख मिटा सकता है और न उसकी प्यास बुझा सकता है, यहाँ तक कि उसको बाहर निकलने के लिए रास्ता भी उपलब्ध नहीं करा सकता। वह सारा ख़ज़ाना वैसे ही धरा रह गया और उसी ख़ज़ाने के अन्दर भूख और प्यास की वजह से उसकी मौत आ गयी।

रुपये से राहत नहीं ख़रीदी जा सकती

बहरहाल! यह रुपया-पैसा न भूख मिटा सकता है और न प्यास बुझा सकता है और न राहत पहुँचा सकता है। यह राहत पहुँचाना तो किसी

और ही की अ़ता है। वह अगर राहत पहुँचाना चाहे तो दस रुपये में पहुँचा दे और अगर न पहुँचाना चाहे तो दस करोड़ में न पहुँचाए। कितने बड़े-बड़े अमीर व कबीर हैं, दौलतमन्द हैं, पूँजीपति हैं, ख़ज़ाना रखने वाले हैं, लेकिन रात को जब सोने के लिए बिस्तर पर लेटते हैं तो नींद नहीं आती। करवटें बदलते रहते हैं। बावजूद यह कि ख़ज़ाने मौजूद हैं, बैंक बैलेंस मौजूद है, कोठियाँ खड़ी हैं, कारख़ाने चल रहे हैं, लेकिन रात को नींद नहीं आती। रात की नींद के मज़े से मेहरूम हैं। और कितने मज़दूर ऐसे हैं जिन्होंने सुबह से लेकर शाम तक पचास रुपये कमाए और फिर शाम को ख़ूब भूख की हालत में डटकर रोटी खाई और रात को जो सोए तो आठ घण्टे की भरपूर नींद लेकर सुबह ताज़ा-दम होकर जागे। अब बताइये कि वह लाख रुपये ज़्यादा फ़ायदेमन्द हैं या यह पचास रुपये ज़्यादा फ़ायदेमन्द हैं। इस पचास रुपये ने उसको फ़ायदा और आराम व राहत तो पहुँचाया, और वह लाख रुपये कमाने के बाद बिस्तर पर करवटें बदल रहा है।

ख़राब पैसा काम नहीं आता

इसलिए अल्लाह तआ़ला से जो चीज़ माँगने की है वह पैसे की ज़्यादती नहीं है बल्कि पैसे की बरकत माँगने की चीज़ है। आज यह ख़्याल हमारे ज़ेहनों से ओझल हो गया है। आज तो यह फ़िक्र है कि किसी तरह पैसे बढ़ जाएँ। इधर से उधर से, हलाल व हराम से, जायज़ नाजायज़ तरीक़े से, सच बोलकर या झूठ बोलकर। किसी तरह पैसे ज़्यादा हो जाएँ। जैसे किसी से हज़ार रुपये रिश्वत के ले लिए और बहुत ख़ुश हैं कि आज हज़ार रुपये कमाकर घर लेजा रहा हूँ लेकिन जब घर पहुँचे तो मालूम हुआ कि फ़लाँ बच्चा बीमार है उसको लेकर डाक्टर के पास गये। डाक्टर ने टेस्ट लिख दिये। उसके टेस्ट कराने में ही हज़ार रुपये ख़र्च हो गये। अब देखिए कि उसको हज़ार रुपये तो मिले लेकिन उसको उनका फ़ायदा हासिल नहीं हुआ।

एक आदमी हलाल कमाने वाला शाम को सौ रुपये कमाकर घर लाया

उसका एक-एक रुपया उसकी जान को लगा और उसका एक-एक रुपया उसको राहत पहुँचाने का सबब बना। और अल्लाह तआ़ला ने उसको अनगिनत मुसीबतों से बचा लिया। इसलिए अल्लाह तआ़ला से जो चीज़ माँगने की है वह रिज़्क़ में बरकत है। अल्लाह तआ़ला हम सब को अ़ता फ़रमा दें। आमीन।

मालदार तबक़ा ज़्यादा परेशान है

जब अल्लाह तआ़ला यह बरकत अ़ता फ़रमाते हैं तो रूखी-सूखी रोटी में भी अ़ता फ़रमा देते हैं। उसी में ज़िन्दगी का ऐश दे देते हैं। और अगर बरकत नहीं मिलती तो फिर करोड़ों में नहीं मिलती। लोग मेरे पास आकर अपने हालात बताते हैं और मश्विरा करते हैं। इससे मालूम होता है कि लोग किन हालात में ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं।

मैं आपको यक़ीन से कहता हूँ कि कुछ ऐसे लोग जिनकी ज़ाहिरी हालत देखकर लोग उन पर रश्क करते हैं कि उनके पास कितनी बड़ी दौलत है। कैसे उनके कोठी-बंगले हैं। कितने उनके नौकर-चाकर हैं। कैसी उनकी गाड़ियाँ और कारें हैं। लेकिन जब वे अन्दर की ज़िन्दगी का हाल आकर बयान करते हैं और अपनी बेचैनी और बेताबी का इज़हार करते हैं तो उस समय पता चलता है कि यह ज़ाहिर में जो कुछ नज़र आ रहा है वह उन मुसीबतों के सामने कुछ भी नहीं जिनका ये लोग शिकार हैं।

उनके बारे में कोई सोच नहीं सकता कि इतना माल व दौलत रखने वाला आदमी परेशान होगा और इतनी मुसीबत में होगा, लेकिन ऐसे लोग मौजूद हैं। और दूसरी तरफ़ ऐसे लोग भी हैं जो थोड़ा कमाते हैं लेकिन उनको अल्लाह तआ़ला ने अपने फ़ज़्ल और मेहरबानी से राहत व आराम अ़ता फ़रमा रखा है।

बरकत नहीं तो माल बेकार है

बहरहाल! अल्लाह तआ़ला हमारे ज़ेहनों में यह बात बिठा दें कि गिनती कोई चीज़ नहीं, असल चीज़ बरकत है। इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु

अ़लैहि व सल्लम ने यह दुआ़ नहीं फ़रमाई कि या अल्लाह! मेरे रिज़्क़ में बढ़ौतरी कर दीजिए। बल्कि यह दुआ़ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह! मेरे रिज़्क़ में बरकत अ़ता फ़रमाइये। यह बरकत उनकी अ़ता है, वहीं से यह बरकत हासिल होती है। अगर तुम दुनिया का माल व दौलत ख़ूब कमा लो लेकिन अगर उसमें अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से बरकत नहीं है तो वह सब बेकार है। और अगर उनकी तरफ़ से बरकत हासिल है तो फिर थोड़ी चीज़ में भी राहत हासिल हो जाती है।

घर की कुशादगी माँगने की चीज़

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कैसी-कैसी दुआ़एँ हमें सिखा दी हैं। अगर इनसान अपनी सारी ज़रूरतों का तसव्वुर भी करे कि मुझे इस दुनिया में क्या-क्या चीज़ें चाहियें और तसव्वुर (ख़्याल और ध्यान) करके माँगना चाहे तब भी वह चीज़ नहीं माँग सकता जिसका माँगना हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सिखा गए। बहरहाल! दुनिया की चीज़ों में घर की कुशादगी यानी बड़ा होना ऐसी चीज़ है जो अल्लाह तआ़ला से माँगने की चीज़ है और हासिल करने की चीज़ है और इनसान की नेकबख़्ती का हिस्सा है।

'नेक पड़ोसी' बड़ी नेमत है

दूसरी चीज़ जो मुसलमान की सआ़दत और ख़ुशनसीबी का हिस्सा है वह "नेक पड़ोसी" है। अगर किसी को नेक पड़ोसी मिल जाए तो यह बहुत बड़ी नेमत है। आज के दौर में लोगों ने इस नेमत को भुला दिया है। आज के कोठी-बंगलों में पड़ोस का तसव्वुर ही नहीं। सालों से एक जगह पर रहते हैं मगर यह पता नहीं कि दाहिनी तरफ़ कौन रहता है और बाईं तरफ़ किसका मकान है। लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि पड़ोस के इतने हुक़ूक़ हैं और हज़रत जिब्राईल अमीन अ़लैहिस्सलाम मुझे इसकी इतनी ताकीद फ़रमाते रहे कि मुझे ख़्याल होने लगा कि शायद पड़ोसी को इनसान की मीरास में वारिस ही बना

दिया जाएगा। पड़ोस की इतनी अहमियत है।

लिहाज़ा जब मकान तलाश करो तो जहाँ उसमें और चीज़ें देखो वहाँ यह भी देख लो कि उसका पड़ोस कैसा है? अगर शरीफ़ और नेक लोगों का पड़ोस है तो समझो कि यह नेमत है। इसलिए कि इनसान का सुबह शाम पड़ोस से वास्ता पड़ता है और उसकी सोहबत इनसान को उठानी पड़ती है। अब जैसा पड़ोस होगा वैसी सोहबत होगी, और सोहबत का इनसान की ज़िन्दगी पर बहुत ज़्यादा असर पड़ता है। अच्छी सोहबत इनसान को अच्छा बना देती है और बुरी सोहबत इनसान को बुरा बना देती है। इसलिए फ़रमाया कि नेक पड़ोसी बहुत बड़ी नेमत है।

हज़रत अबू हमज़ा रहमतुल्लाहि अ़लैहि का वाक़िआ़

मुहद्दिसीन में एक बुज़ुर्ग हैं जिनकी कुन्नियत "अबू हमज़ा" है। उनको "सुकरी" या "सुक्करी" भी कहा जाता है। अ़रबी में "सुक्र" नशे को कहते हैं और "सुक्कर" चीनी को कहते हैं। कहते हैं कि उनका नाम "अबू हमज़ा सुकरी" इसलिए पड़ गया था कि उनकी बातों में इतना नशा था कि जब यह लोगों से बातें करते थे तो उनकी बातें इतनी मज़ेदार होती थीं कि सुनने वालों को लज़्ज़त का नशा आ जाता था। और "सुक्करी" इसलिए कहा जाता है कि उनकी बातें चीनी की तरह मीठी होती थीं। उनकी बातों में मिठास थी।

एक बार उनको पैसों की ज़रूरत पेश आई। उनके पास एक बड़ा मकान था। मकान के अ़लावा कोई और चीज़ नहीं थी जिसको बेचकर पैसा हासिल करें। उन्होंने इरादा किया कि उस बड़े मकान को बेचकर किसी और जगह पर छोटा मकान ख़रीद लूँ और जो पैसा बचे उससे अपनी ज़रूरत पूरी कर लूँ। इसलिए उन्होंने एक ख़रीदार से मकान का सौदा कर लिया और एक-दो दिन के अन्दर मकान ख़ाली करके उसके हवाले करने का वायदा कर लिया।

पड़ोसियों को जब मालूम हुआ कि "अबू हमज़ा सुकरी" मकान बेच कर कहीं और जा रहे हैं तो सारे पड़ोसी मिलकर उनके पास हाज़िर हुए

और उनसे कहा कि आप हमारा मौहल्ला छोड़कर जा रहे हैं। हमारी दरख़्वास्त यह है कि आप हमारा मौहल्ला न छोड़ें और जितने पैसे ख़रीदार इस मकान के दे रहा है हम सब मिलकर उतने पैसे आपको देने के लिए तैयार हैं। लेकिन आपका यहाँ से हमारा पड़ोस छोड़कर जाना हमें गवारा नहीं, इसलिए कि आपके पड़ोस की बदौलत हमें बहुत-सी नेमतें मिली हुई हैं। हमें ऐसा पड़ोस मिलना मुश्किल है।

बहरहाल! अगर नेक, अच्छे अख़्लाक़ वाला और अल्लाह वाला पड़ोस मिल जाए तो यह इतनी बड़ी नेमत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इसको इनसान की ख़ुशनसीबी की निशानी क़रार दिया है।

'ख़ुशगवार सवारी' बड़ी नेमत है

तीसरी चीज़ जो एक मुसलमान की सआ़दत और ख़ुशनसीबी की अ़लामत (निशानी) है, वह है "ख़ुशगवार सवारी" यानी अगर इनसान को अच्छी सवारी मिल जाए तो यह भी अल्लाह तआ़ला की बड़ी नेमत और इनसान की ख़ुशनसीबी है। और ख़ुशगवार होने का मतलब यह है कि जिसमें इनसान आराम से सफ़र कर सके।

तीन चीज़ों में नहूसत

एक और हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इसके बिल्कुल उलट बात बयान फ़रमायी। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि दुनिया में नहूसत तीन चीज़ों में है। यानी अगर नहूसत होती तो इन तीन चीज़ों में होती- एक घर, दूसरी सवारी, तीसरी औ़रत। वैसे तो बदशगूनी लेने को और किसी चीज़ को मनहूस क़रार देने को हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सख़्ती से मना फ़रमाया है। जैसे यह सोचना कि फ़लाँ चीज़ की वजह से मुझ पर आफ़तें आ रही हैं, या फ़लाँ चीज़ की वजह से मुसीबतें और बीमारियाँ आ रही हैं। यह गुमान करना कि मेरी बीवी में बदशगूनी है या मेरे घर में बदशगूनी है या मेरी सवारी में बदशगूनी है, हदीस शरीफ़ की रू से यह सब मना है।

मकान में नहूसत का मतलब

इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बयान करने का मक़सद यह है कि अगर नहूसत होती तो इन तीन चीज़ों में होती क्योंकि नहूसत का मतलब यह है कि उसकी वजह से इनसान हर वक़्त मुश्किलों का शिकार रहे। मान लो अगर किसी इनसान को ख़राब घर मिल गया। अब चूँकि घर ऐसी चीज़ नहीं है जिसको इनसान सुबह व शाम बदलता रहे बल्कि एक अ़र्से तक उसके अन्दर इनसान को रहना पड़ता है इसलिए जब तक वह घर मौजूद है उस समय तक उसकी तकलीफ़ें उठानी पड़ेंगी और जितने दिन वह उस में रहेगा वह जान को आ जाएगा। इस एतिबार से मकान के अन्दर नहूसत है।

सवारी में नहूसत

दूसरी चीज़ "सवारी" है। अगर इनसान को सवारी ख़राब मिल गयी तो सवारी ऐसी चीज़ नहीं है कि इनसान रोज़-रोज़ उसको बदलता रहे। अगर ग़लत सवारी मिल गयी तो वह रोज़ जान खाएगी जैसे आजकल लोगों के पास गाड़ियाँ हैं। अगर किसी इनसान को ख़राब गाड़ी मिल गयी तो उसके लिए मुसीबत बन जाएगी। कभी रास्ते में रुक जाएगी कभी उसको धक्के मार कर स्टार्ट करना पड़ेगा।

हमारे पड़ोस में एक साहिब रहते थे। उनके बारे में सारे मौहल्ले में यह बात मशहूर थी कि अगर उनको शाम के पाँच बजे कहीं जाना होता तो सुबह नौ बजे से वह गाड़ी को ठीक करने में लग जाते। कभी उसके ऊपर लेटे हैं और कभी नीचे लेटे हैं, कभी दाहिनी तरफ़ लेटे हैं और कभी बाईं तरफ़ लेटे हैं, और सारा दिन उसकी मरम्मत में लगे रहते हैं। इसलिए अगर इनसान को गाड़ी ख़राब मिल जाए तो उसकी वजह से इतनी तकलीफ़ बरदाश्त करनी पड़ती है कि अगर इनसान उस पर सवारी करने के बजाए पैदल चला जाए तो अच्छा है। इसलिए फ़रमाया कि सवारी में नहूसत है यानी उसकी तकलीफ़ मुस्तक़िल है। इसलिए अगर

अल्लाह तआ़ला तौफ़ीक़ दे तो उसको बदल डालो और अच्छी सवारी ख़रीद लो।

अच्छी बीवी दुनिया की जन्नत

तीसरी चीज़ "बीवी" है। अगर शौहर को बीवी ख़राब मिल जाए या बीवी को शौहर ख़राब मिल जाए तो फिर ज़िन्दगी भर का अ़ज़ाब है। अगर शौहर को अच्छी बीवी मिल जाए और बीवी को अच्छा शौहर मिल जाए तो अल्लाह तआ़ला की नेमत है और दुनिया की जन्नत है। हज़रत अ़ल्लामा शब्बीर अहमद उस्मानी रहमतुल्लाहि अ़लैहि बड़ा ख़ूबसूरत जुमला इरशाद फ़रमाते थे:

"दुनिया की जन्नत यह है कि मियाँ-बीवी एक हों और नेक हों।"

मतलब यह है कि दोनों के मिज़ाज मिले हुए हों और दोनों नेक हों तो यह दुनिया की जन्नत है। लेकिन अगर इसका उल्टा हो तो ज़िन्दगी भर का अ़ज़ाब है। रोज़ाना सुबह से शाम तक झक-झक होती है। कोई राहत नहीं बल्कि हर समय एक मुसीबत है।

बहरहाल! हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि इन तीन चीज़ों में नहूसत है। इसलिए इनके शर (बुराई) से अल्लाह तआ़ला की पनाह माँगनी चाहिये कि या अल्लाह! इनके शर से महफ़ूज़ (सुरक्षित) रखिये और अल्लाह तआ़ला से यह दुआ़ करें कि या अल्लाह! घर दीजिए तो राहत का घर अ़ता फ़रमाइये। सवारी दीजिए तो राहत की सवारी अ़ता फ़रमाइये और ज़िन्दगी का साथी दीजिए तो राहत का साथी अ़ता फ़रमाइये। अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत से वे तमाम सआ़दतें अ़ता फ़रमाए जो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बयान फ़रमाई हैं।

बुरे पड़ोसी से पनाह माँगना

अगली हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बुरे पड़ोसी से अल्लाह तआ़ला की पनाह माँगी है इसलिए हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जो दुआ़एँ माँगा

करते थे उनमें एक दुआ़ यह भी थी कि ऐ अल्लाह! मैं आपकी बुरे पड़ोसी से पनाह माँगता हूँ लेकिन साथ ही यह भी फ़रमा दिया कि ऐसी जगह जहाँ पर मुझे काफ़ी वक़्त रहना हो वहाँ मुझे बुरा पड़ोसी न मिले। इसलिए कि ऐसा पड़ोसी जो रास्ते में सफ़र के दौरान साथ हो गया वह तो थोड़ी देर का पड़ोसी है, वह तो मुझ से जुदा हो जाएगा लेकिन मैं ऐसे पड़ोसी से पनाह माँगता हूँ जिसके साथ मुस्तक़िल रहना हो।

इससे मालूम हुआ कि बुरा पड़ोसी भी पनाह माँगने की चीज़ है। अल्लाह तआ़ला हम सबको बुरे पड़ोसी से पनाह अ़ता फ़रमाए। आमीन।

यह औ़रत जहन्नमी है

एक और हदीस जो हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत की गयी है वह फ़रमाते हैं कि:

तर्जुमा: हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से किसी ने कहा कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! दो औ़रतें हैं उनमें से एक औ़रत ऐसी है जो रात भर तहज्जुद पढ़ती है और दिन में रोज़ा रखती है और बहुत-से नेक अ़मल करती है। जैसे तिलावत करती है, तस्बीह पढ़ती है, अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र करती है और सदक़ा भी करती है, यानी अल्लाह के रास्ते में पैसे भी ख़र्च करती है लेकिन साथ-साथ अपने पड़ोसियों को अपनी ज़बान से तकलीफ़ पहुँचाती है। ये सिफ़तें ज़िक्र करने के बाद आपसे पूछा कि उस औ़रत का क्या हुक्म है? सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि उस औ़रत में कोई भलाई नहीं, यह औ़रत जहन्नमी है।

अब आप अन्दाज़ा लगाएँ कि वह औ़रत रात को तहज्जुद पढ़ती है और दिन में रोज़ा रखती है। इसके अ़लावा तिलावत, ज़िक्र, सदक़ा ख़ैरात सब कुछ कर रही है लेकिन इन सब चीज़ों के बावजूद हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि यह औ़रत जहन्नमी है क्योंकि यह औ़रत अपनी ज़बान से अपने पड़ोसियों को तकलीफ़ पहुँचा रही है।

यह औरत जन्नती है

फिर एक दूसरी औरत के बारे में सवाल किया: या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! एक और औरत है जो सिर्फ़ फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ती है नफ़िल नमाज़ वग़ैरह नहीं पढ़ती यानी तहज्जुद वग़ैरह की पाबन्द नहीं है सिर्फ़ फ़राईज़ और सुन्नतों पर ही बस कर लेती है और अगर सदक़ा भी करती है तो बस पनीर के चन्द टुकड़े सदक़ा कर देती है, क़ीमती चीज़ भी सदक़ा नहीं करती। लेकिन यह औरत किसी को तकलीफ़ भी नहीं पहुँचाती। ये सिफ़तें ज़िक्र करने के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा कि उस औरत का क्या हुक्म है? आपने फ़रमाया कि यह ख़ातून (औरत) जन्नती है, यानी जन्नत वालों में से है।

जहन्नमी होने की वजह

अब आप ज़रा इन दोनों औरतों में मुक़ाबला करके देखें कि एक औरत तो इबादत में लगी हुई है और अल्लाह के ज़िक्र व फ़िक्र में लगी हुई है। तहज्जुद पढ़ती है, इश्राक़ पढ़ती है, चाश्त पढ़ती है और सदक़ा-ख़ैरात बहुत करती है लेकिन उसकी ज़बान में डंक है। जब किसी से बात करती है तो उसको डंक मारती है और उससे लोगों को तकलीफ़ पहुँचती है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस औरत को जहन्नम वालों में से क़रार दिया। क्यों? इसलिए कि तहज्जुद, इश्राक़, चाश्त, तस्बीहात वग़ैरह ये सब नफ़्ली इबादतें हैं। अगर कोई करे तो उस पर सवाब है अगर कोई न करे तो उस पर उसका कोई गुनाह नहीं, लेकिन दूसरे को अपनी ज़बान से तकलीफ़ पहुँचाना क़तई हराम है और दूसरे को अपनी ज़बान की तकलीफ़ से बचाना फ़र्ज़े-ऐन है, और ज़बान से कोई ऐसी बात निकालना जिससे दूसरे का दिल टूट जाए या ऐसा अन्दाज़ इख़्तियार करना जिससे दूसरे का दिल टूट जाए यह बड़ा ख़तरनाक अमल है।

यह ज़बान जहन्नम में डालने वाली है

एक और हदीस है जो बड़े डरने की हदीस है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु

अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि लोगों को सबसे ज़्यादा जहन्नम में औंधे मुँह गिराने वाली चीज़ इनसान की ज़बान है। इनसान की ज़बान ऐसी चीज़ है कि उसके ग़लत इस्तेमाल करने के नतीजे में इनसान को जहन्नम के अन्दर औंधे मुँह गिराया जाएगा। अल्लाह तआ़ला हम सब की हिफ़ाज़त फ़रमाए। आमीन।

दूसरी औ़रत के बारे में लोगों ने बताया कि वह नफ़्ली इबादत तो ज़्यादा नहीं करती लेकिन वक़्त पर अपने फ़राईज़ अदा कर लेती है और थोड़ा-बहुत नफ़्ली सदक़ा भी कर देती है लेकिन किसी को तकलीफ़ नहीं पहुँचाती, ऐसी औ़रत के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि वह जन्नतियों में से है।

नफ़्ली इबादतें गुनाहों के अ़ज़ाब से नहीं बचा सकतीं

इसके ज़रिये यह बतलाना मन्ज़ूर है कि अल्लाह तआ़ला नफ़्ली इबादतों को बड़ा पसन्द फ़रमाते हैं और नफ़्ली इबादत करना अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत का हक़ है, लेकिन नफ़्ली इबादतों पर भरोसा करके खुले तौर पर गुनाह करना या यह समझना मैं तो बहुत ज़्यादा नफ़्ली इबादतें करती या करता हूँ इसलिए मैं तो बड़ा आ़बिद व ज़ाहिद हूँ और फिर उसके नतीजे में मख़्लूक़ को हक़ीर समझना और उनके साथ हिक़ारत का बर्ताव करना और उनके साथ ऐसा बर्ताव करना जिससे उनका दिल टूटे यह अ़मल अल्लाह तआ़ला को बहुत ही नापसन्द है। और इस सूरत में उसकी नफ़्ली इबादतें उसको उन गुनाहों के अ़ज़ाब से नहीं बचा सकतीं जिनका ताल्लुक़ बन्दों के हुक़ूक़ से है, इसलिए कि उसने बन्दों के हक़ को पामाल (ज़ाया) किया और बन्दों का दिल तोड़ा।

ज़बान की हिफ़ाज़त करें

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की इस हदीस में ये अलफ़ाज़ आए हैं कि वह औ़रत ज़बान से तकलीफ़ पहुँचाती है। कुछ लोगों की तबीयत ऐसी होती है कि जब भी वे किसी से बात करेंगे तो टेढ़ी बात

करेंगे। या कोई एतिराज़ कर देंगे या कोई शिकायत कर देंगे। कोई ऐसा अन्दाज़ इख़्तियार करेंगे जिससे दूसरे का दिल टूट जाएगा। यह बड़ा ख़तरनाक मामला है। जिन लोगों को इस तरह की आदत हो वे अपने गिरेबान मे मुँह डालकर देखें और अपनी आख़िरत और अन्जाम की फ़िक्र करते हुए अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त करें इसलिए कि यह अमल इनसान को जहन्नम में ले जाने वाला है।

मुफ़्ती अज़ीज़ुर्रहमान साहिब का बेवाओं की ख़िदमत करना

मेरे वालिद माजिद रहमतुल्लाहि अलैहि अपने एक उस्ताद हज़रत मौलाना मुफ़्ती अज़ीज़ुर्रहमान साहिब का ज़िक्र फ़रमाया करते थे, जो दारुल उलूम देवबन्द के सब से बड़े मुफ़्ती थे और मेरे वालिद माजिद रहमतुल्लाहि अलैहि के उस्ताद थे। उनके इल्म और मसाइल में उनकी महारत का सारे मुल्क में डंका बजा हुआ था। उनकी हालत यह थी कि जब वह सुबह दारुल उलूम देवबन्द में सबक़ पढ़ाने के लिए जाते तो मदरसे के आस-पास मौहल्ले में जो बेवा औरतें रहती थीं पहले उनके पास जाते और उनसे कहते कि बीबी! अगर बाज़ार से तुम्हें कोई सौदा मंगाना है तो बता दो मैं ला देता हूँ।

अब एक औरत ने कहा कि मेरे लिए आलू ले आएँ। दूसरी ने कहा मेरे लिए दाल ले आएँ। किसी ने कहा मेरे लिए धनिया पोदीना ले आएँ। फिर बाज़ार जाते वहाँ से सौदा ख़रीदते और उनकी पोटलियाँ बनाकर घर घर बाँटते। कभी-कभार ऐसा भी होता कि कोई औरत कहतीं कि मौलवी साहिब! मैंने तो टमाटर मंगवाए थे आप आलू ले आए। कोई औरत कहती मैंने इतना मंगवाया था आप इतना ले आए। वह जवाब में फ़रमाते कि अच्छा बीबी! कोई बात नहीं मैं दोबारा बाज़ार जाकर बदल कर ले आता हूँ। चुनाँचे दोबारा बाज़ार जाकर वह चीज़ बदलवाते और दोबारा पहुँचाते। यह आपका रोज़ाना का मामूल था कि दारुल उलूम देवबन्द में मुफ़्ती-ए-आज़म (सब से बड़े मुफ़्ती) बनकर बैठने से पहले अपने मौहल्ले की बेवाओं का यह काम करते थे।

किसी को मुँह पर नहीं झुठलाना चाहिये

आपकी एक आदत यह थी कि कोई शख़्स आपके सामने चाहे कितनी ही ग़लत बात कह रहा हो लेकिन आपसे उसके मुँह पर यह नहीं कहा जाता था कि तुम ग़लत बात कह रहे हो, कि कहीं उसका दिल न टूट जाए। लेकिन ज़ाहिर है कि ग़लत बात को सही तो नहीं कह सकते इसलिए आप उस शख़्स की बात की कोई तावील करके उससे फ़रमाते कि अच्छा शायद आपकी बात का यह मतलब है। ख़ुद ही उसकी कोई तावील करके उसकी बात को सही कर देते थे लेकिन किसी के मुहँ पर उसको झुठलाने से हमेशा परहेज़ किया करते थे।

यह कौन थे? यह हिन्दुस्तान के "सब से बड़े मुफ़्ती" थे। जिनके फ़तवे पर हिन्दुस्तान के तमाम उलमा सर झुका देते थे। आज उनके फ़तावा दस मोटी जिल्दों में छपने के बावजूद भी पूरे नहीं हुए। जिन्होंने अपने फ़तवों से सारी दुनिया को सैराब किया उनकी सादगी का यह आलम था कि कोई देखकर पहचान नहीं सकता था कि यह इतना बड़ा आलिम होगा। इसलिए अगर कोई दूसरा बात कर रहा हो अगरचे वह बात ग़लत हो उसकी बात को काटने के बजाए ऐसा तरीक़ा इख़्तियार करना चाहिये जिससे उसका दिल न टूटे।

असली मुसलमान कौन है?

यह बड़े काँटे की बात है कि आदमी हर समय इसकी फ़िक्र करे कि मेरी ज़बान से किसी को तकलीफ़ न हो। हदीस शरीफ़ में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद है:

तर्जुमाः मुसलमान वह है जिसकी ज़बान और हाथ से दूसरे मुसलमान महफ़ूज़ रहें।

यह है मुसलमान की तारीफ़। हमारे वालिद माजिद हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि एक शे'र पढ़ा करते थे:

तमाम उम्र इसी एहतिमाम में गुज़री
कि आशियाँ किसी शाख़े-चमन पे बार न हो

यानी मेरी वजह से किसी को तकलीफ़ न पहुँचे यही समाजी ज़िन्दगी के सारे आदाब का ख़ुलासा है।

पड़ोसन की बकरी का रोटी खा जाना

एक हदीस में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने अपना एक वाक़िआ बयान फ़रमाया कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मेरे घर तशरीफ़ लाए। आपने अपनी पाक बीवियों के पास जाने के लिए नम्बर मुक़र्रर फ़रमा रखे थे। एक दिन एक के पास और दूसरे दिन दूसरी के पास।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि उस रोज़ मेरी बारी थी। वैसे तो हर बीवी की ख़्वाहिश होती है कि अपने शौहर की ख़ूब ख़िदमत करे, उसको अच्छे से अच्छा खाना खिलाए। और हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से जितनी मुहब्बत करती थीं ऐसी मुहब्बत तो दुनिया में कोई बीवी कर ही नहीं सकती। इसलिए हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की यह इच्छा हुई कि आज हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मेरे घर तशरीफ़ ला रहे हैं तो आपके लिए अच्छा खाना बना लूँ। लेकिन अच्छा खाना किस तरह बनाएँ इसलिए कि जो कुछ आता था वह तो अल्लाह की राह में ख़र्च हो जाता था। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि घर में कुछ जौ पड़े थे मैंने उनको चक्की में पीसकर उनका आटा बनाया और फिर उसकी एक रोटी बनाई। ख़्याल यह था कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तशरीफ़ लाएँगे तो उनकी ख़िदमत में पेश करूँगी।

जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम घर में तशरीफ़ लाए तो चूँकि सर्दी का मौसम था और आपको सर्दी लग रही थी इसलिए आपने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से फ़रमाया कि मुझे सर्दी लग रही है। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने गर्म बिस्तर का इन्तिज़ाम कर दिया। आप लेट गये और आपकी आँख लग गई। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि मैं इस इन्तिज़ार में थी कि जब आप जागें तो जो रोटी

मैंने आपके लिए पकाई है वह आपकी ख़िदमत में पेश करूँ।

इतने में पड़ोस के घर की बकरी हमारे घर में आई और वह रोटी जो मैंने इतनी मेहनत और चाहत से पकाई थी वह बकरी उठाकर ले गयी। मैं उस बकरी को अपनी आँखों से रोटी ले जाते हुए देख रही थी लेकिन चूँकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सो रहे थे इसलिए मैंने उस बकरी को नहीं रोका ताकि कहीं शोर की वजह से आपकी आँख न खुल जाए यहाँ तक कि वह बकरी रोटी उठाकर घर से बाहर चली गयी। उसके रोटी ले जाने से मुझे बहुत सख़्त सदमा हुआ। उसके बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जाग गए। जैसे ही आप जागे तो मैं दरवाज़े की तरफ़ भागी कि शायद वह बकरी कहीं नज़र आ जाए।

रोटी की वजह से पड़ोसी को तकलीफ़ मत देना

जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को घबराहट की हालत में देखा तो उनसे पूछा कि क्या बात है? मैंने सारा क़िस्सा सुना दिया कि मैंने इतनी मेहनत से रोटी आपके लिए पकाई थी मगर बकरी वह रोटी लेकर भाग गई इसलिए मुझे बड़ा सदमा हो रहा है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि उस रोटी का जो कुछ बचा हुआ हिस्सा तुम्हें मिल जाए वह ले आओ और उस बकरी की वजह से अपने पड़ोसी को कोई तकलीफ़ मत देना और उसको बुरा-भला मत कहना कि तुम्हारी बकरी मेरी रोटी खा गई और मेरा नुक़सान कर गयी।

अब देखिए कि इस मौक़े पर भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह हिदायत की कि अपने पड़ोसी को बुरा-भला मत कहना। इसलिए कि उसमें उस पड़ोसी का क़सूर नहीं है। और अगर उसका क़सूर भी हो तब भी अगर तुम्हारी एक रोटी चली गयी तो क्या हुआ, उसके साथ तुम्हें उम्र भर निबाह करना है। अगर तुम उसके साथ लड़ाई मोल लोगी तो उससे हमेशा के लिए ताल्लुक़ात ख़राब होंगे और ये ताल्लुक़ात उस रोटी के मुक़ाबले में ज़्यादा क़ीमती हैं।

हम उस रोटी की क़द्र क्या जानें

आज हम लोग उस ज़माने का ज़रा तसव्वुर करें तो हम लोग उस रोटी की क़द्र व क़ीमत नहीं पहचान सकते जो हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने पकाई थी। इसलिए कि आज तो अल्लाह तआला ने रिज़्क़ की बोहतात कर दी है, रोटी की कोई क़द्र व क़ीमत हमारे दिलों में नहीं है। अगर आज एक रोटी चली जाए तो कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। लेकिन उस वक़्त तो यह आलम था कि ज़रा-सा जौ पड़ा हुआ था उसको पीस कर मुश्किल से एक रोटी तैयार की। वह रोटी भी बकरी उठा ले गयी लेकिन इसके बावजूद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एहतिमाम के साथ फ़रमाया कि उस बकरी की वजह से अपने पड़ोसी को तकलीफ़ मत देना।

ऐसा पड़ोसी जन्नत में नहीं जाएगा

एक और हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि:

तर्जुमाः वह शख़्स जन्नत में दाख़िल नहीं होगा जिसका पड़ोसी उसके तकलीफ़ देने से महफ़ूज़ न हो। (कन्ज़ुल उम्माल हदीस न० 26908)

यानी कि जन्नत में दाख़िल होने की एक बुनियादी शर्त यह है कि अपनी ज़ात से पड़ोसी को तकलीफ़ न पहुँचे।

एक और हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया:

तर्जुमाः अपने घर के सामने वाली जगह साफ़ किया करो।

(तिर्मिज़ी शरीफ़ किताबुल् अदब)

यह न हो कि घर के सामने और आस-पास कूड़े-करकट के ढेर लगा दो जिसके नतीजे में पड़ोसियों को भी उससे तकलीफ़ पहुँचे और आने-जाने वालों को भी तकलीफ़ पहुँचे। कुछ लोग अपने घर के अन्दर झाड़ू देकर सारा कूड़ा दूसरे के घर के दरवाज़े पर फेंक देते हैं, यह पड़ौसी को सताना है जिसके नतीजे में वह जन्नत में दाख़िल नहीं होगा।

अगर सब लोग इस हदीस पर अ़मल कर लें और हर आदमी अपने घर के आस-पास का इलाक़ा साफ़-सुथरा रखने की कोशिश करे तो फिर शहर में सफ़ाई करने वालों की ज़रूरत न रहे।

एक नौ-मुस्लिम अंग्रेज़ का वाक़िआ

चूँकि यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इरशाद है इसलिए सफ़ाई-सुथराई भी दीन का हिस्सा है। आज लोग यह समझते हैं कि यह सफ़ाई-सुथराई दुनियादारी का काम है इसका दीन से कोई लेना-देना नहीं। मेरे वालिद माजिद रहमतुल्लाहि अ़लैहि एक क़िस्सा सुनाया करते कि जामा मस्जिद देहली के पास एक अंग्रेज़ रहता था। वह मुसलमान हो गया अब वह मस्जिद में नमाज़ के लिए आने लगा। जब उसको वुज़ू करने की ज़रूरत होती तो वह वुज़ूख़ाने में वुज़ू करता। उसने देखा कि यह वुज़ूख़ाना भी गंदा हो रहा है, उसकी नालियाँ बहुत ख़राब हो रही हैं। कहीं काई जम रही है, कहीं नाक की गन्दगी पड़ी हुई है, कहीं कुछ पड़ा है, कहीं कुछ। कुछ दिन तक तो देखता रहा, एक दिन उसने सोचा कि जब कोई और आदमी इसकी सफ़ाई नहीं कर रहा है तो चलो मैं ही इसकी सफ़ाई कर दूँ। इसलिए उसने झाड़ू लेकर वुज़ूख़ाने की नालियों को साफ़ करना शुरू कर दिया। किसी शख़्स ने देखा कि यह अंग्रेज़ नालियाँ साफ़ कर रहा है तो उसने दूसरे लोगों से कहा कि यह अंग्रेज़ मुसलमान तो हो गया है लेकिन अंग्रेज़ियत की ख़ू-बू इसके दिमाग़ से अब तक नहीं गयी।

मतलब यह था कि यह सफ़ाई-सुथराई अंग्रेज़ियत की ख़ू-बू है। इस सफ़ाई का दीन से कोई ताल्लुक़ नहीं है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का तो यह इरशाद है कि अपने घर के आस-पास की जगहों को भी साफ़ करो यह भी पड़ोसियों के हुक़ूक़ में दाख़िल है।

पड़ोस की भेजी हुई चीज़ की क़द्र करनी चाहिये

एक रिवायत में हज़रत अ़मर बिन मुआ़ज़ अश्हली रज़ियल्लाहु अ़न्हु अपनी दादी से रिवायत करते हैं। वह फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु

अ़लैहि व सल्लम ने मुझ से फ़रमायाः

तर्जुमाः ऐ मुसलमान औरतो! तुम में से कोई औरत अपनी पड़ोसन को हक़ीर (ज़लील और कम दर्जे की) न समझे। और अगर कोई पड़ोसन तुम्हें हदिया (तोहफ़े में कोई चीज़) भेज रही है तो उसके हदिये (भेजी हुई चीज़) को हक़ीर न समझे। (कन्जुल उम्माल हदीस न० 24937)

चाहे वह हदिया बकरी का एक जला हुआ पाया ही क्यों न हो। और यह न कहो कि इस पड़ोसन ने कैसी मामूली चीज़ भेज दी। अरे तुम इसको मत देखो कि उसने क्या चीज़ भेजी। वह छोटी है या बड़ी। असल चीज़ देखने की यह है कि उसने किस मुहब्बत और खुलूस के साथ वह हदिया भेजा है। इसलिए उस हदिये की क़द्र करो और उसका हक़ अदा करने की कोशिश करो।

यहूदी पड़ोसी को गोश्त का हदिया

हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाहि अ़लैहि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के ख़ास शागिर्द हैं। वह फ़रमाते हैं कि एक बार मैं उनके पास बैठा हुआ था। उनका गुलाम एक बकरी की खाल उतार रहा था। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने उस गुलाम से फ़रमाया ऐ लड़के! जब तुम खाल उतार चुको तो सबसे पहले उसका गोश्त हमारे यहूदी पड़ोसी को भेजना। एक साहिब जो क़रीब में बैठे हुए थे उन्होंने ताज्जुब से कहा "क्या यहूदी को गोश्त भेजना, अल्लाह तआ़ला आपकी इस्लाह करे" मतलब यह था कि यहूदी जो ख़ुदा का दुश्मन है आप उसको हदिया (तोहफ़ा) भेज रहे हैं। आपका यह अ़मल क़ाबिले इस्लाह है। इस पर हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि:

तर्जुमाः मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना है। आप पड़ोसी के बारे में वसीयत फ़रमाते थे कि पड़ोसियों के साथ अच्छा सुलूक करो यहाँ तक कि हमें यह अन्देशा हुआ कि आप उसको हमारा वारिस बना देंगे।

पड़ोसी के साथ अच्छा सुलूक करना

इस हदीस के ज़रिये हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने यह बतला दिया कि पड़ोसी के साथ अच्छा सुलूक करने की जो तालीम हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने दी है उसका ताल्लुक़ ईमान और कुफ़्र से नहीं है। इसलिए अगर पड़ोसी काफ़िर भी है तब भी पड़ोसी की हैसियत से उसके साथ अच्छा सुलूक करना है। उसके कुफ़्र से नफ़रत करो। उसकी बुराई और बदकारी से नफ़रत करो लेकिन उसके साथ अच्छा सुलूक करो। इसलिए कि यही अच्छा सुलूक आख़िरकार दावत का ज़रिया बनता है। क्योंकि जब तुम उसके साथ अच्छा सुलूक करोगे और उसके साथ अच्छे अख़्लाक़ का मामला करोगे तो उसकी बरकत से हो सकता है कि अल्लाह तआ़ला उसके दिल में ईमान डाल दें।

इस्लाम के शुरुआ़ती दौर में जो इस्लाम फैला वह दर असल इसी अच्छे अख़्लाक़ से फैला। इसी अच्छे सुलूक से फैला। इसलिए अगर कोई काफ़िर है तो उसके कुफ़्र से और उसकी बद-आमालियों से नफ़रत करो और उसके क़रीब मत फटको लेकिन जहाँ तक उसके हुक़ूक़ अदा करने का ताल्लुक़ है, वे तुम्हारे ज़िम्मे ज़रूरी हैं। अगर वह पड़ोसी है तो पड़ोस होने का हक़ अदा करना चाहिये।

अल्लाह तआ़ला मुझे और आप सब को इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

जुमा अल्-विदा
की शरई हैसियत

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَ نَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا٥ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ٥ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ٥

(سورۃالبقرۃ آیت۱۸۵)

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ صَدَقَ اللّٰهُ مَوْلَانَا الْعَظِيْمُ، وَصَدَقَ رَسُوْلُهُ النَّبِيُّ الْكَرِيْمُ، وَنَحْنُ عَلٰى ذٰلِكَ مِنَ الشَّاهِدِيْنَ وَالشَّاكِرِيْنَ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ٥

मुबारक महीना

मोहतरम बुज़ुर्गों और प्यारे भाईयो! अल्लाह तआला का बड़ा इनाम है कि उसने हमें और आपको एक रमज़ान का महीना और अ़ता फ़रमाया। यह वह महीना है जिसमें अल्लाह तआला की रहमत की घटाएँ बन्दों पर झूम-झूमकर बरसती हैं। जिसमें अल्लाह तआला की रहमत बन्दों की मग़फ़िरत के लिए बहाने ढूँढती हैं। छोटे-छोटे अ़मल पर अल्लाह तआला की तरफ़ से रहमतों और मग़फ़िरतों के वायदे हैं। यह मुबारक महीना हमें

अल्लाह ने अ़ता फ़रमाया और आज इस मुबारक महीने का आख़िरी जुमा है और इस मुबारक महीने के ख़त्म होने में चन्द दिन बाक़ी हैं।

आख़िरी जुमा और ख़ास तसव्वुरात

इस आख़िरी जुमे के बारे में कुछ लोगों के ज़ेहनों में कुछ ख़ास तसव्वुरात हैं जिनकी इस्लाह ज़रूरी है। आ़म तौर पर हमारे समाज में यह समझा जाता है कि यह आख़िरी जुमा जिसको "जुमअ़तुल् विदा" भी कहते हैं, यह कोई मुस्तक़िल त्यौहार है और इसके कुछ ख़ास अहकाम हैं, इसकी कुछ ख़ास इबादतें हैं जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने तजवीज़ फ़रमाई हैं। और लोगों ने इस दिन इबादत करने के अलग-अलग तरीक़े घड़ रखे हैं जैसे जुमअ़तुल्-विदा के दिन इतनी रक्अ़तें, नवाफ़िल पढ़नी चाहियें और उन रक्अ़तों में फ़लाँ-फ़लाँ सूरतें पढ़नी चाहियें।

जुमअ़तुल्-विदा कोई त्यौहार नहीं

ख़ूब समझ लीजिए कि इस तरह की कोई हिदायत हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने नहीं दी। जुमअ़तुल्-विदा कोई त्यौहार नहीं, न इसके लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कोई अहकाम अलग से अ़ता फ़रमाए। न इस दिन में इबादत का कोई ख़ास तरीक़ा बतलाया। न इस दिन में किसी ख़ास अ़मल की तलक़ीन फ़रमाई जो आ़म दिनों में न किया जाता हो, बल्कि यह आ़म जुमों की तरह एक जुमा है। अलबत्ता इतनी बात ज़रूर है कि वैसे रमज़ान मुबारक का हर लम्हा ही क़द्र के क़ाबिल है लेकिन रमज़ान का जुमा बड़ा क़ाबिले क़द्र है। हदीस शरीफ़ के बयान के अनुसार रमज़ान "तमाम महीनों का सरदार" है। और जुमा "तमाम दिनों का सरदार" है। इसलिए जब रमज़ान मुबारक में जुमे का दिन आता है तो उस दिन में दो फ़ज़ीलतें जमा हो जाती हैं- एक रमज़ान की फ़ज़ीलत और दूसरी जुमे की फ़ज़ीलत। इस लिहाज़ से रमज़ान का हर जुमा बड़ा क़ाबिले क़द्र है।

यह आख़िरी जुमा ज़्यादा क़ाबिले क़द्र है

और आख़िरी जुमा इस लिहाज़ से ज़्यादा क़ाबिले क़द्र है कि इस

साल यह मुबारक दिन दोबारा नहीं मिलेगा। सारे रमज़ान में चार या पाँच जुमे होते हैं। तीन जुमे गुज़र चुके हैं और यह अब आख़िरी जुमा है। अब इस साल यह नेमत नहीं मिलने वाली। अल्लाह तआ़ला ने अगर ज़िन्दगी दी तो शायद आईन्दा साल यह नेमत दोबारा मिल जाए। इसलिए यह एक नेमत है जो हाथ से जा रही है। इसकी क़द्र व मर्तबा पहचान कर इनसान जितना भी अ़मल कर ले वह कम है। बस इस जुमअ़तुल् विदा की यह हक़ीक़त है वरना यह न तो कोई त्यौहार है न इसके अन्दर कोई ख़ास इबादत और ख़ास अ़मल मुक़र्रर है।

अल्-विदाई जुमा और शुक्र का जज़्बा

अलबत्ता जब आख़िरी जुमे का दिन आता है तो दिल में दो तरह के जज़्बात पैदा होते हैं। हर मोमिन के दिल में ये जज़्बात पैदा होने चाहियें। एक ख़ुशी और शुक्र का जज़्बा कि अल्लाह तआ़ला ने अपने फ़ज़्ल व करम से हमें रमज़ान मुबारक अ़ता फ़रमाया और रमज़ान मुबारक में रोज़े रखने की, तरावीह पढ़ने की और तिलावत करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई। यह बात क़ाबिले शुक्र और ख़ुशी वाली है। इस पर जितना शुक्र अदा किया जाए कम है। इसलिए कि न जाने अल्लाह के कितने बन्दे ऐसे हैं जो पिछले साल हमारे साथ रोज़ों में तरावीह में शरीक थे लेकिन इस साल वे ज़मीन के नीचे जा चुके। उन जाने वालों से इस रमज़ान के एक एक लम्हे की क़द्र व क़ीमत पूछिये कि वे यह हसरत कर रहे हैं कि काश! उनको रमज़ान के कुछ लम्हात और मिल जाते तो वे अपने आमाल में बढ़ौतरी कर लेते। लेकिन उनका वक़्त ख़त्म हो चुका अब हसरत के सिवा कोई चारा नहीं। अल्लाह तआ़ला ने हमें रमज़ान मुबारक के ये लम्हात अ़ता फ़रमा रखे हैं।

ग़ाफ़िल बन्दों का हाल

और इस लिहाज़ से अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करना चाहिये कि बहुत-से बन्दे ऐसे हैं कि जिनको यह भी पता नहीं चलता कि कब

रमज़ान आया था और कब चला गया। न उनको रोज़े रखने से कोई लेना देना, न तरावीह पढ़ने से कोई मतलब। अल्लाह बचाए! आँखों पर ग़फ़लत के पर्दे पड़े हुए हैं। रमज़ान के आने पर उनके वक़्तों के निज़ाम में, उनके खाने-पीने के वक़्तों में और उनके सोने और जागने के वक़्तों में कोई तब्दीली पैदा नहीं होती। अल्लाह तआला का शुक्र है कि उसने हमें ऐसे ग़ाफ़िल लोगों में शामिल नहीं फ़रमाया और इस पर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करो कि ऐ अल्लाह! आपने हमें रोज़ा रखने की तौफ़ीक़ बख़्शी, तरावीह पढ़ने की तौफ़ीक़ बख़्शी। अगर हम भी उनमें शामिल हो जाते तो न जाने हमारा क्या हश्र होता, इसलिए शुक्र अदा करने और ख़ुश होने का मौक़ा है।

नमाज़-रोज़े की नाक़द्री मत करो

हमारे ज़ेहनों में कभी जो ये ख़्यालात आते हैं कि हमने रोज़ा तो रख लिया लेकिन रोज़े का हक़ अदा नहीं किया। तरावीह तो पढ़ ली लेकिन उसका सही हक़ अदा नहीं हो सका। तरावीह में न आजिज़ी व गिड़गिड़ाना था। दिल कहीं था दिमाग़ कहीं था। इसी हालत में हमने तरावीह अदा कर ली। यह ख़्याल लाकर कुछ लोग इस रोज़े की और तरावीह की नाक़द्री करते हैं। अरे भाई! यह नाक़द्री की चीज़ नहीं, यह नमाज़ कैसी भी हो लेकिन अल्लाह तआला ने अपने दरबार में हाज़िरी की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दी। यह तौफ़ीक़ ख़ुद एक नेमत है। पहले इस तौफ़ीक़ पर शुक्र अदा करो। इस हाज़िरी की नाक़द्री मत करो। यह न कहो कि हमने नमाज़ क्या पढ़ी, हमने तो टक्करें मार लीं और उठक-बैठक कर ली। अरे अल्लाह तआला को तुम्हारे साथ कुछ ख़ैर ही का मामला करना था इसलिए तुम्हें मस्जिद के दरवाज़े पर ले आए। अगर अल्लाह तआला को तुम्हारे साथ ख़ैर न करनी होती तो तुम्हें उन लोगों में शामिल कर देते जिन्होंने कभी मस्जिद की शक्ल तक नहीं देखी। इसलिए इन इबादतों की नाक़द्री मत करो बल्कि इन पर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करो।

सज्दे की तौफ़ीक़ बड़ी नेमत है

हमने जैसी-तैसी नमाज़ पढ़ ली, न उसमें खुशूअ् था और न उसमें खुज़ूअ् था (यानी नमाज़ की शान के मुताबिक़ न थी)। वह नमाज़ बेजान और बेरूह सही लेकिनः

क़बूल हो कि न हो फिर भी एक नेमत है
वह सज्दा जिसे तेरे आस्ताँ से निस्बत है

यह सज्दा जिसे अल्लाह तआ़ला के आस्ताने पर करने की तौफ़ीक़ हो गयी यह भी एक नेमत है। पहले इसका शुक्र अदा कर लो। बेशक हम उसका हक़ अदा नहीं कर पाए। बेशक हमारी तरफ़ से उसमें कोताहियाँ रहीं लेकिन उन कोताहियों का इलाज यह नहीं कि इन इबादतों की नाक़द्री शुरू कर दो। बल्कि उन कोताहियों का इलाज यह है कि अल्लाह तआ़ला से तौबा करो, इस्तिग़फ़ार करो और यह कहो कि ऐ अल्लाह! आपने मुझे इबादत की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई, इस पर आपका शुक्र है लेकिन मुझसे इस इबादत में कोताही हुई। ऐ अल्लाह! मैं इस पर इस्तिग़फ़ार करता हूँ:

अस्तग़फ़िरुल्ला-ह रब्बी मिन् कुल्लि ज़म्बिंव् व अतूबु इलैहि

इस इस्तिग़फ़ार के ज़रिये अल्लाह तआ़ला उन कोताहियों को दूर फ़रमा देंगे।

आज का दिन डरने का दिन भी है

इसलिए आज का दिन एक तरफ़ तो खुशी का और शुक्र अदा करने का दिन है दूसरी तरफ़ यह डरने का दिन है। उस बात का डर जिसका बयान एक हदीस में आया है। वह हदीस यह है कि एक बार नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मस्जिदे नबवी में तशरीफ़ लाए ताकि जुमे का खुतबा दें। आप अपने मिम्बर पर खुतबा दिया करते थे। आपका मिम्बर तीन सीढ़ियों पर मुश्तमिल था। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सबसे ऊपर वाली सीढ़ी पर खड़े होकर खुतबा दिया करते थे। जब हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु का ख़िलाफ़त का दौर आया तो उन्होंने सोचा कि सबसे ऊपर वाली सीढ़ी पर खुतबा देना अदब के ख़िलाफ़ है

क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उस पर खड़े होकर ख़ुतबा देते थे। इसलिए उन्होंने अपने ख़िलाफ़त के ज़माने में दूसरी सीढ़ी पर खड़े होकर ख़ुतबा देना शुरू कर दिया।

जब हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु की वफ़ात हो गयी और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु का ज़माना आया तो उन्होंने सोचा कि मेरे लिए तो इस दूसरी सीढ़ी पर भी खड़े होकर ख़ुतबा देना अदब के ख़िलाफ़ है जिस पर हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु खड़े होकर ख़ुतबा दिया करते थे। इसलिए उन्होंने अपने ख़िलाफ़त के ज़माने में तीसरी और आख़िरी सीढ़ी पर ख़ुतबा देना शुरू कर दिया। उसके बाद से आज तक यह मामूल चला आ रहा है कि ख़ुतबा पढ़ने वाले तीसरी सीढ़ी पर ख़ुतबा देते चले आ रहे हैं।

तीन दुआ़ओं पर तीन बार आमीन

बहरहाल! मैं यह अ़र्ज़ कर रहा था कि एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ख़ुतबा देने के लिए तशरीफ़ लाए। उस दिन सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने यह अ़जीब मन्ज़र देखा कि जब आपने पहली सीढ़ी पर क़दम रखा तो फ़रमाया "आमीन" जब दूसरी सीढ़ी पर क़दम रखा तो फिर फ़रमाया "आमीन"। जब तीसरी सीढ़ी पर क़दम रखा तो फिर फ़रमाया "आमीन" सहाबा किराम को ताज्जुब हुआ कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने दुआ़ तो कोई नहीं माँगी लेकिन तीनों सीढ़ियों पर क़दम रखते हुए "आमीन" फ़रमाया। बाद में सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने पूछा कि या रसूलल्लाह! आज आपने सीढ़ियों पर क़दम रखते हुए तीन बार "आमीन" फ़रमाया, इसकी क्या वजह है? हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जवाब में फ़रमाया कि जब मैं मिम्बर पर चढ़ने के लिए आया और पहली सीढ़ी पर क़दम रखा तो हज़रत जिब्राईल अमीन अ़लैहिस्सलाम मेरे सामने आए। उन्होंने एक दुआ़ की और मैंने उस दुआ़ पर "आमीन" कही। जब मैंने दूसरी सीढ़ी पर क़दम रखा तो उस वक़्त उन्होंने दूसरी दुआ़ की। मैंने उस पर "आमीन" कही। जब मैंने

तीसरी सीढ़ी पर क़दम रखा तो उन्होंने तीसरी दुआ की, मैंने उस पर "आमीन" कही।

इन दुआओं की अहमियत के असबाब

आप इन दुआओं की अहमियत का अन्दाज़ा इससे लगाएँ कि दुआ माँगने वाले हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम और उस पर "आमीन" कहने वाले हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जो सारे नबियों के सरदार हैं। और जुमे का दिन, ख़ुतबे का वक़्त, मुक़ाम भी मस्जिदे नबवी, इस दुआ की क़बूलियत में किसी भी इनसान को शक नहीं हो सकता बल्कि यह दुआ ज़रूर क़बूल होगी। मगर डरने की बात यह है कि यह दुआ दर हक़ीक़त "बद्-दुआ" थी। हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने बद्-दुआ माँगी और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उस पर "आमीन" कही। वे बद्-दुआएँ क्या थीं?

माँ-बाप की ख़िदमत करके जन्नत हासिल न करना

जिस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने पहली सीढ़ी पर क़दम रखा उस वक़्त हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने यह बद्-दुआ की कि उसकी नाक मिट्टी में भर जाए, यानी वह शख़्स तबाह हो जाए जिसने अपने माँ-बाप को बुढ़ापे की हालत में पाया फिर भी अपनी मग़फ़िरत न करा सका। यानी जिस शख़्स के माँ-बाप बुढ़ापे की हालत में पहुँच चुके हों उसके लिए जन्नत हासिल करना आसान है क्योंकि अगर वह एक क़दम भी माँ-बाप की ख़िदमत में उठा लेगा और उनके दिल को ख़ुश कर देगा तो अल्लाह तआ़ला की रहमतें नाज़िल होना शुरू हो जाएँगी। हदीस शरीफ़ में आता है कि अगर कोई शख़्स एक बार मुहब्बत की निगाह से माँ-बाप को देख ले तो उसके लिए एक हज और एक उमरे का सवाब लिखा जाएगा। इसलिए जब एक निगाह डालने का यह सवाब है तो उनकी ख़िदमत और इताअ़त (हुक्म का पालन) करने का क्या अज्र व सवाब होगा, इसका अन्दाज़ा आप लगाएँ। और माँ-बाप इनसान की दुनिया व आख़िरत की कामयाबी और बेहतराई के ज़ामिन हैं। और

माँ-बाप का मामला यह है कि उनको ज़रा ख़ुश कर दो तो वे तुम्हें ढेरों दुआएँ देते हैं। इसलिए माँ-बाप की ख़िदमत और फ़रमाँबरदारी करके जन्नत हासिल करना बहुत आसान है। लेकिन जिस शख़्स ने माँ-बाप को उनके बुढ़ापे की हालत में पाने के बावजूद अपनी मग़फ़िरत का सामान नहीं किया, वह शख़्स बरबाद हो जाए।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का नाम सुनकर दुरूद शरीफ़ न पढ़ना

फिर जिस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने दूसरी सीढ़ी पर क़दम रखा तो उस वक़्त हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने यह बद्-दुआ फ़रमाई कि उस शख़्स की नाक मिट्टी से भर जाए, यानी वह शख़्स तबाह हो जाए जिसके सामने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का ज़िक्र किया गया मगर उसने आप पर दुरूद नहीं भेजा। ज़ाहिर बात है कि इस कायनात में एक ईमान वाले के लिए नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से बड़ा मोहसिन और कोई नहीं हो सकता। पूरी इनसानियत के लिए आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से बड़ा मोहसिन (एहसान करने वाला) कोई पैदा नहीं हुआ। आप क़ुरबानियाँ देकर, तंगदस्ती और फ़ाक़े उठाकर, तंगियाँ और मुसीबतें झेलकर, लड़ाई लड़कर तुम्हारे लिए ईमान की दौलत छोड़ गये। अब तुम्हारे दिल में इस एहसान का इतना भी एहसास न हो कि जनाब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का ज़िक्र आने पर आप पर दुरूद भी न भेजे, यह कितनी बड़ी नाशुक्री और एहसान फ़रामोशी है। जिस पर जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने बद्-दुआ दी और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने "आमीन" कही।

दुरूद पढ़ने में कन्जूसी न करें

दूरूद शरीफ़ का कोई भी जुमला पढ़ लेने से यह फ़रीज़ा अदा हो जाता है और **"सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम"** भी उनमें से एक दुरूद है। इसलिए मुसलमानों का यह मामूल रहा है कि जब भी नबी करीम

सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का ज़िक्र आता है तो उस पर "सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम" ज़रूर कहते हैं। अल्हम्दु लिल्लाह! अब भी यह मामूल जारी है इसलिए सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम कहने से भी यह फ़रीज़ा अदा हो जाता है। अलबत्ता हमारे यहाँ जो यह रिवाज चल पड़ा है कि लिखते वक़्त पूरा "सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम" लिखने के बजाए सिर्फ़ "सल्अ़म" लिख दिया या सिर्फ़ "स०/ सल्ल०" लिख दिया, इस तरीक़े से यह फ़रीज़ा अदा नहीं होता। यह सारा बुख़्ल (कन्जूसी) क्या हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ करना है? यह छोड़ने देने के क़ाबिल है इसके बजाए बोलने में भी और लिखने में भी पूरा "सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम" अदा करना चाहिये वरना इस बात का ख़तरा है कि कहीं हम इस बद्-दुआ़ के मुस्तहिक़ न बन जाएँ।

रमज़ान गुज़र जाने के बावजूद मग़फ़िरत न होना

जब तीसरी सीढ़ी पर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने क़दम रखा तो हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने यह बद्-दुआ़ फ़रमाई कि उस शख़्स की नाक मिट्टी से भर जाए यानी वह शख़्स तबाह हो जाए जिस पर पूरा रमज़ान मुबारक का महीना गुज़र जाए और वह अपनी मग़फ़िरत न करा ले। इसलिए आज का दिन डरने का है इस बात से कि ख़ुदा न करे कहीं हम इस हदीस की वईद (डाँट और धमकी) के मिस्दाक़ न बन जाएँ कि सारा रमज़ान गुज़र जाए और हम अपनी मग़फ़िरत न करा लें। इसलिए कि अल्लाह तआ़ला ने रमज़ान मुबारक का महीना तुम्हारे गुनाह धोने के लिए और तुम्हारा मैल-कुचैल साफ़ करने के लिए अ़ता फ़रमाया था और तुम्हारे गुनाहों को मग़फ़िरत के तालाब में डुबो कर साफ़ करने के लिए दिया था। इस महीने में मग़फ़िरत कराना कोई मुश्किल नहीं था। सारी रात अल्लाह का मुनादी आवाज़ लगा रहा था कि है कोई मग़फ़िरत माँगने वाला जिसकी मैं मग़फ़िरत करूँ? है कोई रिज़्क़ माँगने वाला जिसको मैं रिज़्क़ दूँ? है कोई मुसीबत में गिरफ़्तार जिसकी तकलीफ़ों और मुसीबतों को मैं दूर करूँ? रात भर अल्लाह का मुनादी यह आवाज़ें लगा रहा था।

मग़फ़िरत के बहाने

और अल्लाह तआ़ला ने वायदा किया था कि अगर तुम रोज़े रख लोगे तो तुम्हारे पिछले गुनाह माफ़ कर देंगे। तरावीह की पाबन्दी कर लोगे तो तुम्हारे पिछले गुनाह माफ़ कर देंगे। किसी अल्लाह के बन्दे को इफ़्तार करा दोगे तो इस पर तुम्हारी मग़फ़िरत कर देंगे। जो रोज़ा तुमने रखा है उसके लम्हे-लम्हे पर इबादत लिखी जा रही है और तुम्हारे गुनाहों की मग़फ़िरत हो रही है।

बहरहाल! अल्लाह तआ़ला ने तो तुम्हारी मग़फ़िरत के लिए इतने बहाने बना रखे थे इसलिए मग़फ़िरत हासिल करने का इससे ज़्यादा अच्छा मौक़ा नहीं था। जिसने यह मौक़ा भी गंवा दिया उसके लिए जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने यह बद्-दुआ़ फ़रमाई। इसलिए यह डरने का दिन है।

अल्लाह तआ़ला से अच्छी उम्मीद रखो

लेकिन अल्लाह तआ़ला की रहमत से यह उम्मीद रखो कि इन्शा-अल्लाह! हम इस बद्-दुआ़ में शामिल नहीं। जब उस ज़ात ने रोज़े रखने की तौफ़ीक़ बख़्शी और यह वायदा फ़रमाया कि जो शख़्स ईमान के साथ सवाब की नीयत से रोज़े रखेगा, मैं उसके सारे पिछले गुनाह बख़्श दूँगा तो अल्लाह तआ़ला की रहमत से यही उम्मीद रखनी चाहिये कि इन्शा-अल्लाह! हमारी भी मग़फ़िरत फ़रमा देंगे। अलबत्ता अपनी ग़लतियों और कोताहियों की वजह से ज़रूर डरते रहो, इसी का नाम ईमान है। ईमान ख़ौफ़ और उम्मीद के दरमियान है।

ईदगाह में सब की मग़फ़िरत फ़रमाना

हदीस शरीफ़ में आता है कि जब मुसलमान सारे महीने रोज़ा रखने और तरावीह पढ़ने के बाद ईद की नमाज़ अदा करने के लिए ईदगाह में जमा होते हैं तो अल्लाह तआ़ला उस वक़्त अपने फ़रिश्तों पर फ़ख़्र (गर्व) फ़रमाते हैं कि ऐ फ़रिश्तो! तुम तो कहते थे कि आदम की औलाद ज़मीन पर जाकर फ़साद मचाएगी आज उस आदम की औलाद को ईदगाह के

मैदान में देखो और मुझे बताओ कि एक मज़दूर जिसने अपनी मज़दूरी पूरी कर ली हो, उसको क्या सिला मिलना चाहिये?

जवाब में फ़रिश्ते फ़रमाते हैं कि ऐ अल्लाह! जिस मज़दूर ने अपना काम पूरा कर लिया हो, उसका बदला यह है कि उसकी पूरी-पूरी मज़दूरी दे दी जाए। उसमें कोई कमी न की जाए। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि मैं अपनी इज़्ज़त व जलाल की क़सम खाकर कहता हूँ ये बन्दे जो मेरे सामने हैं, इन पर रमज़ान में जो फ़रीज़ा आयद किया गया था वह इन्होंने पूरा कर दिया अब ये मुझे पुकारने के लिए ईदगाह में जमा हुए हैं और मुझ से दुआ करने के लिए आए हैं। मैं अपनी इज़्ज़त व जलाल की, अपनी बादशाहत और अपने करम की क़सम खाकर कहता हूँ कि आज के दिन मैं इन सब की दुआएँ क़बूल करूँगा और इनको ईदगाह के मैदान से इस तरह वापस भेजूँगा कि इन सब की मग़फ़िरत हो चुकी होगी और इनकी बुराईयों को भी भलाईयों से बदल दूँगा।

वरना तौफ़ीक़ क्यों देते?

अगर ईदगाह के मैदान में बुलाकर नवाज़ना मक़सद न होता, हमारी और आपकी मग़फ़िरत करना मक़सद न होता तो फिर रमज़ान में रोज़े रखने और तरावीह पढ़ने की तौफ़ीक़ ही क्यों देते? मस्जिद में आने की और तिलावत करने की तौफ़ीक़ ही क्यों देते? जब उन्होंने इन इबादतों की तौफ़ीक़ दी है तो उनकी रहमत से उम्मीद है कि उन्होंने हमारे साथ ख़ैर का इरादा फ़रमाया है। मग़फ़िरत का इरादा फ़रमाया है। लेकिन कहीं ऐसा न हो कि वह तो हमारी मग़फ़िरत का इरादा फ़रमा रहे हैं और हम इस फ़िक्र में लगे हुए हों कि किसी तरह और गुनाहों को बढ़ा लें। इसलिए कि हम तो गुनाह पर लगे हुए हैं और अपने आमाल के ज़रिये इस बात का इज़हार कर रहे हैं कि हमें मग़फ़िरत नहीं चाहिये।

ईद के दिन गुनाहों में बढ़ौतरी

इसलिए जैसे ही ईद का दिन आया, बस गुनाहों का सैलाब उमड़

आया। न अल्लाह का कोई ख़्याल, न अल्लाह के रसूल की कोई फ़िक्र, न अल्लाह तआ़ला के सामने जवाबदेही का कोई एहसास। इस ईद के दिन गुनाहों पर गुनाह हो रहे हैं। अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानियाँ की जा रही हैं। गाना बजाना जो काफ़िरों का ख़ुशियाँ मनाने का तरीक़ा था वह हमने इख़्तियार कर लिया। औरतों ने बेपर्दगी और बेहिजाबी इख़्तियार कर ली और अल्लाह तआ़ला के एक-एक हुक्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी करके ईद का दिन मनाया जा रहा है। यह कैसी ईद हुई? वह तो मग़फ़िरत का इरादा फ़रमा रहे हैं लेकिन हमने गुनाह करके जहन्नम में जाने का इरादा कर रखा है। अल्लाह पाक हम सबको इस अन्जाम से महफ़ूज़ रखे। आमीन।

मुसलमानों की ईद दुनिया की दूसरी क़ौमों से निराली है

अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों को जो ईद अ़ता फ़रमाई है वह दुनिया की सारी क़ौमों की ईदों से निराली है। सारी दुनिया में जो ईदें मनायी जाती हैं वे किसी तारीख़ी (ऐतिहासिक) घटना की याद में मनायी जाती हैं। जैसे ईसाई लोग हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के जन्म दिन पर "क्रिसमस" का दिन मनाते हैं। यह पैदाईश एक वाक़िआ़ (घटना) है। यक़ीनी तौर पर यह साबित नहीं कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम 25 दिसम्बर को पैदा हुए थे बल्कि उनके जाने के तीन सौ साल बाद लोगों ने यह तारीख़ मुक़र्रर कर ली। इसी तरह दुनिया भर के जितने धर्म हैं उनके त्यौहार पिछले ज़माने की किसी न किसी घटना से जुड़े हुए होते हैं लेकिन अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों को जो त्यौहार अ़ता फ़रमाए हैं वे पिछले ज़माने की किसी घटना या बात से जुड़े हुए नहीं हैं बल्कि ये त्यौहार अल्लाह तआ़ला ने उस मौक़े पर अ़ता फ़रमाए जिस मौक़े पर हर साल मुसलमानों के लिए ख़ुशी का मौक़ा पेश आता है। चुनाँचे ईदुल-फ़ित्र उस मौक़े पर अ़ता फ़रमाई जब मुसलमान रोज़े की शानदार इबादत पूरी करते हैं। इस तरह हर साल यह नेमत मिल रही है और ख़ुशी हासिल हो रही है। और इस पर शुक्र के तौर पर ईद आ रही है। और ईदुल-अज़्हा उस मौक़े पर अ़ता फ़रमाई जब मुसलमान दूसरी अ़ज़ीमुश्शान इबादत यानी हज को पूरा

करते हैं।

ईद की ख़ुशी का हक़दार कौन?

लिहाज़ा तुमने चूँकि रमज़ान मुबारक के रोज़े रखे हैं और तुमने तरावीह पढ़ी हैं, इसलिए तुम इस ईदुल-फ़ित्र के इनाम के हक़दार हो। और तुमने चूँकि हज की इबादत अन्जाम दी है इसलिए इस ईदुल-अज़्हा के इनाम के हक़दार हो। अल्लाह तआला ने मुसलमानों के ख़ुशी मनाने का जो तरीक़ा अ़ता फ़रमाया है वह भी दुनिया की सारी क़ौमों से निराला है। वह यह कि ईद की नमाज़ के लिए मैदान में आ जाओ। दूसरे दिनों में तो मस्जिद में नमाज़ पढ़ना अफ़ज़ल है लिहाज़ा ईद के दिन नवाज़िश और रहमत की बारिश करने के लिए मैदान में बुलाया और मैदान में आने से पहले सदक़ा-ए-फ़ित्र अदा कर दो ताकि जो लोग ग़रीब हैं, जिनके चूल्हे ठंडे हैं, उनको कम-से-कम उस दिन यह फ़िक्र न हो कि खाना कहाँ से आएगा? ख़ुशी मनाने का यह निराला अन्दाज़ अ़ता फ़रमाया। लेकिन हमने यह तरीक़ा छोड़कर काफ़िरों का तरीक़ा इख़्तियार कर लिया। जिस तरह वे लोग गाने बजाते हैं, और बुरी बातों और अश्लील हरकतों में अपने त्यौहारों के वक़्त को ख़र्च करते हैं हमने भी उसी तरह शुरू कर दिया।

अल्लाह तआला तो मग़फ़िरत फ़रमाना चाहते हैं लेकिन हमने गुनाह के काम करने शुरू कर दिये, यह बिल्कुल मुनासिब नहीं। अल्लाह तआला अपनी रहमत से हम सबको सही सोच अ़ता फ़रमाए और रमज़ान की बरकतें अ़ता फ़रमाए और ईद की सही ख़ुशियाँ अ़ता फ़रमाए और गुनाहों, नाफ़रमानियों और बुराईयों से हमारी हिफ़ाज़त फ़रमाए। आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

ईदुल्-फ़ित्र
एक इस्लामी त्यौहार

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَنَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا ٥ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ٥ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ٥

(سورۃالبقرۃ آیت۱۸۵)

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ صَدَقَ اللّٰهُ مَوْلَانَا الْعَظِيْمُ، وَصَدَقَ رَسُوْلُهُ النَّبِيُّ الْكَرِيْمُ، وَنَحْنُ عَلٰى ذٰلِكَ مِنَ الشَّاهِدِيْنَ وَالشَّاكِرِيْنَ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ٥

रोज़ेदार के लिए दो ख़ुशियाँ

मोहतरम बुज़ुर्गो और अ़ज़ीज़ भाईयो! अल्लाह तआ़ला का इस पर जितना शुक्र अदा किया जाए कम है कि उसने अपने फ़ज़्ल व करम से हमें रमज़ान मुबारक अ़ता फ़रमाया और इस महीने की बरकतों से हमें नवाज़ा और इसमें रोज़े रखने और तरावीह पढ़ने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई और फिर इस मुबारक महीने की समाप्ति पर इस महीने के अनवार व बरकतों से लाभान्वित होने की ख़ुशी में "ईदुल-फ़ित्र" अ़ता फ़रमाई। हदीस शरीफ़ में जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने

इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः यानी अल्लाह तआला ने रोज़ेदार के लिए दो ख़ुशियाँ रखी हैं। एक ख़ुशी वह है जो इफ़्तार के वक़्त हासिल होती है और दूसरी ख़ुशी उस वक़्त हासिल होगी जब वह क़ियामत के रोज़ अपने परवर्दिगार से जाकर मुलाक़ात करेगा। असल ख़ुशी तो वही है जो आख़िरत में अल्लाह तआला से मुलाक़ात के वक़्त नसीब होगी, इन्शा-अल्लाह। अल्लाह तआला हर ईमान वाले को यह ख़ुशी अ़ता फ़रमाए। आमीन।

इफ़्तार के वक़्त ख़ुशी

लेकिन इस आख़िरत की ख़ुशी की थोड़ी-सी झलक अल्लाह तआला ने इस दुनिया में भी रख दी है। यह वह ख़ुशी है जो इफ़्तार के समय हासिल होती है। फिर ये इफ़्तार दो क़िस्म के हैं- एक इफ़तार वह है जो रोज़ाना रोज़ा खोलते वक़्त होता है। इस इफ़्तार के वक़्त हर रोज़ेदार को ख़ुशी हासिल होती है। देखिए! सारे साल खाने-पीने में इतना मज़ा और इतनी ख़ुशी हासिल नहीं होती जो मज़ा और ख़ुशी रमज़ान मुबारक के इफ़्तार के वक़्त हासिल होती है। हर शख़्स इसका तजुर्बा करता है। उलमा-ए-किराम रोज़ाना के इस इफ़्तार को "इफ़्तारे असग़र" (छोटा इफ़्तार) का नाम देते हैं और दूसरा इफ़्तार वह है जो रमज़ान मुबारक की समाप्ति पर होता है जिसके बाद ईदुल-फ़ित्र की ख़ुशी होती है। उसको "इफ़्तारे अकबर" (बड़ा इफ़्तार) कहा जाता है। इसलिए कि सारे महीने अल्लाह तआला के हुक्म की तामील में रोज़े रखने और उसकी बन्दगी और इबादत करने के बाद अल्लाह तआला ईद के दिन ख़ुशी और मसर्रत अ़ता फ़रमाते हैं। यह ख़ुशी आख़िरत में अल्लाह तआला से मुलाक़ात के वक़्त हासिल होने वाली ख़ुशी की एक छोटी-सी झलक है जो अल्लाह तआला ने ईद की शक्ल में बन्दों को अ़ता फ़रमाई है।

इस्लामी त्यौहार दूसरे मज़हबों के त्यौहारों से अलग तरह के हैं

और यह भी इस्लाम का निराला अन्दाज़ है कि पूरे साल में सिर्फ़ दो

त्यौहार और दो ईदें मुक़र्रर की गयी हैं जबकि दुनिया के दूसरे मज़हबों और क़ौमों में साल के दौरान बहुत-से त्यौहार मनाए जाते हैं। ईसाइयों के त्यौहार अलग हैं, यहूदियों के त्यौहार अलग हैं, हिन्दुओं के त्यौहार अलग हैं लेकिन इस्लाम ने सिर्फ़ दो त्यौहार मुक़र्रर किये हैं- एक ईदुल-फ़ित्र और दूसरा ईदुल-अज़्हा। और इन दोनों त्यौहारों को मनाने के लिए जिन दिनों को चुना गया है, वे भी दुनिया से निराले हैं। अगर आप दूसरे मज़हबों के त्यौहारों पर ग़ौर करेंगे तो यह नज़र आएगा कि वे लोग पिछले समय में पेश आने वाली किसी महत्तवपूर्ण घटना की यादगार में त्यौहार मनाते हैं। जैसे ईसाई 25 दिसम्बर को "क्रिसमस" का त्यौहार मनाते हैं और उनके कहने के अनुसार यह हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की पैदाईश का दिन है। हालाँकि ऐतिहासिक तौर पर यह बात ठीक नहीं। लेकिन उन्होंने अपने तौर पर यह समझ लिया कि 25 दिसम्बर को हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम दुनिया में तशरीफ़ लाए थे। इसलिए आपकी पैदाईश की याद में उन्होंने "क्रिसमस" के दिन को त्यौहार के लिए मुक़र्रर किया।

जिस दिन हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को और बनी इस्राईल को फ़िरऔ़न से नजात मिली और फ़िरऔ़न ग़र्क़ हो गया और मूसा अ़लैहिस्सलाम बनी इस्राईल को लेकर चले गये, उस दिन की याद में यहूदी अपना त्यौहार मनाते हैं। हिन्दुओं के यहाँ भी जो त्यौहार हैं वे भी गुज़रे हुए ज़माने की किसी न किसी घटना या वाक़िए की याद में मनाए जाते हैं।

इस्लामी त्यौहार गुज़रे ज़माने की किसी घटना से जुड़े हुए नहीं

जबकि इस्लाम ने जो दो त्यौहार "ईदुल-फ़ित्र" और "ईदुल-अज़्हा" मुक़र्रर किये हैं, गुज़िश्ता ज़माने की कोई घटना या कोई वाक़िआ उस दिन के साथ जुड़ा हुआ नहीं। एक (प्रथम) शव्वाल को ईदुल-फ़ित्र मनायी जाती है और दस ज़िलहिज्जा को ईदुल-अज़्हा मनायी जाती है। इन दोनों

तारीख़ों में कोई बात पेश नहीं आई। इस्लाम ने न तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पैदाईश के दिन को ईदुल-फ़ित्र और ईदुल-अज़्हा क़रार दिया न ही हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के मक्का मुकर्रमा से मदीना तय्यिबा की हिजरत करने की घटना को "ईद" का दिन मुक़र्रर किया, न ही हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बद्र के मैदान में फ़तह (विजय) हासिल करने को "ईद" का दिन क़रार दिया, न ही जंगे-उहुद और जंगे-अहज़ाब के दिन को "ईद" का दिन मुक़र्रर किया। और जिस दिन मक्का मुकर्रमा पर जीत हुई और बैतुल्लाह की छत से हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अ़न्हु की अज़ान पहली बार गूँजी, उस दिन को भी "ईद" का दिन क़रार नहीं दिया। इस्लाम की पूरी तारीख़ और ख़ास तौर पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पाक ज़िन्दगी ऐसी बातों से मालामाल है, लेकिन इस्लाम ने इनमें से किसी वाक़िए को ईद का दिन क़रार नहीं दिया।

"ईदुल-फ़ित्र" रोज़ों के पूरा होने पर इनाम

जिन दिनों को इस्लाम ने त्यौहार के लिए मुक़र्रर किया, उनके साथ कोई ऐसा वाक़िआ जुड़ा नहीं जो पिछले ज़माने में एक बार पेश आकर ख़त्म हो चुका हो। बल्कि इसके बजाए ऐसे ख़ुशी के वाक़िआत को त्यौहार की बुनियाद क़रार दिया जो हर साल पेश आते हैं और उनकी ख़ुशी में ईद मनायी जाती है। इसलिए अल्लाह तआ़ला ने दोनों ईदें ऐसे मौक़े पर मुक़र्रर फ़रमाईं हैं जब मुसलमान किसी इबादत को मुकम्मल करते हैं। इसलिए ईदुल-फ़ित्र रमज़ान के गुज़रने के बाद रखी है कि मेरे बन्दे पूरे महीने इबादत के अन्दर लगे रहे, पूरे महीने उन्होंने मेरी ख़ातिर खाना पीना छोड़े रखा, नफ़्सानी ख़्वाहिशों को छोड़े रखा और पूरा महीना इबादत के अन्दर गुज़ारा, उसकी ख़ुशी और इनाम में यह ईदुल-फ़ित्र मुक़र्रर फ़रमाई।

"ईदुल-अज़्हा" हज के पूरा होने पर इनाम

और ईदुल-अज़्हा ऐसे मौक़े पर मुक़र्रर फ़रमाई। जब मुसलमान एक

दूसरी अ़ज़ीम इबादत यानी हज को पूरा करते हैं। इसलिए कि हज का सबसे बड़ा रुक्न "वुक़ूफ़े अ़र्फ़ा" (यानी अ़रफ़ात में ठहरना) नौ (9) ज़िलहिज्जा को अदा किया जाता है। इस तारीख़ को पूरी दुनिया से आए लाखों मुसलमान मैदाने अ़रफ़ात में जमा होकर अल्लाह तआ़ला की अ़ज़ीम इबादत को पूरा करते हैं। इस इबादत को पूरे करने के अगले दिन यानी दस ज़िलहिज्जा को अल्लाह तआ़ला ने दूसरी ईद मुक़र्रर की। इसके ज़रिये अल्लाह तआ़ला ने यह सबक़ दे दिया कि गुज़रे हुए ज़माने के वे वाक़िआ़त जो एक बार पेश आए और ख़त्म हो गये वे वाक़िआ़त तुम्हारे लिए ईद की बुनियाद नहीं, बेशक तुम्हारा इतिहास उन घटनाओं से जगमगा रहा है और तुम्हें उन पर गर्व करने का भी हक़ पहुँचता है कि तुम्हारे बड़ों (पूर्वजों) ने ये कारनामे अन्जाम दिये थे लेकिन तुम्हारे लिए उनका अ़मल काफ़ी नहीं। तुम्हारे लिए तुम्हारा अपना अ़मल होना ज़रूरी है। कोई शख़्स आख़िरत में सिर्फ़ इस बुनियाद पर नजात नहीं पाएगा कि मेरे बड़ों (बाप-दादा) ने इतने बड़े कारनामे अन्जाम दिये थे, बल्कि वहाँ पर हर आदमी को अपने अ़मल का जवाब देना होगा। अ़ल्लामा इक़बाल मरहूम ने ख़ूब कहा कि:

थे तो वह आबा तुम्हारे मगर तुम क्या हो
हाथ पर हाथ धरे मुन्तज़िरे फ़र्दा हो

इसलिए सिर्फ़ पुरानी घटनाओं पर ख़ुशी मनाते रहना ईमान वाले के लिए यह काफ़ी नहीं बल्कि ख़ुद तुम्हें अपने अ़मल को देखना है। अगर तुम्हारे अपने अ़मल के अन्दर अच्छाई है तो ख़ुशी मनानी है और अगर बुराई है तो रंज करना है और शर्मिन्दगी का इज़हार करना है।

ईद का दिन "इनाम का दिन" है

बहरहाल! यह ईदुल-फ़ित्र ख़ुशी मनाने का और इस्लामी त्यौहार का पहला दिन है। हदीस में इसको "इनाम का दिन" भी क़रार दिया गया है। यानी अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से पूरे महीने की इबादतों पर इनाम दिये जाने का दिन है जो "मग़फ़िरत" की शक्ल में दिया जाता है। चूँकि एक

हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इरशाद फ़रमाते हैं कि जब रमज़ान मुबारक का महीना गुज़र जाने के बाद ईद का दिन आता है तो अल्लाह तआ़ला ईमान वालों की तरफ़ इशारा करके फ़रिश्तों पर फ़ख़्र (गर्व) फ़रमाते हैं।

इनसान की पैदाईश पर फ़रिश्तों के एतिराज़ का जवाब

इसलिए गर्व फ़रमाते हैं कि जब हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को पैदा किया जा रहा था तो इन फ़रिश्तों ने एतिराज़ किया था और अल्लाह तआ़ला से अ़र्ज़ किया था कि:

"आप मिट्टी के इस पुतले को पैदा कर रहे हैं जो ज़मीन पर जाकर फ़साद फैलाएगा और ख़ून बहायेगा और एक-दूसरे के गले काटेगा और हम आपकी पाकी और तारीफ़ बयान करने के लिए काफ़ी हैं"।

(सूरः ब-क़रह् आयत 30)

जवाब में अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया:

"मैं इस मख़्लूक़ के बारे में वे बातें जानता हूँ जो तुम नहीं जानते।

(सूरः ब-क़रह् आयत 30)

मैं जानता हूँ कि इस मख़्लूक़ के अन्दर हालाँकि मैंने फ़साद का माद्दा भी रखा है, फ़साद फैलाने की भी सलाहियत इसके अन्दर मौजूद है लेकिन इसके बावजूद जब यह मख़्लूक़ मेरे हुक्म की तामील करेगी और इबादत और बन्दगी करेगी तो यह तुमसे भी आगे बढ़ जाएगी। क्योंकि तुम्हारे अन्दर मैंने फ़साद का माद्दा ही नहीं रखा। चुनाँचे अगर तुम गुनाह करना भी चाहो तो गुनाह नहीं कर सकते। न तुमको भूख लगती है न तुमको प्यास लगती है। न तुम्हारे दिल में जिस्मानी और नफ़्सानी ख़्वाहिशें पैदा होती हैं। तुम्हें तो सिर्फ़ इसी लिए पैदा किया है कि बस "अल्लाह अल्लाह" करते रहो और अल्लाह तआ़ला के हुक्म की तामील करते रहो। लेकिन इस इनसान को भूख भी लगेगी, प्यास भी लगेगी, जिस्मानी इच्छाएँ भी पैदा होंगी, और जब मैं इस मख़्लूक़ से यह कह दूँगा कि मत खाना जब मैं उससे कह दूँगा कि मत पीना तो इस हुक्म के नतीजे में इनसान

सारा दिन इस तरह गुज़ार देगा। अन्दर से प्यास लग रही होगी, फ्रिज में ठंडा पानी मौजूद होगा, कमरे में कोई दूसरा इनसान देखने वाला नहीं होगा लेकिन इसके बावजूद सिर्फ़ वह मेरे डर से और मेरी बड़ाई के ख़्याल से और मेरे हुक्म के पालन में अपने होंठों को खुश्क किये हुए होगा। इस सिफ़त की वजह से यह इनसान तुमसे भी आगे बढ़ जाएगा।

आज मैं इन सब की मग़फ़िरत कर दूँगा

बहरहाल! ईदुल-फ़ित्र के दिन जब मुसलमान ईदगाह में जमा होते हैं तो अल्लाह तआ़ला उन्हीं फ़रिश्तों के सामने जिन्होंने एतिराज़ किया था, फ़ख़्र (गर्व) करते हुए फ़रमाते हैं कि ऐ मेरे फ़रिश्तो! ये हैं मेरे बन्दे जो इबादत में लगे हुए हैं और बताओ कि जो मज़दूर अपना काम पूरा कर ले उसको क्या सिला मिलना चाहिये? जवाब में फ़रिश्ते फ़रमाते हैं कि जो मज़दूर अपना काम पूरा कर ले उसका सिला यह है कि उसको उसकी पूरी-पूरी मज़दूरी दे दी जाए उसमें कोई कमी न की जाए। अल्लाह तआ़ला फिर फ़रिश्तों से फ़रमाते हैं कि ये मेरे बन्दे हैं। मैंने रमज़ान के महीने में इनके ज़िम्मे एक काम लगाया था कि रोज़े रखें और मेरी ख़ातिर खाना-पीना छोड़ दें और अपनी ख़्वाहिशों को छोड़ दें। आज इन्होंने यह फ़रीज़ा पूरा कर लिया और अब ये इस मैदान के अन्दर जमा हुए हैं और मुझसे दुआ़एँ माँगने के लिए आए हैं। अपनी मुरादें माँग रहे हैं। मैं अपनी इज़्ज़त व जलाल की क़सम खाता हूँ कि आज में सबकी दुआ़एँ क़बूल करूँगा और मैं इनके गुनाहों की मग़फ़िरत करूँगा और इनकी बुराइयों को भी नेकियों में बदल दूँगा।

चुनाँचे हदीस शरीफ़ में आता है कि जब रोज़ेदार ईदगाह से वापस जाते हैं तो इस हालत में जाते हैं कि उनकी मग़फ़िरत हो चुकी होती है।

ईदगाह में नमाज़ अदा की जाए

यह कोई मामूली इनाम नहीं है कि अल्लाह तआ़ला पूरे मजमे की मग़फ़िरत फ़रमा देते हैं। इसी वजह से हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ईद की नमाज़ के लिए इस बात को सुन्नत क़रार दिया कि मुसलमान

बड़ी से बड़ी तायदाद में खुले मैदान में जमा हों और मजमा ख़ूब ज़्यादा हो क्योंकि मजमा जब बड़ा होगा तो उस मजमे में न जाने किस अल्लाह के बन्दे की बरकत से अल्लाह तआला पूरे मजमे पर फ़ज़्ल फ़रमा दे। अल्लाह तआला की शाने रहीमी तो ऐसी है कि अगरचे इनाम के हक़दार तो कुछ अफ़राद होते हैं जिन्होंने सही मायनों में अल्लाह तआला की बन्दगी की थी, लेकिन जब अल्लाह तआला अपने नेक बन्दों को अपनी रहमत से नवाज़ते हैं तो मुझ जैसे नाकारा भी अगर वहाँ मौजूद हों तो अल्लाह तआला यह फ़रमाते हैं कि इन कुछ अफ़राद की तो मग़फ़िरत कर दूँ और बाक़ी लोगों की न करूँ यह मेरी रहमत से बईद है। इसलिए सबको अपने फ़ज़्ल व करम से नवाज़ देते हैं।

अपने आमाल पर नज़र मत करो

इसलिए यह ईद का दिन जो अल्लाह तआला ने हमें अ़ता फ़रमाया और इस दिन में ईद की नमाज़ पढ़ने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई यह कोई मामूली बात नहीं है। यह ज़िन्दगी के अन्दर इन्क़िलाब लाने वाली बात है। इसके नतीजे में अल्लाह तआला ने इन्शा-अल्लाह सबकी मग़फ़िरत फ़रमा दी है और अल्लाह तआला की रहमत से यही उम्मीद रखनी चाहिये।

हमारे दिलों में ये जो ख़्यालात आते हैं कि हमने बेशक इबादत तो कर ली लेकिन इस इबादत का हक़ तो अदा न हो सका। क्या हमारे रोज़े क्या हमारी नमज़ें, क्या हमारी तिलावत, क्या हमारा ज़िक्र व तस्बीह, न उसमें आदाब की पूरी रियायत है न उसमें शर्तों की पूर्ती है, इसलिए इन इबादतों के नतीजे में कैसे यह उम्मीद बाँधें कि अल्लाह तआला ने इन इबादतों को क़बूल करके हमारी मग़फ़िरत फ़रमा दी होगी।

उनके फ़ज़्ल से उम्मीद रखो

ख़ूब याद रखें! अपने आमाल के ज़रिये तो उम्मीद नहीं बाँधनी चाहिये क्योंकि हमारे आमाल तो इस लायक़ ही नहीं हैं कि वे अल्लाह तआला की बारगाह में पेश करने के क़ाबिल हों। उनकी शान के मुताबिक़

हों। हाँ! उनकी रहमत से ज़रूर उम्मीद बाँधें। उनके फ़ज़्ल व करम से उम्मीद बाँधें। बेशक ये आमाल हमारी निस्बत से खोटी पूँजी है लेकिन उनकी रहमत से उम्मीद है कि इन टूटे-फूटे आमाल को भी क़बूल फ़रमा लेंगे। जब उन्होंने यह कह दिया है कि मैं तुम्हारी बुराइयों को भी अच्छाइयों से बदल दूँगा यानी ये आमाल जो तुम हमारी बारगाह में पेश कर रहे हो इनमें बहुत-सी ख़ामियाँ हैं और बहुत-सी बुराइयाँ हैं, लेकिन जब तुम मेरी ख़ातिर यहाँ आए हो तो मैं तुम्हारी बुराइयों को भी अच्छाइयों से बदल दूँगा। इसलिए हर मोमिन को यह उम्मीद रखनी चाहिये कि इस रमज़ान में मेरी मग़फ़िरत हो गयी। इसलिए कि जब उन्होंने मग़फ़िरत का वायदा किया है तो ज़रूर कर दी है।

हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाहि अ़लैहि का इरशाद

हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि जो शख़्स अ़मल किये बग़ैर अल्लाह तआ़ला से उम्मीद बाँध रहा है कि अल्लाह तआ़ला मेरी मग़फ़िरत फ़रमा देंगे और मुझे जन्नत में दाख़िल कर देंगे। ऐसा शख़्स अपने आप को धोखा दे रहा है। और जो शख़्स अपने अ़मल पर भरोसा कर रहा है कि मैंने चूँकि अच्छा अ़मल किया है इसलिए मैं ज़रूर जन्नत में जाऊँगा, ऐसा शख़्स भी अपने आप को धोखा दे रहा है। सही तरीक़ा यह है कि अ़मल भी किये जाओ लेकिन अपने अ़मल पर भरोसा मत करो। अल्लाह तआ़ला की रहमत से उम्मीद बाँधो और अल्लाह तआ़ला की रहमत पर भरोसा करो।

अ़मल किये बग़ैर उम्मीद बाँधना ग़लती है

अ़मल किये बग़ैर अल्लाह तआ़ला की रहमत से उम्मीदें बाँधना इसलिए ग़लत है कि अल्लाह तआ़ला ने ख़ुद फ़रमा दिया है कि मेरी रहमत उसी के लिए है जो अ़मल करता है। अगर कोई शख़्स अ़मल ही कुछ नहीं करता बल्कि ग़फ़लत में वक़्त गुज़ार रहा है तो ऐसे शख़्स को यह जान लेना चाहिये कि जिस तरह अल्लाह तआ़ला ग़फ़ूरुर्रहीम (यानी माफ़ करने वाले और रहम करने वाले) हैं इसी तरह सख़्त सज़ा देने वाले

भी हैं। इसलिए जो शख़्स अ़मल किये बग़ैर अल्लाह तआ़ला की रहमत से उम्मीद बाँध रहा है वह दर असल अपने को धोखा दे रहा है। लेकिन अगर किसी शख़्स ने अ़मल कर लिया और क़दम आगे बढ़ा दिया लेकिन उसमें नुक़्स और कोताहियाँ रह गईं तो चूँकि उसने अल्लाह तआ़ला को राज़ी करने के लिए क़दम बढ़ाया था इसलिए अल्लाह तआ़ला उस पर रहमत फ़रमा देते हैं और उसकी कोताहियों को दरगुज़र फ़रमा कर उनको नेकियों से बदल देते हैं। इसलिए अ़मल भी करते रहो और भरोसा अल्लाह तआ़ला की ज़ात पर करो।

यही मामला हमारा है। न हमारे रोज़े अल्लाह तआ़ला की बारगाह में पेश करने के लायक़ हैं, न तरावीह अल्लाह तआ़ला की बारगाह में पेश करने के लायक़ हैं, न तिलावत अल्लाह तआ़ला की बारगाह में पेश करने के लायक़ है, लेकिन अगर उनकी रहमत पर नज़र करें तो वह यह फ़रमा रहे हैं, मैं तुम्हारी बुराइयों को भी अच्छाइयों से बदल दूँगा। इसलिए उम्मीद यह रखनी चाहिये कि अल्लाह तआ़ला ने अपने वायदे को पूरा फ़रमाया है और हमारी मग़फ़िरत फ़रमा दी है।

आईन्दा भी इस दिल को साफ़ रखना

और मग़फ़िरत का मतलब यह है कि हमारे बातिन में (यानी अन्दर) गुनाहों का जो मैल-कुचैल था अल्लाह तआ़ला ने उसको धोकर साफ़ कर दिया। अब तुम सब सफ़ेद साफ़-सुथरे धुले हुए कपड़े की तरह हो। अब साफ़ कपड़े की हिफ़ाज़त करना क्योंकि कपड़ा जितना सफ़ेद साफ़ और धुला होगा उतना ही उस पर धब्बा बुरा मालूम होगा। और अगर कपड़ा पहले से मैला है उस पर दाग़-धब्बे लगे हुए हैं उस पर एक दाग़ और लग जाए तो पता भी नहीं चलेगा। इसलिए जब अल्लाह तआ़ला ने आज ईद के दिन हमें और आपको धोकर साफ़ और उजला कर दिया तो अब हमारा काम यह है कि उस कपड़े की हिफ़ाज़त करें और अब गुनाह का धब्बा न लगे। अब उस पर गुनाह और नाफ़रमानी का दाग़ न लगे और इस फ़िक्र में न रहो कि अगर दाग़ लग भी गये तो अगले रमज़ान में

दोबारा धुल जाएँगे। अरे किसको मालूम है कि अगला रमज़ान नसीब हो या न हो। किसको मालूम है कि आईन्दा गुनाह से तौबा की तौफ़ीक़ मिलेगी या नहीं। इसलिए आईन्दा आने वाली ज़िन्दगी में गुनाह के धब्बे से बचने की पूरी कोशिश करो।

खुलासा

बहरहाल जो आयत मैंने शुरू में पढ़ी थी कि:

"यानी मैंने यह ईद का दिन ऐसे मौक़े पर मुक़र्रर किया है कि जिसमें तुम रमज़ान के रोज़ों की गिनती पूरी करो और अल्लाह तआला की तकबीर करो (यानी बड़ाई बयान करो) ताकि तुम शुक्रगुज़ार बन जाओ। (सूरः ब-क़रह् आयत 185)

शुक्रगुज़ार बनने का रास्ता यही है कि जिस ज़ात ने तुम्हारी बुराइयों को भी अच्छाइयों से बदल दिया है, उसकी नाफ़रमानी से और गुनाहों से आईन्दा ज़िन्दगी को बचाने की फ़िक्र करो।

आज का दिन हमारे और आपके लिए अल्हम्दु लिल्लाह खुशी का दिन भी है। फ़रहत का दिन भी है। और अल्लाह की रहमत से मग़फ़िरत (बख़्शिश) की उम्मीद रखने का दिन भी है। अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल व करम से इस फ़रीज़े की अदायगी की तौफ़ीक़ भी अ़ता फ़रमाए और आईन्दा ज़िन्दगी को गुनाहों से और नाफ़रमानियों से बचाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَآ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

जनाज़े के आदाब
और
छींकने के आदाब

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَ نَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا٥ اَمَّا بَعْدُ!

हदीसः हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें सात चीज़ों का हुक्म फ़रमाया। मरीज़ की इयादत (मिज़ाज पुर्सी) करना। जनाज़ों के पीछे जाना। छींकने वाला अगर अल्हम्दु लिल्लाहि कहे तो उसका जवाब देना। कमज़ोर की मदद करना। मज़लूम की मदद करना। सलाम को फैलाना। क़सम खाने वाले की मदद करना। (बुख़ारी शरीफ़)

जनाज़े के पीछे चलने का हुक्म मर्दों के लिए है

एक मुसलमान के ज़िम्मे दूसरे मुसलमानों के जो हुक़ूक़ हैं उनमें से दो का बयान पीछे हो चुका। नम्बर एक- सलाम का जवाब देना। नम्बर दो- मरीज़ की इयादत करना। तीसरा हक़ जो इस हदीस में बयान फ़रमाया

वह है "जनाज़ों के पीछे जाना"। यह भी बड़ी फ़ज़ीलत वाला काम है और मरने वाले का हक़ है। अलबत्ता यह हक़ मर्दों पर है औरतों पर यह हक़ नहीं है। और मरीज़ की बीमार-पुर्सी करने का अमल मर्द के लिए भी है और औरत के लिए भी है। और मरीज़ की इयादत का जो सवाब मर्द के लिए है वही सवाब औरत के लिए भी है। लेकिन जनाज़ों के पीछे जाना सिर्फ़ मर्दों के साथ ख़ास है। अलबत्ता औरतें ताज़ियत (यानी मरने वाले के प्रति उसके रिश्तेदारों और घर वालों से ग़म और अफ़सोस ज़ाहिर करने) के लिए जा सकती हैं और "इन्शा-अल्लाह" अल्लाह तआला की ज़ात से उम्मीद है कि उनको ताज़ियत करने में भी वही अज्र व सवाब हासिल हो जाएगा जो मर्दों को जनाज़े के पीछे जाने से हासिल होता है।

जनाज़े के पीछे चलने की फ़ज़ीलत

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जनाज़े के पीछे चलने की बड़ी फ़ज़ीलत बयान फ़रमाई है। चुनाँचे एक हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया:

जो शख़्स जनाज़े के साथ उसकी नमाज़ पढ़े जाने तक हाज़िर रहे उसको एक 'क़ीरात' सवाब मिलेगा। और जो शख़्स दफ़न तक शरीक रहे उसको दो 'क़ीरात' सवाब मिलेगा। किसी सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु ने सवाल किया या रसूलल्लाह! ये दो क़ीरात कैसे होंगे? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जवाब में फ़रमाया कि ये दो क़ीरात दो बड़े पहाड़ों के बराबर होंगे। बहरहाल! नमाज़े जनाज़ा पढ़ने और दफ़न तक शरीक होने का बहुत बड़ा सवाब है।

जनाज़े में शिर्कत के वक़्त नीयत क्या हो?

जनाज़े के पीछे जाने का अमल ऐसा है जो हम सब करते हैं। शायद ही कोई शख़्स ऐसा होगा जो कभी भी जनाज़े के पीछे नहीं गया होगा बल्कि हर शख़्स को इस अमल से वास्ता पड़ता है। लेकिन सही तरीक़ा मालूम न होने की वजह से यह अमल भी एक रस्मी ख़ानापुरी होकर रह जात है। जैसे कभी-कभी जनाज़े में शिर्कत का मक़सद यह होता है कि

अगर शिर्कत न की तो लोग नाराज़ हो जाएँगे। यह नीयत और मक़सद ग़लत है। इसलिए जनाज़े में शिर्कत करते समय अपनी नीयत ठीक कर लो और यह नीयत कर लो कि मैं इस मुसलमान का हक़ अदा करने के लिए शिर्कत कर रहा हूँ। और जनाज़े के पीछे चलना चूँकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत है और आपका हुक्म है इसलिए मैं भी आपकी इत्तिबा और पैरवी में शरीक रहा हूँ। इस नीयत से जब शिर्कत करोगे तो इन्शा-अल्लाह तआ़ला यह अ़मल बड़े अज्र व सवाब का ज़रिया बन जाएगा।

जनाज़े के साथ चलते वक़्त कलिमा-ए-शहादत पढ़ना

दूसरे यह कि जनाज़े में शिर्कत करने का तरीक़ा सुन्नत के मुताबिक़ होना चाहिये। जानकारी न होने और बेध्यानी की वजह से हम बहुत-सी सुन्नतों पर अ़मल करने से मेहरूम रह जाते हैं और बिना वजह अज्र व सवाब बेकार कर देते हैं। ज़रा-सा ध्यान अगर कर लेंगे तो एक ही अ़मल में बहुत सारे सवाब हासिल हो जाएँगे। जैसे जानकारी न होने की वजह से हमारे यहाँ एक तरीक़ा यह चल पड़ा है कि जब जनाज़े को कन्धा दिया जाता है तो एक आदमी बुलन्द आवाज़ से नारा लगाता है "कलिमा-ए-शहादत" और दूसरे लोग उसके जवाब में बुलन्द आवाज़ से "अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्-न मुहम्मदन् अ़ब्दुहू व रसूलुहू" पढ़ते हैं। यह तरीक़ा बिल्कुल ग़लत है। इसकी शरीअ़त में कोई असल नहीं। यह अ़मल न तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने किया न सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने किया, और न ही हमारे बुज़ुर्गाने दीन से यह अ़मल साबित है बल्कि दीन के आ़लिमों ने लिखा है कि जनाज़े के साथ जाते हुए किसी तरह का कोई ज़िक्र बुलन्द आवाज़ से करना मक्रूह है। और जनाज़े के साथ जाने का अदब यह है कि ख़ामोश चले, बिना ज़रूरत बातें करना भी अच्छा नहीं। इसलिए "कलिमा-ए-शहादत" का नारा लगाना या "कलिमा-ए-शहादत" बुलन्द आवाज़ से पढ़ना सुन्नत के ख़िलाफ़ है। इससे परहेज़ करना चाहिये।

जनाज़ा उठाते वक़्त मौत का ध्यान करें

और ख़ामोश चलने में हिक्मत यह है कि ख़ामोश रहकर यह ग़ौर करो और सोचो कि जो वक़्त उस पर आया है, तुम पर भी आने वाला है। यह नहीं कि उस जनाज़े को तो तुम लेजा कर क़ब्र में दफ़न कर दोगे और तुम हमेशा ज़िन्दा रहोगे। इसलिए ख़ामोश रहकर उस मौत का ध्यान और फ़िक्र करो कि एक दिन इसी तरह मैं भी मर जाऊँगा और मेरा भी जनाज़ा इसी तरह उठाया जाएगा और मुझे भी क़ब्र में दफ़न कर दिया जाएगा। इस तरह मौत का ध्यान जमाने के नतीजे में दिल में कुछ नर्मी पैदा होगी और अल्लाह तआला की तरफ़ रुजू करने का एहसास बढ़ेगा। इसलिए ख़ामोश रहकर मौत का मुराक़बा (ध्यान और फ़िक्र) करना चाहिये अलबत्ता कोई ज़रूरी बात करनी हो तो कर सकते हैं। कोई नाजायज़ और हराम नहीं है, अलबत्ता अदब के ख़िलाफ़ है।

जनाज़े के आगे न चलें

एक अदब यह है कि जब जनाज़ा लेजा रहे हों तो जनाज़ा आगे होना चाहिये और लोग उसके पीछे-पीछे चलें। दाएँ-बाएँ चलें तो भी ठीक है लेकिन जनाज़े के आगे-आगे चलना ठीक नहीं, अदब के ख़िलाफ़ है। अलबत्ता कन्धा देने की वजह से वक़्ती तौर पर आगे बढ़ जाएँ तो इसमें कोई हर्ज नहीं। लेकिन कन्धा देने के लिए कुछ लोग ऐसा करते हैं कि जनाज़े के आगे दो तरफ़ा लम्बी क़तार लगा लेते हैं जिसके नतीजे में जनाज़े के साथ चलने वाले तमाम लोग जनाज़े से आगे हो जाते हैं और जनाज़ा पीछे हो जाता है, यह तरीक़ा भी कुछ अच्छा नहीं है।

जनाज़े को कन्धा देने का तरीक़ा

इसी तरह जनाज़े को कन्धा देने का तरीक़ा यह है कि सबसे पहले मय्यित के दाएँ हाथ की तरफ़ वाल पाया अपने दाहिने कन्धे पर रखें और कम-से-कम दस क़दम चलें, यह अफ़ज़ल है बशर्तेकि दस क़दम चलने की ताक़त हो। इसलिए दूसरे लोगों को इतनी जल्दी नहीं करनी चाहिये कि

अभी एक ने जनाज़ा कन्धे पर रखा और दूसरे शख़्स ने फ़ौरन आगे बढ़कर उसको ले लिया। ऐसा नहीं करना चाहिये। अलबत्ता अगर कोई कमज़ोर और बूढ़ा आदमी है तो उस हालत में दूसरे लोगों को चाहिये कि उससे जल्दी ले लें ताकि उसको तकलीफ़ न हो। फिर मय्यित के दाएँ पाँव की तरफ़ का पाया अपने दाहिने कन्धे पर उठाए और दस क़दम चले और फिर मय्यित के बाएँ हाथ की तरफ़ का पाया अपने बाएँ कन्धे पर उठाए और दस क़दम चले। फिर मय्यित के बाएँ पाँव की तरफ़ का पाया अपने बाएँ कन्धे पर उठाए और दस क़दम चले। इस तरह हर शख़्स जनाज़े के चारों अतराफ़ में कन्धा दे और चालीस क़दम चले। यह तरीक़ा सुन्नत से ज़्यादा क़रीब है और अफ़ज़ल है, हालाँकि इसके ख़िलाफ़ करना नाजायज़ नहीं, लेकिन सुन्नत का सवाब ज़ाया हो जायेगा।

आजकल जनाज़ा लेजाते वक़्त धक्कम-पेल होती है। कन्धा देने के शौक़ में दूसरे मुसलमान भाइयों को धक्का दे दिया जाता है और इस बात का ख़्याल ही नहीं होता कि हम मुसलमान को तकलीफ़ पहुँचा कर हराम काम कर रहे हैं। कन्धा देने का सवाब बेकार करके उल्टा गुनाह कमा रहे हैं। इसलिए ऐसा न करना चाहिये बल्कि इत्मीनान से कन्धा देना चाहिये और दूसरों को इसका मौक़ा देना चाहिये कि दूसरा मुसलमान भाई कन्धा देते हुए दस क़दम पूरे कर ले। उसके बाद आप उससे ले लें।

जनाज़े को तेज़ क़दम से लेकर चलना

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक हदीस में जनाज़ा ले जाने का यह अदब भी बयान फ़रमाया कि जब जनाज़ा लेकर जाओ तो ज़रा तेज़-तेज़ क़दम बढ़ाओ, आहिस्ता मत चलो। और इसकी वजह भी बयान फ़रमा दी कि अगर वह जन्नती है तो उसको जन्नत में पहुँचाने में क्यों देर करते हो? उसको जल्दी उसके अच्छे ठिकाने पर पहुँचा दो। और अगर वह दोज़ख़ी है तो दोज़ख़ वाले को जल्दी उसके ठिकाने तक पहुँचा कर अपने कन्धे से उस बोझ को दूर कर दो। अलबत्ता इतनी तेज़ी भी नहीं करनी चाहिये जिससे जनाज़ा हरकत करने लगे, हिलने लगे, बल्कि

बीच की चाल से चलो और उसको जल्दी पहुँचा दो।

जनाज़ा ज़मीन पर रखने तक खड़े रहना

इसी तरह एक अदब और सुन्नत यह है कि क़ब्रिस्तान में जब तक जनाज़ा कन्धों से उतार कर नीचे न रख दिया जाए उस वक़्त तक लोग न बैठें बल्कि खड़े रहें। अलबत्ता जब जनाज़ा नीचे रख दिया जाए तो उस वक़्त बैठ सकते हैं। हाँ! अगर कोई शख़्स कमज़ोर और बूढ़ा है, वह बैठना चाहता है तो उसमें भी कोई हर्ज नहीं। इसलिए हर अ़मल सुन्नत की पैरवी की नीयत से और उसका एहतिमाम करके करे तो फिर हर-हर मौक़े पर किया जाने वाला हर अ़मल इबादत बन जाता है।

इस्लामी अलफ़ाज़ और परिभाषायें

चौथा हक़ जिसका इस हदीस में ज़िक्र है वह छींकने वाले के "अल्हम्दु लिल्लाह" कहने के जवाब में "यर्हमुकल्लाहु" कहना है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इसको "तश्मीत" के लफ़्ज़ से ताबीर फ़रमाया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से जो अलफ़ाज़ हदीसों में रिवायत किए गये हैं या क़ुरआन करीम में जो अलफ़ाज़ आए हैं वे अलफ़ाज़ भी सीखने चाहियें। एक ज़माना वह था कि मुसलमान चाहे वह बाक़ायदा आ़लिम न हो और उसने किसी मदरसे से इल्मे दीन हासिल न किया हो लेकिन वह इस्लामी अलफ़ाज़ और इस्लामी इस्तिलाहात (परिभाषाओं) से इतना मानूस होता था कि बहुत-से इस्लामी अलफ़ाज़ और इस्लामी इस्तिलाहात लोगों की ज़बानों पर होते थे। इसका नतीजा यह था कि उलमा की किताबें, तक़रीरें और वअ़ज़ वग़ैरह को समझने में कोई मुश्किल नहीं होती थी। समाज में इन इस्लामी अलफ़ाज़ और इस्लामी इस्तिलाहात का आ़म रिवाज था, इसका बड़ा फ़ायदा था।

इस्लामी परिभाषाओं से जानकारी न होने का नतीजा

लेकिन अब इस्लामी इस्तिलाहात (परिभाषाओं) से धीरे-धीरे ना-वाक़फ़ियत इस दर्जे बढ़ गयी है और लोग इस दर्जे उनसे ग़ाफ़िल और

ला-इल्म हो गये हैं कि अगर आम लफ़्ज़ भी उनके सामने बोला जाए तो इस तरह हैरत से चेहरा तकने लगते हैं कि मालूम नहीं किस ज़बान का लफ़्ज़ बोल दिया। इस ना-जानकारी का नतीजा यह है कि अभी क़रीब ही ज़माने में लिखी हुई उलमा की किताबें, मलफ़ूज़ात और दीनी तक़रीरें पढ़ने में दुश्वारी होती है और शिकायत करते हैं कि हमारी समझ में नहीं आतीं। अब आज के दौर का आम आदमी हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि की लिखी हुई किताबों, आपके बयानात, और मलफ़ूज़ात को नहीं समझता। इसलिए कि आम आदमी उन अलफ़ाज़ से और उन इस्लामी इस्तिलाहात से ना-वाक़िफ़ है, उनसे मानूस नहीं। और न ही उन अलफ़ाज़ के समझने की तरफ़ ध्यान और तवज्जोह है। इसका नतीजा यह है कि वह उन उलमा की लिखी हुई किताबों और दीनी बयानात और मलफ़ूज़ात से फ़ायदा उठाने से मेहरूम रह जाता है।

अंग्रेज़ी अलफ़ाज़ का रिवाज

लिहाज़ा यह वबा और बीमारी हमारे अन्दर फैल गयी है कि "इस्लामी इस्तिलाहात" हमारी बोलचाल से बाहर हो गई हैं और दूसरी तरफ़ अंग्रेज़ी ज़बान दाख़िल हो गयी। आज अगर कोई शख़्स थोड़ा-सा पढ़-लिख ले और मैट्रिक कर ले या इन्टर पास कर ले तो अब वह अपनी बातचीत में आधे अलफ़ाज़ अंग्रेज़ी के बोलेगा और आधे अलफ़ाज़ उर्दू के बोलेगा। हालाँकि न तो उसको उर्दू पूरी तरह आती है और न अंग्रेज़ी पूरी तरह आती है। तो अंग्रेज़ी के अलफ़ाज़ बोलने का इतना ख़्याल है लेकिन इस्लामी इस्तिलाहात से इतनी दूरी है कि उनका मतलब भी उसकी समझ में नहीं आता हालाँकि उनको भी सीखने की फ़िक्र करनी चाहिये।

आज "मआरिफ़ुल क़ुरआन" समझ में नहीं आती

मेरे वालिद माजिद मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि ने क़ुरआन करीम की तफ़सीर "मआरिफ़ुल क़ुरआन" लिखी है। उन्होंने लिखी ही इस मक़सद से थी कि एक आम आदमी को आसान अन्दाज़ में

कुरआन करीम की तफ़सीर समझ में आ जाए। लेकिन बहुत-से लोग आकर यह कहते हैं कि हमें तो "मआ़रिफ़ुल कुरआन" समझ में नहीं आती। अगर इससे भी कोई आसान तफ़सीर लिख दें तो कहेंगे कि वह भी हमारी समझ में नहीं आती। वजह उसकी यह है कि इस्लामी तालीमात को हासिल करने और उन अलफ़ाज़ से अपने आपको मानूस करने की फ़िक्र ही नहीं है। वरना आज से पचास साल पहले का एक आ़म आदमी जिसने बाक़ायदा इल्मे दीन हासिल नहीं किया था उसके ख़तों में ऐसे बहुत-से अलफ़ाज़ नज़र आएँगे कि आजकल का ग्रेजुएट और एम० ए० भी उस ख़त को नहीं समझ सकता। बहरहाल इसकी फ़िक्र करनी चाहिये इसलिए जब हदीस सुना करें तो उसके अलफ़ाज़ से भी अपने आप को मानूस किया करें।

छींकने के आदाब

बहरहाल! यह लफ़्ज़ "तश्मीत" है इस लफ़्ज़ को "सीन" से "तस्मीत" पढ़ना भी ठीक है। इसके मायने हैं कि जब किसी शख़्स को छींक आए तो उसके बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तालीम यह है कि छींकने वाले को "अल्हम्दु लिल्लाह" कहना चाहिये और जो शख़्स पास बैठा सुन रहा है उसको "यर्हमुकल्लाहु" कहना चाहिये। यानी अल्लाह तआ़ला तुम पर रहम करे। ये "यर्हमुकल्लाहु" के अलफ़ाज़ कहना "तश्मीत" है। यह अ़रबी है और इसका मतलब यह है कि किसी को इस बात की दुआ़ देना कि वह सही रास्ते पर रहे।

जमाई सुस्ती की निशानी है

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तालीम यह है कि छींकने वाला "अल्हम्दु लिल्लाह" कहे और इसके ज़रिये अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करे। वैसे तो हर काम में अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा होना चाहिये लैकिन हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद

फ़रमाया कि:

तर्जुमाः यानी "जमाई" शैतानी असरात लिए हुए होती है और छींक अल्लाह तआ़ला की रहमत का एक हिस्सा है।

वजह इसकी यह है कि जमाई सुस्ती के समय आती है और इस बात की निशानी होती है कि उसको सुस्ती आ रही है और सुस्ती शैतानी असरात लिये हुए होती है जो इनसान को भलाई से, नेक कामों से और अ़मल के सही तरीक़े से रोकती है। अगर इनसान इस सुस्ती पर अ़मल करता चला जाए तो आख़िरकार वह हर तरह की भलाई से मेहरूम हो जाता है। इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तालीम यह है कि इस सुस्ती को दूर करो, काहिली को दूर करो और जिस ख़ैर के काम में सुस्ती आ रही है, उस सुस्ती का मुक़ाबला करके वह ख़ैर का काम कर गुज़रो।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का आ़जिज़ी और सुस्ती से पनाह माँगना

इसी लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह दुआ़ फ़रमाई है कि:

अल्लाहुम्-म इन्नी अऊ़ज़ु बि-क मिनल् इज्ज़ि वल् कस्लि

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आ़जिज़ी और सुस्ती से आपकी पनाह माँगता हूँ।

इसलिए कि यह सुस्ती बहुत ख़राब चीज़ है। इससे बचना चाहिये और अगर किसी को सुस्ती होती हो तो उसका इसके अ़लावा कोई इलाज नहीं कि उस सुस्ती का मुक़ाबला करे। जैसे सुस्ती की वजह से दिल चाह रहा है कि घर में पड़ा रहूँ और काम पर न जाऊँ तो उसका इलाज यह है कि ज़बरदस्ती करके खड़ा हो जाए और सुस्ती का मुक़ाबला करे। और "जमाई" इस सुस्ती की अ़लामत (निशानी) है। इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि "जमाई" शैतानी असरात को लिए हुए होती है।

छींक अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से है

और छींक के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि यह छींक "रहमान" की तरफ़ से है। यानी अल्लाह तआ़ला की रहमत का एक निशान और सबब है। एक छींक वह होती है जो नज़ले-जुकाम की वजह से आनी शुरू हो जाती है और लगातार आती चली जाती है। यह तो बीमारी है। लेकिन अगर एक आदमी सेहतमन्द है और नज़ले-जुकाम की कोई बीमारी नहीं है, इसके बावजूद उसको छींक आ रही है तो उसके बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि यह रहमान की तरफ़ से रहमत की निशानी है। चुनाँचे डॉक्टरों ने लिखा है कि कभी-कभी इनसान के जिस्म पर किसी बीमारी का हमला होने वाला होता है तो छींक उस हमले को रोक देती है। इस तरह यह छींक अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से रहमत की एक निशानी है।

यह तो ज़ाहिरी रहमत है वरना इसके अन्दर जो बातिनी रहमतें हैं वे तो अल्लाह तआ़ला ही जानते हैं। चूँकि छींक अल्लाह तआ़ला की रहमत के उनवान में से एक उनवान है इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब किसी को छींक आए तो "अल्हम्दु लिल्लाह" कहे और अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करे।

अल्लाह तआ़ला को मत भूलो

इन हुक्मों के ज़रिये क़दम-क़दम पर यह सिखाया जा रहा है कि अल्लाह तआ़ला को मत भूलो और अल्लाह तआ़ला की तरफ़ हर मौक़े पर रुजू करो और हर-हर मौक़े पर यह कहा जा रहा है कि इस वक़्त यह पढ़ लो, इस वक़्त यह पढ़ लो। यह सब इसलिए कहा जा रहा है ताकि हमारी ज़िन्दगी का हर लम्हा अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र से भरा हुआ हो जाए और हर बदलाव के वक़्त अल्लाह तआ़ला की तरफ़ रुजू करने की आ़दत पड़ जाए। सारी इबादतों, सारी परहेज़गारी, सारे मुजाहदों, सारी रियाज़तों और सारे तसव्वुफ़ और सुलूक का हासिल यह है कि अल्लाह

तआ़ला की तरफ़ रुजू करने की आ़दत पड़ जाए और जिससे अल्लाह तआ़ला का ताल्लुक़ हासिल हो जाए। इस अल्लाह की तरफ़ रुजू करने की आ़दत डालने के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह तरह-तरह के तरीक़े तलक़ीन फ़रमाए (यानी सिखलाए) हैं जैसे यह कि छींक आए तो फ़ौरन कहो अल्हम्दु लिल्लाह।

यह सुन्नत छूटती जा रही है

एक ज़माना वह था जब यह बात मुसलमानों की तहज़ीब में दाख़िल थी और इसको सिखाने और बताने की ज़रूरत नहीं पड़ती थी और उस वक़्त इस बात का तसव्वुर भी नहीं था कि अगर किसी मुसलमान को छींक आएगी तो वह अल्हम्दु लिल्लाह नहीं कहेगा। बचपन से तरबियत ऐसी की जाती थी कि उसके ख़िलाफ़ होता ही नहीं था। लेकिन अब हर चीज़ मिटती जा रही है तो इसके साथ-साथ यह सुन्नत भी मुर्दा होती जा रही है। इस सुन्नत को ज़िन्दा करने की ज़रूरत है इसलिए जब छींक आए तो फ़ौरन कहो "अल्हम्दु लिल्लाह"।

छींकने वाले का जवाब देना वाजिब है

फिर दूसरा मर्हला यह है कि जो शख़्स छींकने वाले के पास बैठा है और उसने यह सुना कि छींकने वाले ने अल्हम्दु लिल्लाह कहा तो उस सुनने वाले पर शरीअ़त की तरफ़ से वाजिब है कि जवाब में यर्हमुकल्लाहु कहे। इसी का नाम "तश्मीत" है और यह जवाब देना सिर्फ़ सुन्नत या मुस्तहब नहीं बल्कि वाजिब है। लिहाज़ा अगर कोई शख़्स "यर्हमुकल्लाहु" के ज़रिये जवाब नहीं देगा तो उसको वाजिब के छोड़ने का गुनाह होगा। अलबत्ता यह उस समय वाजिब है कि छींकने वाले ने "अल्हम्दु लिल्लाह" कहा हो। और अगर छींकने वाले ने "अल्हम्दु लिल्लाह" नहीं कहा तो फिर सुनने वाले पर "यर्हमुकल्लाहु" कहना वाजिब नहीं।

अलबत्ता वाजिब अ़लल्-किफ़ाया है

अलबत्ता अल्लाह तआ़ला ने इसमें इतनी आसानी फ़रमा दी है कि

इसको 'वाजिब अ़लल्-किफ़ाया' करार दिया है यानी 'वाजिब अ़लल्-ऐन' नहीं है कि हर सुनने वाले पर जवाब देना ज़रूरी हो, बल्कि अगर सुनने वाले दस लोग हैं और उनमें से एक ने "यर्हमुकल्लाहु" कह दिया तो सब की तरफ़ से वाजिब अदा हो गया। लेकिन सारी मजलिस में से किसी एक आदमी ने भी "यर्हमुकल्लाहु" नहीं कहा तो तमाम लोग वाजिब छोड़ देने की वजह से गुनाहगार होंगे।

'फ़र्ज़े-ऐन' और 'फ़र्ज़े-किफ़ाया' का मतलब

ये सब इस्तिलाहें (परिभाषायें) भी जानने की हैं और सीखनी चहियें। देखिए एक है "फ़र्ज़े-ऐन" इसका मतलब यह है कि वह काम हर एक आदमी पर फ़र्ज़ है जैसे नमाज़ हर आदमी पर अलग-अलग फ़र्ज़ है। एक की नमाज़ से दूसरे की नमाज़ अदा नहीं होती। इसको फ़र्ज़े-ऐन कहा जाता है। दूसरा है "फ़र्ज़े-किफ़ाया" इसका मतलब यह है कि अगर बहुत-से लोग हैं और एक दो लोगों ने भी वह काम कर लिया तो सब की तरफ़ से वह फ़रीज़ा अदा हो जाएगा जैसे नमाज़े जनाज़ा "फ़र्ज़े किफ़ाया" है। अगर कुछ लोग भी नमाज़े जनाज़ा अदा कर लें तो सबकी तरफ़ से वह फ़र्ज़ अदा हो जाएगा। लेकिन अगर कोई भी नहीं पढ़ेगा तो सब गुनाहगार होंगे।

सुन्नत अ़लल्-किफ़ाया

जैसे रमज़ान के आख़िरी अ़शरे (दशक) में एतिकाफ़ करना "सुन्नते मुअक्कदा अ़लल्-किफ़ाया" है। यानी अगर मौहल्ले में से कोई एक शख़्स भी मस्जिद में जाकर एतिकाफ़ में बैठ गया तो तमाम मौहल्ले वालों की तरफ़ से वह सुन्नत अदा हो जाएगी। लेकिन अगर एक शख़्स भी एतिकाफ़ में नहीं बैठा तो सारे मौहल्ले वाले सुन्नते मुअक्कदा को छोड़ देने के गुनाहगार होंगे। इसी तरह छींकने वाले का जवाब देना "वाजिब अ़लल्-किफ़ाया" है। यानी अगर मजलिस में से एक शख़्स ने भी जवाब दे दिया तो सबकी तरफ़ से वाजिब अदा हो गया लेकिन अगर किसी ने भी जवाब न दिया तो सब के सब वाजिब के छोड़ देने के गुनाहगार होंगे।

यह मुसलमान का एक हक़ है

हम लोग ज़रा जायज़ा लें कि अपनी रोज़ाना की ज़िन्दगी में इस वाजिब से कितनी लापरवाही बरतते हैं। अव्वल तो छींकने वाला "अल्हम्दु लिल्लाह" नहीं कहता, और अगर वह अल्हम्दु लिल्लाह कहे तो सुनने वाले पर "यर्हमुकल्लाहु" के ज़रिये जवाब देने का इतना एहतिमाम नहीं करते जितना एहतिमाम करना चाहिये। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इस हदीस के ज़रिये यह बता रहे हैं कि "तश्मीत" करना (यानी छींक का जवाब देना) एक मुसलमान का दूसरे मुसलमान पर हक़ है और उसके ज़िम्मे वाजिब है।

कितनी बार जवाब देना चाहिये?

अलबत्ता जैसा कि अभी बतलाया कि इसमें अल्लाह तआ़ला ने आसानी यह फ़रमा दी है कि एक तो इस हक़ को "वाजिब अ़लल्-किफ़ाया" क़रार दिया, दूसरे यह कि कभी-कभी यह होता है कि एक आदमी को लगातार छींकें आ रही हैं और वह लगातार अल्हम्दु लिल्लाह कह रहा है और सुनने वाला लगातार "यर्हमुकल्लाहु" कहता जा रहा है। इसका मतलब यह है कि अब वह दूसरे सब काम छोड़कर बस यही करता रहे। तो इसके बारे में भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह अदब बता दिया कि अगर एक बार छींक आए तो जवाब देना वाजिब है और दूसरी बार छींक आए तो जवाब देना सुन्नत है और तीसरी बार जवाब देना भी सुन्नत है और अज्र व सवाब का सबब है। उसके बाद अगर छींक आए तो जवाब न तो वाजिब है न सुन्नत है। अलबत्ता अगर कोई शख़्स जवाब देना चाहे तो जवाब दे दे। इन्शा-अल्लाह उस पर भी सवाब मिलेगा।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का तरीक़ा

हदीस शरीफ़ में आता है कि एक मजलिस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तशरीफ़ रखते थे। एक सहाबी को छींक आई। उन्होंने अल्हम्दु

लिल्लाह कहा। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जवाब में "यर्हमुकल्लाहु" फ़रमाया। दूसरी बार फिर छींक आई आपने फिर जवाब दिया "यर्हमुकल्लाहु"। तीसरी बार फिर छींक आई आपने तीसरी बार जवाब दिया "यर्हमुकल्लाहु"। जब चौथी बार उनको छींक आई तो आपने इरशाद फ़रमाया "रजुलुम् मज़कूम" यानी इन साहिब को जुकाम है, और इस बार आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जवाब नहीं दिया। (तिर्मिज़ी)

इस हदीस के ज़रिये आपने यह मसला बता दिया कि तीसरी बार के बाद जवाब देने की ज़रूरत नहीं। देखिये! शरीअ़त ने हमारी और आपकी सहूलियत के लिए किन-किन बारीकियों की रियायत फ़रमाई है ताकि यह न हो कि आदमी बस उसी काम में लगा रहे और दूसरे ज़रूरी काम छोड़ बैठे।

यह जवाब देना कब वाजिब है?

दूसरा मसला यह है कि "यर्हमुकल्लाहु" के ज़रिये जवाब देना उस वक़्त वाजिब है जब छींकने वाला "अल्हम्दु लिल्लाह" कहे। अगर छींकने वाले ने "अल्हम्दु लिल्लाह" नहीं कहा तो उसका जवाब देना वाजिब नहीं। लेकिन जवाब देना अच्छा है ताकि छींकने वाले को तंबीह हो जाए कि मुझे "अल्हम्दु लिल्लाह" कहना चाहिये था।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का जवाब न देना

हदीस शरीफ़ में आता है कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मजलिस में तशरीफ़ फ़रमा थे। एक सहाबी को छींक आई उन्होंने "अल्हम्दु लिल्लाह" कहा। आपने जवाब में "यर्हमुकल्लाहु" फ़रमाया। थोड़ी देर के बाद एक और सहाबी को छींक आई लेकिन उन्होंने "अल्हम्दु लिल्लाह" नहीं कहा, आप सल्ल० ने "यर्हमुकल्लाह" भी नहीं कहा। उन सहाबी रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! इन साहिब को थोड़ी देर पहले छींक आई थी तो आपने इनको "यर्हमुकल्लाहु" के ज़रिये दुआ़ दे दी थी और अब मुझे

छींक आई तो आपने मुझे दुआ नहीं दी। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जवाब दिया कि इन सहाबी ने "अल्हम्दु लिल्लाह" कहकर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा किया था इसलिए मैंने इनको जवाब में "यर्हमुकल्लाहु" कहा, तुमने "अल्हम्दु लिल्लाह" नहीं कहा इसलिए मैंने जवाब में "यर्हमुकल्लाहु" नहीं कहा।

इस हदीस से मालूम हुआ कि "यर्हमुकल्लाहु" के ज़रिये जवाब देना उस समय ज़रूरी है जब छींकने वाला अल्हम्दु लिल्लाह कहे। (तिर्मिज़ी)

छींकने वाला भी दुआ़ दे

फिर तीसरी बात यह है कि जब अल्हम्दु लिल्लाह के जवाब में सुनने वाले ने यर्हमुकल्लाहु कहा तो अब छींकने वाले को चाहिये कि वह "यहदीकुमुल्लाहु" कहे। और एक रिवायत में आता है कि वह "यहदीकुमुल्लाहु व युस्लिहु बालकुम" कहे। इसलिए कि जब सुनने वाले ने यह दुआ़ दी कि अल्लाह तआ़ला तुम पर रहम करे तो अब जवाब में छींकने वाला उसको यह दुआ़ दे कि अल्लाह तआ़ला तुमको हिदायत अ़ता फ़रमाए और तुम्हारे सब काम ठीक कर दे।

इन अहकाम के ज़रिये छोटी-छोटी बातों पर एक-दूसरे को दुआ़ देने की आ़दत डाली जा रही है। क्योंकि जब एक मोमिन दूसरे मोमिन के लिए दुआ़ करता है तो उस दुआ़ के क़बूल होने की बहुत उम्मीद होती है इसलिए फ़रमाया गया कि दूसरों के लिए दुआ़ किया करो। (तिर्मिज़ी)

एक छींक पर तीन बार ज़िक्र

देखिए! छींक एक बार आई लेकिन उसमें तीन बार अल्लाह का ज़िक्र हो गया। तीन बार अल्लाह तआ़ला की तरफ़ रुजू हो गया और तीन दुआ़एँ हो गईं और दो मुसलमानों के बीच आपस में दुआ़ओं का तबादला हुआ और इस तबादले के नतीजे में एक-दूसरे से हमदर्दी और ख़ैरख़्वाही करने का सवाब भी मिला और अल्लाह तआ़ला के साथ ताल्लुक़ भी क़ायम हो गया। यह वह नुस्ख़ा-ए-कीमिया है जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि

व सल्लम बयान करके तशरीफ़ ले गये।

बहरहाल! "तश्मीत" करना (यानी अगर छींकने वाला अल्हम्दु लिल्लाह कहे तो सुनने वाले को यर्हमुकल्लाहु कहना) एक मुसलमान का दूसरे मुसलमान पर हक़ है और वाजिब है।

कमज़ोर और मज़लूम की मदद करना

एक मुसलमान का दूसरे मुसलमान पर पाँचवाँ हक़ यह बयान फ़रमाया "नस्रुज़्ज़ईफ़" यानी कमज़ोर की मदद करना। इसी के साथ छठा हक़ यह बयान फ़रमाया "औनुल् मज़लूम" यानी मज़लूम की मदद करना। यानी जो शख़्स किसी ज़ुल्म का शिकार है उससे ज़ुल्म दूर करने के लिए उसकी मदद करना भी एक मोमिन का दूसरे मोमिन पर हक़ है। और यह कि इनसान के अन्दर जितनी हिम्मत हो उस हिम्मत की हद तक दूसरे मुसलमान की मदद करना ज़रूरी है। अगर एक मोमिन ताक़त के बावजूद दूसरे मोमिन को ज़ुल्म से न बचाए या उसकी मदद न करे तो वह गुनाहगार होगा।

मज़लूम की मदद वाजिब है

एक हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः यानी एक मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है। न वह खुद उस पर ज़ुल्म करता है और न उसको बेसहारा और बे-मददगार छोड़ता है। (अबू दाऊद, किताबुल अदब)

यानी अगर कोई शख़्स किसी मुसलमान पर ज़ुल्म कर रहा है और तुम उसको रोक सकते हो तो ऐसे मौक़े पर उसको बेसहारा छोड़ना जायज़ नहीं, बल्कि उसकी मदद करना ज़रूरी है।

वरना अल्लाह तआ़ला का अ़ज़ाब आ जाएगा

बल्कि एक हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बड़ी सख़्त बात फ़रमाई कि अगर कुछ लोग यह देख रहे हों कि कोई शख़्स किसी मुसलमान पर ज़ुल्म कर रहा है, चाहे वह ज़ुल्म जानी हो या माली हो,

और उनको उस ज़ालिम का हाथ पकड़ने की और उस शख़्स को ज़ुल्म से बचाने की ताक़त हो, फिर भी वे उस ज़ालिम का हाथ न पकड़ें और उसको ज़ुल्म से न बचाएँ तो क़रीब है कि अल्लाह तआला ऐसे लोगों पर अपना अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमा दे।

अ़ज़ाब की मुख़्तलिफ़ शक्लें

फिर यह ज़रूरी नहीं कि वह अ़ज़ाब उसी तरह का हो जैसे पिछली उम्मतों पर अ़ज़ाब आए। जैसे आसमान से अंगारे बरसें या तूफ़ान आ जाए या हवा के झक्कड़ चल पड़ें, बल्कि अल्लाह तआला के अ़ज़ाब की शक्लें मुख़्तलिफ़ होती हैं। अल्लाह तआला हमें अपने अ़ज़ाब व गुस्से से महफ़ूज़ रखे। आमीन।

हम दिन रात जो देख रहे हैं कि डाके पड़ रहे हैं, चोरियाँ हो रही हैं, बद-अमनी और बेचैनी का दौर-दौरा है। किसी शख़्स की जान किसी का माल किसी की इ़ज़्ज़त और आबरू महफ़ूज़ नहीं। हर शख़्स बेचैनी और बेइत्मीनानी का शिकार है। ये सब अल्लाह के अ़ज़ाब की निशानियाँ हैं। ये सब अ़ज़ाब की मुख़्तलिफ़ (विभिन्न) शक्लें हैं। अब तो यह दौर आ गया है कि अपनी आँखों से एक इनसान पर ज़ुल्म होता देख रहे हैं और उसको ज़ुल्म से बचाने की ताक़त भी है, लेकिन इसके बावजूद उसको ज़ुल्म से बचाने की तवज्जोह नहीं है।

उपकरण मुरव्वत के एहसास को कुचल देते हैं

ख़ास तौर पर जब से हमारे यहाँ पश्चिमी सभ्यता का सैलाब उमड़ आया है और लोगों के पास दौलत आ गई है तो इस दौलत ने लोगों को इस तरह अन्धा कर दिया है कि मुरव्वत, इनसानियत, शराफ़त सब कुचल कर रह गया है। अ़ल्लामा इक़बाल मरहूम ने कहा था कि:

है दिल के लिए मौत मशीनों की हुकूमत
एहसासे मुरव्वत को कुचल देते हैं 'आलात'

लिहाज़ा इन जदीद आलात (नये उपकरणों) ने मुरव्वत के एहसास को

कुचल दिया है।

एक इब्रतनाक वाक़िआ

एक बार मैंने खुद अपनी आँखों से देखा कि एक बहुत शानदार कार सड़क पर गुज़री जिसमें कोई साहिब बहादुर बैठे थे और उस कार ने एक राहगीर को टक्कर मारी। वह सड़क पर गिरा और उसके जिस्म से ख़ून बहने लगा। मगर उन साहिब बहादुर को यह तौफ़ीक़ नहीं हुई कि कार रोक कर देख लें कि कितनी चोट आई। सिर्फ़ इतना हुआ कि उसने खिड़की से झाँक कर देखा कि एक शख़्स ज़मीन पर गिरा हुआ है, बस यह देखकर वह रवाना हो गया।

वजह यह है कि इस दौलत ने और पश्चिमी सभ्यता ने हमें इस दर्जे पर पहुँचा दिया कि किसी आदमी की जान मक्खी और मच्छर से ज़्यादा बे-वक़अत होकर रह गयी है। आज का इनसान, इनसान नहीं रहा।

मुसलमान की मदद करने की फ़ज़ीलत

हक़ीक़त यह है कि इनसान उस समय तक इनसान नहीं बन सकता जब तक वह मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत पर अ़मल न करे। आपकी सुन्नत यह है कि आदमी कमज़ोर की मदद करे और मज़लूम का साथ दे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इसकी बड़ी फ़ज़ीलत भी इरशाद फ़रमाई है कि:

तर्जुमाः यानी जब तक मुसलमान किसी मामले में अपने भाई की मदद करता रहता है तो अल्लाह तआ़ला भी उसकी मदद करता रहता है और उसके काम बनाता रहता है। (मुस्नद अहमद, जिल्द 2 पेज 274)

ज़मीन वालों पर रहम करो, आसमान वाला तुम पर रहम करेगा

एक हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बड़ा अच्छा इरशाद फ़रमाया। इस हदीस के बारे में मुहद्दिसीन के यहाँ यह तरीक़ा चला आ रहा है कि जब भी कोई तालिब इल्म (दीन का इल्म हासिल

करने वाला) किसी मुहद्दिस (हदीस बयान करने वाले) के पास हदीस पढ़ने जाता है तो उस्ताद उस तालिब इल्म को सबसे पहले यह हदीस सुनाते हैं। वह हदीस यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः रहम करने वालों पर "रहमान" रहम करता है। तुम ज़मीन वालों पर रहम करो, आसमान वाला तुम पर रहम करेगा। (अबू दाऊद)

और जो आदमी ज़मीन वालों पर रहम करना नहीं जानता उसको आसमान वाले से भी रहमत की उम्मीद मुश्किल है।

बहरहाल! कमज़ोर की मदद करना और मज़लूम का साथ देना इस्लामी तालीमात का शिआ़र और तरीक़ा है।

क़सम खाने वाले की मदद करना

एक मुसलमान के दूसरे मुसलमान पर जो हुक़ूक़ हैं उनमें से सातवाँ हक़ जो हदीस में बयान फ़रमाया वह है "इब्रारुल् मुक़्सिमि"। इसका मतलब यह है कि अगर किसी मुसलमान ने कोई क़सम खा ली है और अब वह उस क़सम को पूरा करने की ताक़त नहीं रखता है तो ऐसे मुसलमान की मदद करना ताकि वह अपनी क़सम पूरी कर ले। यह भी मुसलमान के हुक़ूक़ में दाख़िल है।

अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत से इन बातों पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

खुश-मिज़ाजी
से मिलना सुन्नत है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَنَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا ٥ اَمَّا بَعْدُ!

عن عطاء بن يسار رحمه الله تعالىٰ قال: لقيت عبد الله بن عمرو بن العاص رضى الله عنه، فقلت اخبرنى عن صفة رسول الله صلى الله عليه وسلم فى التوراة. قال أجل والله إنه لموصوف فى التوراة ببعض صفته فى القران ياايها النبى انا ارسلنٰك شاهدًا ومبشرًا و نذيرًا و حرزًا للأميين أنت عبدى ورسولى سميتُك المتوكل ليس بفظ ولا غليظ ولا سخّاب فى الأسواق ولا يدفع السيئة بالسيئة ولكن يعفو و يصفح ولن يقبض الله تعالىٰ حتى يقيم به الملة العوجاء بان يقولوا لا اله الاالله فيفتح بها اعينًا عميا و آذانًا صمًا و قلوبًا غلفًا. (بخارى، كتاب التفسير)

खिले हुए चेहरे से पेश आना खुदा की मख़्लूक़ का हक़ है

यह एक लम्बी हदीस है और इस पर इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि ने "बाबुल इम्बिसात इलन्नास" का उनवान क़ायम फ़रमाया है। यानी लोगों के साथ खुश-मिज़ाजी और खिले हुए चेहरे से पेश आना और लोगों में घुले-मिले रहना।

यह किताब इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने "अल्-अदबुल् मुफ़रद" के नाम से लिखी है और इसमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की वे हदीसें जमा की हैं जो ज़िन्दगी के विभिन्न शोबों (क्षेत्रों) में इस्लामी आदाब के बारे में हैं। और उन आदाब की आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपनी करनी और कथनी से तालीम फ़रमाई है। उनमें से एक अदब और एक सुन्नत यह है कि मख़्लूक़ के साथ घुले-मिले रहो और उनके साथ खिले चेहरे से पेश आओ।

और यह अल्लाह की मख़्लूक़ का हक़ है कि जब अल्लाह के किसी बन्दे से मुलाक़ात हो तो उससे आदमी ख़न्दा-पेशानी (हंसते चेहरे) से मिले। अपने आपको तकल्लुफ़ वाला और सख़्त-मिज़ाज न बनाए कि लोग क़रीब आते हुए डरें, चाहे अल्लाह तआ़ला ने दीन का या दुनिया का बड़े से बड़ा मुक़ाम या ओ़हदा अ़ता फ़रमाया हो। वह उस मुक़ाम की वजह से अपने आपको लोगों से कटकर सख़्त-मिज़ाज बनकर न बैठे, बल्कि घुला-मिला रहे। यह अम्बिया-ए-किराम अ़लैहिमुस्सलाम की सुन्नत है।

नबी करीम की इस सुन्नत पर काफ़िरों का एतिराज़

बल्कि यह वह सुन्नत है जिस पर कुछ काफ़िरों ने एतिराज़ किया था। क़ुरआन पाक में आता है कि:

तर्जुमाः और कुफ़्फ़ार कहते हैं कि यह कैसा रसूल है जो खाना भी खाता है और बाज़ारों में भी फिरता है। (सूरः फ़ुरक़ान आयत 6)

काफ़िर लोग समझते थे कि बाज़ारों में फिरना पैग़म्बरी के ओ़हदे और मुक़ाम के ख़िलाफ़ है। यह इस वजह से समझते थे कि उन्होंने अपने बादशाहों और सरदारों को देखा था कि जब वे बादशाहत के पद पर पदासीन हो जाते थे तो जनता से कटकर बैठ जाते थे। आ़म आदमी की तरह बाज़ारों में नहीं आते थे बल्कि ख़ास शाहाना ठाट-बाट से आते थे। तो वे यह समझते थे कि पैग़म्बरी तो इतना बड़ा और ऊँचा मुक़ाम है कि बादशाहत तो उसके मुक़ाबले में कुछ भी नहीं है।

लेकिन क़ुरआन करीम ने उनके इस बातिल और ग़लत ख़्याल की

तरदीद की इसलिए कि पैग़म्बर तो आते ही तुम्हारे सुधार के लिए हैं। इसलिए दुनिया का भी हर काम आम इनसानों में घुल-मिलकर के दिखाते हैं और उसके आदाब और उसकी शर्तें बताते हैं, न यह कि अपने आप को अवाम से काटकर एक तरफ़ बैठ जाते हैं। इसलिए पैग़म्बरों का बाज़ारों में चलना-फिरना और मिलनसार होना कोई ऐब की बात नहीं।

हज़रत हकीमुल उम्मत मौलाना अशरफ़ अली थानवी फ़रमाते हैं कि जो शख़्स मुक़्तदा (मुक़्तदा का मतलब होता है जिसको देखकर लोग पैरवी करते हों) बनने के बाद लोगों से कटकर बैठ गया और अपनी शान बना ली तो उसको इस रास्ते (यानी दीनी काम) की हवा भी नहीं लगी।

फ़रमाया कि एक आम आदमी की तरह रहो, जिस तरह नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रहा करते थे।

मिलनसारी का निराला अन्दाज़

शमाइले तिर्मिज़ी में रिवायत है कि:

तर्जुमाः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक बार मदीना मुनव्वरा के बाज़ार मुनाक़ा (मुनाक़ा बाज़ार मदीना मुनव्वरा का एक बाज़ार था जो अब हरम शरीफ़ विस्तार वाले हिस्से में शामिल हो गया है। मैंने भी किसी ज़माने में उसके दर्शन किए थे) में तशरीफ़ ले गये। वहाँ एक देहाती थे हज़रत ज़ाहिद रज़ियल्लाहु अन्हु। देहात से सामान लाकर शहर में बेचा करते थे। स्याह रंग था और ग़रीब आदमी थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनसे बहुत मुहब्बत फ़रमाया करते थे।

एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चुपके से उनके पीछे गये और उन्हें अपनी बाँहों में भर लिया और उनको पीछे से कमर से पकड़ लिया, फिर आवाज़ लगाई कि "कौन है जो मुझसे यह ग़ुलाम ख़रीदेगा?" आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मज़ाक़ किया। जब हज़रत ज़ाहिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने आवाज़ पहचान ली तो उनकी ख़ुशी की इन्तिहा न रही। वह फ़रमाते हैं कि मैंने अपनी पीठ नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पाक जिस्म के साथ और मिलाने की कोशिश की और मैंने

कहा या रसूलल्लाह! अगर आप इस ग़ुलाम को बेचेंगे तो बहुत कम पैसे मिलेंगे इसलिए कि काले रंग का है और मामूली दर्जे का आदमी है। सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि नहीं ऐ ज़ाहिद! अल्लाह के यहाँ तुम्हारी क़ीमत बहुत ज़्यादा है।

इस वाक़िए से अन्दाज़ा लगाएँ कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बाज़ार में तशरीफ़ लेजा रहे हैं और किस तरह एक मामूली दर्जे के आदमी के साथ मज़ाक़ फ़रमा रहे हैं। देखने वाला यह अन्दाज़ा लगा सकता है कि यह कितने ऊँचे दर्जे के पैग़म्बर हैं कि जिनके सामने जिब्राईल अमीन के भी पर जलते हैं। आप पर लाखों सलाम हों।

पाकिस्तान के सबसे बड़े मुफ़्ती हैं या आम राहगीर

मेरे शैख़ हज़रत डॉक्टर अब्दुल हई साहिब अल्लाह तआला उनके दर्जात बुलन्द फ़रमाए, आमीन। फ़रमाते हैं कि एक बार मैं अपने क्लीनिक में बैठा हुआ था (हज़रत का क्लीनिक उस वक़्त ब्रन्स रोड पर होता था और हमारा घर भी उस ज़माने में उसके क़रीब ही हुआ करता था) देखा कि क्लीनिक के सामने फ़ुटपाथ पर मुफ़्ती-ए-आज़म पाकिस्तान हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि हाथ में पतीली लिए हुए एक आम आदमी की तरह जा रहे हैं। फ़रमाते हैं कि मैं यह देखकर हैरान रह गया कि पाकिस्तान के सबसे बड़े मुफ़्ती, पूरी दुनिया में जिसके इल्म और परहेज़गारी के गुण गाये जाते हैं, वह इस तरह एक आम आदमी की तरह हाथ में पतीली लेकर फिर रहा है। मैंने अपने साथियों से कहा कि क्या इनको देखकर कोई पहचान सकता है कि यह मुफ़्ती-ए-आज़म पाकिस्तान (यानी पाकिस्तान के सबसे बड़े मुफ़्ती) हैं?

फिर हज़रत डॉक्टर साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया कि जिस शख़्स को अल्लाह तआला अपने साथ ख़ास ताल्लुक़ अता फ़रमा देते हैं वह अपने आपको आम मुसलमानों के साथ इस तरह घुला-मिलाकर रखता है कि किसी को मालूम भी नहीं होता कि यह किस मुक़ाम के आदमी हैं।

और यही सुन्नत है जनाब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की। न यह कि आदमी अपनी शान बनाकर रखे और लोगों के साथ मामलात करने में तकल्लुफ़ से काम ले।

मस्जिदे नबवी से मस्जिदे कुबा की तरफ़ आ़मियाना चाल

एक बार जनाब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मस्जिदे नबवी से पैदल चलकर ऐसे ही दोस्ताना मुलाक़ात के लिए हज़रत अ़तबान बिन मालिक रज़ियल्लाहु अ़न्हु के पास तशरीफ़ ले गये जो मस्जिदे कुबा के क़रीब रहते थे। तक़रीबन तीन मील का फ़ासला है। उनके घर के दरवाज़े पर जाकर तीन दफ़ा आवाज़ दी, शायद वह सहाबी किसी ऐसी हालत में थे कि जवाब नहीं दे सकते थे, तो कुरआन पाक के हुक्म के अनुसारः

तर्जुमाः जब तुम से कहा जाए कि वापस चले जाओ तो वापस हो जाओ। (सूरः नूर आयत 28)

चुनाँचे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वापस मस्जिदे नबवी तशरीफ़ ले आए। कोई नागवारी का इज़हार नहीं फ़रमाया। दोस्त से मिलने गये थे, अपनी तरफ़ से दोस्ती का हक़ अदा किया, नहीं हुई मुलाक़ात, वापस तशरीफ़ ले आए।

बाद में हज़रत अ़तबान बिन मालिक रज़ियल्लाहु अ़न्हु को मालूम हुआ तो वह दौड़ते हुए आए और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से मिले और फ़िदा होने लगे कि मेरी क्या हैसियत कि आप मेरे दर पर तशरीफ़ लाए।

शायद यह ज़्यादा मुश्किल सुन्नत हो

वैसे तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सारी सुन्नतें ऐसी हैं कि हर सुन्नत पर इनसान कुरबान हो जाए लेकिन एक सुन्नत तिर्मिज़ी शरीफ़ की एक रिवायत में आई है। मैं समझता हूँ कि शायद इस पर अ़मल करना ज़्यादा मुश्किल काम है। लेकिन सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का मामूल था।

रिवायत में आता है कि सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कोई बात करता तो आप उस समय तक उससे चेहरा नहीं फेरते थे जब तक कि वह ख़ुद ही न चेहरा फेर ले। अपनी तरफ़ से बात काटते नहीं थे।

कहने को आसान बात है। इसका अन्दाज़ा उस समय होता है जब सैकड़ों आदमी रुजू करते हों। कोई मसला पूछ रहा है। कोई अपनी मुश्किल बयान कर रहा है, तो आदमी का दिल चाहता है कि मैं जल्दी-जल्दी उससे निमट जाऊँ।

और कुछ लोग ऐसे होते हैं कि जब वे बोलने पर आ जाएँ तो रुकने का नाम ही नहीं लेते, उनके साथ यह मामला करना कि जब तक वे न रुक जाएँ उस समय तक उनसे न हटें, यह बहुत ज़्यादा मुश्किल काम है।

लेकिन जनाब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जो जिहाद में मशग़ूल हैं, तबलीग़ में व्यस्त हैं, तालीम में भी व्यस्त हैं। जो पूरी दुनिया की इस्लाह के लिए भेजे गये हैं। एक बुढ़िया भी रास्ते में पकड़ कर खड़ी हो जाती है तो उस समय तक उससे नहीं फिरते जब तक कि पूरी तरह उसको सन्तुष्ट नहीं कर देते।

मख़्लूक़ से मुहब्बत करना हक़ीक़त में अल्लाह से मुहब्बत करना है

यह सिफ़त इनसान के अन्दर उस समय पैदा हो सकती है कि जब मख़्लूक़ के साथ इस वजह से मुहब्बत हो कि यह मेरे अल्लाह तआला की मख़्लूक़ है।

हमारे हज़रत डॉक्टर अब्दुल हई साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाया करते थे कि अगर तुम्हें अल्लाह तआला से मुहब्बत है तो तुम अल्लाह तआला से क्या मुहब्बत करोगे। अल्लाह तआला की ज़ात को न देखा, न समझा, न उसको तुम तसव्वुर में ला सकते हो।

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि अगर मुझसे मुहब्बत है तो मेरी

मख़्लूक़ से मुहब्बत करो और मेरी मख़्लूक़ के साथ अच्छा सुलूक करो, तो अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत का एक अ़क्स तुम्हारी ज़िन्दगी में आएगा। यह कोई मामूली बात नहीं है। इसी लिए इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अ़लैहि यह बाब क़ायम कर रहे हैं "बाबुल् इम्बिसाति इलन्नास" कि लोगों के साथ हंसते-खिलते चेहरे के साथ पेश आना, और उनके साथ घुला-मिला रहना। और इस तरह रहना जैसे एक आ़म आदमी होता है। यानी अपना कोई इम्तियाज़ और शान पैदा न करना। यह मक़सूद है इस बाब का। इसमें हदीस नक़ल की है हज़रत अ़ता बिन यसार ताबिई रहमतुल्लाहि अ़लैहि की। वह कहते हैं कि मेरी मुलाक़ात हुई हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर बिन आ़स रज़ियल्लाहु अ़न्हु से।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर बिन आ़स की नुमायाँ ख़ुसूसियात

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के मशहूर सहाबी हैं और उन सहाबा किराम में से हैं जो अपनी इबादत की कसरत (अधिकता) में मशहूर थे। बहुत आ़बिद व ज़ाहिद बुज़ुर्ग थे, और उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से हदीसें भी काफ़ी तायदाद में नक़ल की हैं।

एक ख़ुसूसियत उनकी यह है कि उन्होंने तौरात, ज़बूर, इन्जील का इल्म भी किसी ज़रिये से हासिल किया हुआ था। हालाँकि ये किताबें ऐसी हैं कि यहूदियों और ईसाइयों ने उनमें बहुत कुछ तहरीफ़ें (कमी-बेशी और तब्दीलियाँ) कर दी हैं और अपनी असली हालत में बरक़रार नहीं हैं, लेकिन इसके बावजूद उनको इस नज़रिये (दृटिकोण) से पढ़ना ताकि उनकी सच्चाई मालूम हो और यहूदियों और ईसाइयों को तब्लीग़ करने में मदद मिले, तो पढ़ने की इजाज़त है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने कुछ तौरात यहूदियों से पढ़ी हुई थी।

तौरात में अब भी किताबुल्लाह का नूर झलकता है

तौरात अगरचे मुकम्मल तौर पर पहले की तरह नहीं है। यहूदियों ने उसमें बहुत ज़्यादा बदलाव कर दिया है। बहुत-से हिस्से ख़त्म कर दिये हैं नये इज़ाफ़े कर दिये, अलफ़ाज़ को बदल दिया, लेकिन इसके बावजूद कहीं-कहीं फिर भी किताबुल्लाह का नूर झलकता है।

इसी वजह से उसमें अब भी जनाब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तशरीफ़ लाने की ख़ुशख़बरी और आपकी सिफ़ात मौजूद हैं। और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में तो और ज़्यादा स्पष्ट थीं। इसी वजह से क़ुरआन करीम कहता है कि:

"ये यहूदी आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) को इस तरह जानते हैं जिस तरह अपने बेटों को जानते हैं"। (सूरः ब-क़रह् आयत 146)

इसलिए कि तौरात में जो निशानियाँ आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बयान हुई थीं कि नबी आख़िरुज़्ज़माँ ऐसी-ऐसी सिफ़ात रखने वाले होंगे। ऐसा उनका हुलिया होगा। इस ख़ानदान के होंगे। इस शहर में होंगे। यह सारी तफ़सील ज़िक्र की गयी थी। जो यहूदी उन किताबों के आ़लिम थे वे अपनी आँखों से वे निशानियाँ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम में देखते थे, कि पाई जा रही हैं मगर अपनी ज़िद और हठधर्मी और दुश्मनी की वजह से मानते नहीं थे। तो हज़रत अ़ता बिन यसार रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि जब मेरी मुलाक़ात हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर बिन आ़स रज़ियल्लाहु अ़न्हु से हुई तो मैंने उनसे कहा कि आपने तो तौरात पढ़ी है, तौरात में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सिफ़तें बयान की गयी हैं, वे हमें बतलाएँ।

बाईबल से क़ुरआन तक

ये किताबें उन लोगों ने इतनी बिगाड़ दी हैं इसके बावजूद उसमें कुछ टुकड़े ऐसे हैं कि ऐसा महसूस होता है कि जैसे क़ुरआन करीम का तर्जुमा है। उनकी मशहूर किताब बाईबल जिसको "किताबे मुक़द्दस" भी कहते हैं

उसको यहूदी भी मानते हैं और ईसाई भी मानते हैं। उसमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़ुशख़बरियाँ आज भी मौजूद हैं। मुझे तौरात का एक जुमला याद आ गया जिसमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़ुशख़बरी देते हुए फ़रमाया गया कि:

"जो फ़ारान से तुलू होगा। सलाह में बसने वाले गीत गाएँगे, क़ैदार की बस्तियाँ तारीफ़ करेंगी"

"फ़ारान" नाम है उस पहाड़ का जिस पर ग़ारे-हिरा स्थित है। "सलाह" नाम है उस पहाड़ का जिसका एक हिस्सा "सनियतुल्-विदा" है। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हिजरत फ़रमाकर मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ लाए तो उसपर बच्चियों ने खड़े होकर ये तराने पढ़े थे:

"त-लअ़ल् बद्रु अ़लैना मिन् सनियातिल् विदाअ़"

यानी हम पर चाँद तुलू हुआ (निकला) सनियातिल् विदा की तरफ़ से। मुराद नबी पाक का उधर से नज़र आना है।

और क़ैदार नाम है हज़रत इसमाईल अ़लैहिस्सलाम के बेटे का। और उनकी बस्तियाँ अ़रब में आबाद हैं। उनकी तरफ़ इशारा है कि जब उनकी औलाद में आख़िरी नबी पैदा होंगे तो बस्तियाँ तारीफ़ करेंगी।

आपकी सिफ़तें तौरात में भी मौजूद हैं

बहरहाल! हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर बिन आ़स रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि हाँ! मैं बताता हूँ।

अल्लाह की क़सम! हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की कुछ सिफ़तें तौरात में ऐसी बयान की गयी हैं जो क़ुरआन पाक में भी ज़िक्र हुई हैं।

फिर उन्होंने क़ुरआन पाक की यह आयत तिलावत फ़रमाई:

तर्जुमा: ऐ नबी! हमने आपको गवाह बनाकर और ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा। (सूर: अहज़ाब आयत 45)

गवाह बनाने का मतलब यह है कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम गवाही देंगे कि इस उम्मत को अल्लाह तआ़ला की तौहीद का पैग़ाम दिया गया था तो किसने

उस पर अमल किया और किसने नहीं। इस बात की गवाही देंगे। और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम लोगों को जन्नत की ख़ुशख़बरी देने वाले होंगे और जहन्नम से डराने वाले होंगे।

यह आयत कुरआन करीम की तिलावत फ़रमाई फिर आगे तौरात की इबारत पढ़कर सुनायी कि:

"व हिर्ज़न् लिल्-उम्मिय्यीन"

यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अनपढ़ लोगों के वास्ते नजात दिलाने वाले बनकर आएँगे। "उम्मी" का लफ़्ज़ ख़ास तौर से लक़ब के तौर पर अ़रबों के लिए बोला जाता था। इसलिए कि उनके यहाँ लिखने-पढ़ने का रिवाज नहीं था, कि उम्मियों के लिए नजात दिलाने वाले बनकर आएँगे। आगे फ़रमाया:

"व अन्-त अ़ब्दी व रसूली"

यानी अल्लाह तआ़ला उस वक़्त तौरात में फ़रमा रहे हैं कि ऐ नबी मुहम्मद! तुम मेरे बन्दे हो और पैग़म्बर हो।

"व सम्मैतुकल् मुतवक्किल"

और मैंने तुम्हारा नाम मुतवक्किल रखा है, यानी अल्लाह तआ़ला पर भरोसा करने वाला।

आगे सिफ़तें बयान फ़रमाईं कि वह नबी कैसा होगा? फ़रमाया:

"लै-स बिफ़ज़्ज़िन् व ला ग़ैलीज़िन्"

वह न तो सख़्त और कड़वी बात करने वाला होगा और न सख़्त तबीयत वाला होगा। "फ़ज़्ज़" के मायने हैं जिसकी बातों में सख़्ती हो, लहजा उखड़ा हुआ हो।

"व ला सख़्ख़ाबु फ़िल्-अस्वाक़ि"

और न बाज़ारों में शोर मचाने वाला होगा।

"व ला यद्फ़उस्सय्यि-अ-त बिस्सय्यि-अति"

और वह बुराई का बदला बुराई से नहीं देगा।

"व लाकिन् यअ़्फ़ू व यस्फ़ह"

लेकिन वह माफ़ करने वाला और दरगुज़र करने वाला होगा।

"व लंयू-यक़्बि-ज़हुल्लाहु तआ़ला हत्ता युक़ी-म बिहिल् मिल्लतल् इ-वजा-अ बिअंयू-यकूलू ला इला-ह इल्लल्लाहु"

और अल्लाह तआ़ला उस वक़्त तक उसको अपने पास नहीं बुलाएँगे जब तक कि उस टेढ़ी क़ौम को सीधा न कर दें, इस तरह कि वे कह दें "ला इला-ह इल्लल्लाहु"।

"व यफ़्तहु बिहा अअ्युनन् उम्यन् व आज़ानन् सुम्मन् व क़ुलूबन् गुल्फ़न्"

और इस कलिमा-ए-तौहीद के ज़रिये उनकी अन्धी आँखें खोल देगा, और बहरे कान खोल देगा। और वे दिल जिनके ऊपर पर्दे पड़े हुए हैं, वे उनके ज़रिये खुल जाएँगे।

और ये सिफ़तें तक़रीबन इन्हीं अलफ़ाज़ के साथ तौरात में आज भी मौजूद हैं।

तौरात की इब्रानी भाषा में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सिफ़तें

चूँकि मुहावरे हर ज़बान (भाषा) में अलग-अलग होते हैं तो असल तौरात इब्रानी ज़बान में थी। उसका तर्जुमा जब उर्दू में करते हैं तो इस तरह करते हैं कि:

"वह मसले हुए सरकण्डे को न तोड़ेगा। टिमटिमाती हुई बत्ती को न बुझाएगा"।

और इब्रानी ज़बान के मुहावरे में तर्जुमा इस तरह करते हैं कि:

"वह किसी बुराई का बदला बुराई से न देगा और माफ़ करने व दरगुज़र करने से काम लेगा। और उसके आगे पत्थर के बुत औंधे मुँह गिरेंगे"।

और यह वाक़िआ़ उस वक़्त पेश आया जबकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मक्का मुअ़ज़्ज़मा को फ़तह किया तो पत्थर के बुत

जो काबा शरीफ़ में स्थापित थे, वे औंधे मुँह गिरे। यह सारी तफ़सील आई है। मैंने जो "इज़हारुल् हक़" का तर्जुमा "बाईबल से क़ुरआन तक" के नाम से किया है, उसकी तीसरी जिल्द का छठा बाब इन्हीं ख़ुशख़बरियों पर आधारित है। मैंने दो कालम बनाकर एक कालम में बाईबल की इबारत और दूसरे कालम में वे हदीसें लिखी हैं जिनमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सिफ़तें आई हैं। फिर उनकी तुलना करके दिखाई कि बाईबल में यह आया है और क़ुरआन करीम में या हदीस में यह आया है। तो इतनी कमी-बेशी और बदलाव के बावजूद आज भी ये सिफ़तें बाईबल में बाक़ी हैं।

ज़िक्र हुई हदीस से इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अ़लैहि का मक़सद

लेकिन जिस ग़रज़ से इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अ़लैहि यह हदीस लेकर आए हैं वह यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के जो हालात पिछली किताबों में बयान हुए वे क्या थे, और इस पेशीनगोई में जो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की इम्तियाज़ी सिफ़तें हैं और सबसे ज़्यादा अहमियत वाली हैं, वे क्या हैं?

वे ये हैं कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सख़्त नहीं हैं और कड़वे मिज़ाज वाले नहीं हैं। और बुराई का बदला बुराई से नहीं देते।

यह सुन्नत है नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की। हालाँकि अल्लाह तआ़ला ने शरीअ़त में इजाज़त दी है कि अगर किसी आदमी ने तुम्हारे साथ बुराई की है तो जितनी बुराई की है उतना बदला ले सकते हो। एक तमाँचा मारा है तो तुम भी उतने ही ज़ोर से एक तमाँचा मार सकते हो जितना ज़ोर से उसने मारा। उससे कम या ज़्यादा न हो। इसकी इजाज़त है। लेकिन इजाज़त होना और बात है और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत होना और बात है। आपने सारी उम्र कभी किसी आदमी से अपनी ज़ात का बदला नहीं लिया।

बुराई का जवाब अच्छे सुलूक से देना

यह भी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बड़ी महत्तवपूर्ण सुन्नत है। हमने सुन्नतों को कुछ ज़ाहिरी सुन्नतों तक सीमित कर लिया है। जैसे सुन्नत है कि मिस्वाक करनी चाहिये, दाढ़ी रखनी चाहिये और अपना ज़ाहिरी हुलिया सुन्नत के अनुसार रखना चाहिये। ये सब सुन्नतें हैं इनकी अहमियत से भी जो इनकार करे वह सुन्नतों को नहीं जानता। लेकिन सुन्नतें इस हद तक सीमित नहीं, आ़म सम्बन्धों और मामलात में नबी करीम सल्ल० का जो तरीक़ा-ए-अ़मल था, वह भी आपकी सुन्नत का एक बहुत बड़ा हिस्सा है। और जिस पाबन्दी के साथ दूसरी सुन्नतों पर अ़मल करने का दिल में दाईया (जज़्बा और तक़ाज़ा) पैदा होता है उससे भी ज़्यादा एहतिमाम के साथ इस सुन्नत पर अ़मल करने की फ़िक्र करनी चाहिये कि बुराई का बदला बुराई से न दें बल्कि बुराई का बदला अच्छाई के साथ दें। सुन्नत के मुताबिक़ अच्छाई से दें।

अब ज़रा हम अपने गिरेबानों में झाँक कर देखें कि हम इस सुन्नत पर कितना अ़मल कर रहे हैं? हमारे साथ अगर किसी ने बुराई की है तो बदले की भावना कितनी दिल में पैदा होती है और कितनी उसको तकलीफ़ पहुँचाने की कोशिश करते हैं? अगर ग़ौर करो तो समाज में फ़साद (बिगाड़ और ख़राबी) का बहुत बड़ा सबब यह है कि हमने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की इस सुन्नत को छोड़ दिया है। हमारी सोच यह होती है कि उसने चूँकि मेरे साथ बुराई की है, मैं भी उससे बुराई करूँगा। उसने मुझे गाली दी है, मैं भी गाली दूँगा। उसने मुझे मेरी शादी पर क्या तोहफ़ा दिया था, मैं भी उतना ही दूँगा। और उसने शादी पर तोहफ़ा नहीं दिया था तो मैं भी नहीं दूँगा।

इसका मतलब यह हुआ कि यह सब कुछ बदला करने के लिए हो रहा है। बदला करने वाला दर असल सिला-रहमी करने वाला नहीं होता। हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह फ़रमाया है:

तर्जुमाः यानी हक़ीक़त में सिला-रहमी करने वाला वह शख़्स है कि

दूसरा तो क़ता-रहमी कर रहा है और रिश्तेदारी के हुक़ूक़ अदा नहीं कर रहा है और यह जवाब में क़ता-रहमी करने के बजाए उसके साथ अच्छा मामला कर रहा है। (बुख़ारी, किताबुल अदब)

हज़रत डॉक्टर अ़ब्दुल हई साहिब का अ़जीब वाक़िआ़

एक दिन हज़रत डॉक्टर अ़ब्दुल हई साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि अपने घर पर कुछ लोगों और ख़ादिमों के साथ बैठे हुए थे। अचानक एक साहिब आए जो हज़रत के कोई रिश्तेदार थे। दाढ़ी-मूँछ साफ़, आ़म आदमियों की तरह थे। दरवाज़े में दाख़िल होते ही गालियाँ देनी शुरू कर दीं। बहुत ही बे-अदबी के लहजे में जितने अलफ़ाज़ बुराई के उनके मुँह में आए, कहते ही गये। आगे से हज़रत उनकी हर बात पर कह रहे हैं कि भाई हमसे ग़लती हो गयी है, तुम हमें माफ़ कर दो। हम इन्शा-अल्लाह तलाफ़ी कर देंगे। तुम्हारे पाँव पकड़ते हैं, माफ़ कर दो। बहरहाल! उन साहिब का इतना सख़्त गुस्से का आ़लम कि देखने वाले को भी बरदाश्त न हो, आख़िरकार ठण्डे हो गए।

बाद में हज़रत डॉक्टर साहिब फ़रमाने लगे कि इस अल्लाह के बन्दे को कोई ग़लत ख़बर मिल गयी थी, इस वजह से उनको गुस्सा आ गया था। अगर मैं चाहता तो उनको जवाब दे सकता था और बदला ले सकता था लेकिन इस वास्ते मैंने उसको ठण्डा किया कि बहरहाल यह रिश्तेदार है, और रिश्तेदारों के भी हुक़ूक़ होते हैं। तो रिश्तेदारों के साथ क़ता-ताल्लुक़ कर लेना आसान है, लेकिन ताल्लुक़ जोड़कर रखना यह है दर हक़ीक़त तालीम नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की। और यह है कि बुराई का बदला बुराई से नहीं बल्कि प्यार से, मुहब्बत से, शफ़क़त से और ख़ैरख़्वाही से दो।

मौलाना रफ़ीउद्दीन साहिब का वाक़िआ़

मौलाना रफ़ीउद्दीन साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि दारुल उलूम देवबन्द के मोहतमिम थे। अ़जीब अल्लाह वाले बुज़ुर्ग थे। दारुल उलूम में मोहतमिम के मायने गोया कि सबसे बड़े ओ़हदे पर पदासीन थे। हज़रत ने एक गाय

पाल रखी थी। एक बार ऐसा हुआ कि उसको लेकर आ रहे थे कि रास्ते में मदरसे का कोई काम याद आ गया। उसी तरह मदरसे आए और गाय मदरसे के सहन में पेड़ के साथ बाँधकर दफ़्तर में चले गये।

वहाँ देवबन्द के एक साहिब आए और चीख़ना शुरू कर दिया कि यह गाय किसकी बंधी है? लोगों ने बताया: मोहतमिम साहिब की है। तो कहने लगे अच्छा! मदरसा मोहतमिम का कमेला बन गया। उनकी गाय का बाड़ा बन गया और मोहतमिम साहिब मदरसे को इस तरह खा रहे हैं कि मदरसे के सहन को उन्होंने अपनी गाय का बाड़ा बना लिया है।

शोर सुनकर वहाँ एक मजमा इकट्ठा हो गया। अब सरासर इल्ज़ाम, सरासर नाइन्साफ़ी, हज़रत वहाँ काम कर रहे थे, अन्दर आवाज़ आई तो बाहर निकले कि क्या क़िस्सा है? लोगों ने बताया कि यह साहिब नाराज़ हो रहे हैं कि मोहतमिम साहिब ने यहाँ गाय बाँध दी। कहने लगे कि हाँ! वाक़ई यह मदरसा है अल्लाह का। मुझे गाय यहाँ नहीं बाँधनी चाहिये थी। यह गाय मेरी ज़ाती है और यह सहन मदरसे का है। मुझसे ग़लती हो गयी, मैं अल्लाह तआला से इस्तिग़फ़ार करता हूँ। इस ग़लती का कफ़्फ़ारा यह है कि मेरा दिल चाह रहा है कि यह गाय आप ही ले जाओ। वह भी अल्लाह का बन्दा ऐसा था कि लेकर चलता बना।

अब आप देखिए कि सरासर नाइन्साफ़ी और ज़ुल्म है। इतने बड़े अल्लाह वाले और इतने बड़े दीन के ख़ादिम के ऊपर एक मामूली आदमी इतनी गर्मी दिखा रहा है। सब लोगों के सामने बजाए इसके कि उसको बदला दिया जाता, गाय भी उसी को दे दी। यह है नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत पर अ़मल।

आपकी सारी सुन्नतों पर अ़मल ज़रूरी है

दर असल सुन्नत सिर्फ़ यह नहीं है कि आसान-आसान सुन्नतों पर अ़मल कर लिया जाए। बल्कि हर एक सुन्नत पर अ़मल की फ़िक्र करनी चाहिये और इनसान इस सुन्नत के जितना क़रीब होगा, उतना ही समाज का फ़साद (बिगाड़ और ख़राबी) ख़त्म होगी। ग़ौर करके देख लो और

तजुर्बा करके देख लो कि जो बिगाड़ फैला हुआ है वह जनाब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नतों से दूर होने का नतीजा है।

लेकिन वह माफ़ फरमा देते हैं और दरगुज़र से काम लेते हैं। कोई कुछ भी कह दे लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जवाब नहीं देते। और जो अल्लाह के वली होते हैं वे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पैरोकार होते हैं और उनका तरीक़ा भी यही होता है। अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत से उसका कुछ हिस्सा हमको भी अ़ता फ़रमा दे।

यह सब कुछ इसलिए अ़र्ज़ किया जाता है कि हम सब एक ही कश्ती के सवार हैं। मालूम नहीं हम कहाँ चले गये हैं। किस वादी में भटक रहे हैं। यहाँ बैठने का मक़सद यह होता है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नतों का कम-से-कम थोड़ी देर ध्यान हो तो शायद दिलों में कुछ जज़्बा पैदा हो जाए और अल्लाह तआ़ला अ़मल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा दे। इसकी आ़दत डालो, इसके लिए ख़ून के घूँट पीने पड़ते हैं, इसके लिए मश्क़ करनी पड़ती है, दिल पर जबर करना पड़ता है। दिल पर पत्थर रखने पड़ते हैं। अगर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत की मन्ज़िल की तरफ़ जाना है तो ये कड़वे घूँट पीने पड़ेंगे।

अल्लाह तआ़ला के नज़दीक पसन्दीदा घूँट

हदीस पाक में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि कोई घूँट जो इनसान पीता है अल्लाह तआ़ला को इतना पसन्द नहीं जितना कि गुस्से का पीना। (मुस्नद अहमद, जिल्द 1 पेज 367)

यानी जब गुस्सा आ रहा हो और गुस्से में आदमी आपे से बाहर हो रहा हो और उसमें अन्देशा हो कि वह किसी को नुक़सान पहुँचा देगा, उस वक़्त गुस्से के घूँट को सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की ख़ुशी के लिए पी जाना और उसके तक़ाज़े पर अ़मल न करना, यह अल्लाह तआ़ला को बहुत ही पसन्द है।

क़ुरआन करीम ने सूरः आलि इमरान की आयत 134 के अन्दर ऐसे ही लोगों की तारीफ़ फरमाई है कि जब भी गुस्सा आए और बदले के

जज़्बात पैदा हों, तो ठीक है तुम्हें शरीअ़त ने जायज़ सीमाओं में बदला लेने का हक़ दिया है। लेकिन यह देखो कि बदला लेने से तुम्हें क्या फ़ायदा? माना एक शख़्स ने तुम्हें तमाँचा मार दिया तो अगर तुम बदला लेने के लिए एक तमाँचा उसके मारो तो तुम्हें क्या फ़ायदा हासिल हुआ? अगर तुमने उसको माफ़ कर दिया और यह कहा कि मैं अल्लाह तआ़ला के लिए उसको माफ़ करता हूँ तो इसका नतीजा क्या होगा?

अल्लाह तआ़ला के यहाँ सब्र करने वालों का अज्र

इसका नतीजा यह होगा कि:

तर्जुमाः बेशक सब्र करने वालों को अल्लाह तआ़ला बेहिसाब अज्र अ़ता फ़रमाएँगे। (सूरः ज़ुमर आयत 10)

और हदीस पाक में आता है कि जो शख़्स अल्लाह तआ़ला के बन्दों को माफ़ करने का आ़दी हो, अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि जब उसने मेरे बन्दों को माफ़ किया था तो मैं उसको माफ़ करने का ज़्यादा हक़दार हूँ। तो उसकी ख़ताएँ भी अल्लाह तआ़ला माफ़ फ़रमा देते हैं।

माफ़ करने और सब्र का मिसाली वाक़िआ़

हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु के ज़माने में दो आदमी आपस में लड़े। लड़ाई में एक का दाँत टूट गया। जिसका दाँत टूटा वह शख़्स उसको पकड़कर हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु के पास ले गया और कहा कि दाँत का बदला दाँत से होता है इसलिए क़िसास (बदला) दिलवाइये।

हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि ठीक है, तुम्हें हक़ है लेकिन क्या फ़ायदा, तुम्हारा दाँत तो टूट ही गया, इसका भी तोड़ें, इसके बजाए तुम दाँत की दियत (मुआ़वज़ा) ले लो। दियत पर सुलह कर लो। वह शख़्स कहने लगा कि मैं दाँत ही तोड़ूँगा। हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने दोबारा उसको समझाने की कोशिश की लेकिन वह न माना। हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि फिर चलो, उसका भी दाँत तोड़ते हैं।

रास्ते में हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अ़न्हु बैठे हुए थे। बड़े दर्जे के मशहूर सहाबी हैं। उन्होंने कहा कि भाई देखो! तुम बदला तो ले रहे हो मगर एक बात तो सुनते जाओ, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि अगर कोई शख़्स किसी दूसरे को तकलीफ़ पहुँचाए और फिर जिसको तकलीफ़ पहुँची है वह उसको माफ़ कर दे तो अल्लाह तआ़ला उसको उस समय माफ़ फ़रमाएँगे जबकि उसको माफ़ी की सबसे ज़्यादा ज़रूरत होगी, यानी आख़िरत में।

तो यह शख़्स या तो इतने ग़ुस्से में आया था कि पैसे लेने पर भी राज़ी नहीं था, जब यह बात सुनी तो कहा कि क्या आपने यह बात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुनी है? हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया हाँ! मैंने सुनी है और मेरे कानों ने सुनी है। वह शख़्स कहने लगा कि अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह बात फ़रमाई है तो जाओ उसको बग़ैर किसी पैसे के माफ़ करता हूँ। चुनाँचे उसको माफ़ कर दिया।

हम में और सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम में फ़र्क़

हदीसें हम भी सुनते हैं और वे हज़रात भी सुनते हैं, लेकिन उनका हाल यह था कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का एक इरशाद कान में पड़ा तो बड़े-से-बड़ा क़स्द व इरादा और बड़े-से-बड़ा मन्सूबा उस इरशाद के आगे एक पल में ढेर कर दिया।

हम सुबह से शाम तक हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इरशादात पढ़ते और सुनते रहते हैं लेकिन उन पर अ़मल का जज़्बा पैदा नहीं होता। यही वजह है कि इस पढ़ने और सुनने के नतीजे में हमारी ज़िन्दगी में कोई इन्क़िलाब और बदलाव नहीं आता, लेकिन सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम को अल्लाह तआ़ला ने दुनिया में इ़ज़्ज़त दी थी और आख़िरत में भी इन्शा-अल्लाह उनका बहुत बड़ा मुक़ाम होगा।

ज़िक्र हुई हदीस का आख़िरी टुकड़ा

इसमें दूसरी बात आगे यह फ़रमाई कि अल्लाह तआ़ला हुज़ूर सल्ल०

को उस वक़्त तक अपने पास नहीं बुलाएँगे जब तक कि उस टेढ़ी क़ौम को सीधा न कर लें। टेढ़ी क़ौम से मतलब बुतों को पूजने वाली अ़रब क़ौम है। उनके अन्दर शिर्क तो था ही, और दिमाग़ में यह ख़न्नास भी था कि हम सारी मख़्लूक़ से बरतर (बेहतर और ऊँचे रुतबे वाले) हैं। अपने आपको ख़ुदा जाने क्या कुछ समझते थे। उनको सीधा करने के लिए नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को भेजा।

चुनाँचे तैईस साल की मुद्दत में अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़रिये अ़रब के पूरे इलाक़े पर ला इला-ह इल्लल्लाहु की हुकूमत क़ायम फ़रमा दी और आगे फ़रमाया कि:

"इस कलिमा-ए-तौहीद के ज़रिये उनकी अन्धी आँखों को खोलेगा और उनके दिलों के पर्दों को हटाएगा।"

ये सब अलफ़ाज़ तौरात के हैं जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सिफ़तों के बारे में आए हैं। अल्लाह तआ़ला हमें इन अख़्लाक़ को अपने अन्दर पैदा करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَآ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की आख़िरी वसीयतें

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَنَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا ٥ اَمَّا بَعْدُ!

عن نعيم بن يزيد قال: حدثنا علي بن ابي طالب رضي الله عنه أن النبي صلى الله عليه وسلم لما ثقل قال: يا علي: ائتني بطبق أكتب فيه مالا تضل أمتي، فخشيت أن يسبقني فقلت: إني لأحفظ من ذراعي الصحيفة وكان رأسه بين ذراعيه و عضدي يوصي الصلاة والزكاة وماملكت أيمانكم، وقال كذالك حتى فاضت نفسه و امره بشهادة أن لا اله الا الله و أن محمدا عبده ورسوله من شهد بهما حرّم على النار. (الادب المفرد، باب نمبر ٨٢)

वफ़ात वाली बीमारी में लिखने के लिए थाल मंगवाना

यह रिवायत हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु से बयान की गयी है। इस रिवायत में वह नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की वफ़ात की बीमारी का वाक़िआ़ बयान फ़रमा रहे हैं। आपकी यह बीमारी कई रोज़ तक जारी रही और उन दिनों में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम

मस्जिदे नबवी में तशरीफ़ न ला सके।

आख़िरी दिन जब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इन्तिक़ाल का वक़्त क़रीब था उस वक़्त का वाक़िआ़ हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु बयान फ़रमा रहे हैं। वह यह कि जब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तबीयत ज़्यादा नासाज़ हो गयी तो आपने मुझसे फ़रमाया कि ऐ अ़ली! मेरे पास कोई थाल ले आओ, जिसमें वह बात लिख दूँ कि जिसके बाद मेरी उम्मत गुमराह न हो।

उस ज़माने में काग़ज़ का इतना ज़्यादा रिवाज नहीं था, इसलिए कभी चमड़े पर लिख लिया, कभी पेड़ के पत्तों पर लिख लिया, कभी हड्डियों पर लिख लिया, कभी मिट्टी के बरतन पर लिख लिया। चुनाँचे आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु से लिखने के लिए थाल मंगवाया।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की आख़िरी वसीयतें

हज़रत अ़ली फ़रमाते हैं कि उस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तबीयत इतनी ज़्यादा नासाज़ थी कि मुझे यह अन्देशा हुआ कि अगर मैं लिखने के लिए कोई चीज़ तलाश करने जाऊँगा तो कहीं मेरे पीछे ही आपकी रूह परवाज़ न कर जाए इसलिए मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से कहा कि आप जो कुछ फ़रमाएँगे, मैं उसको याद रखूँगा और बाद में उसको लिख लूँगा।

हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि उस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का सर मुबारक मेरे बाज़ुओं के बीच था। उस वक़्त आपकी ज़बान मुबारक से जो कलिमात निकल रहे थे वे ये थे "नमाज़ का ख़्याल रखो, ज़कात का ख़्याल रखो और तुम्हारी मिल्कियत में जो ग़ुलाम और बाँदियाँ हैं, उनका ख़्याल रखो, और **अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्-न मुहम्मदन् अ़ब्दुहू व रसूलुहू** की गवाही पर क़ायम रहो। जो शख़्स इस गवाही पर क़ायम रहेगा अल्लाह तआ़ला जहन्नम को उस शख़्स पर हराम फ़रमा देंगे।"

ये नसीहतें हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने आख़िरी वक़्त में इरशाद फ़रमाईं।

उपरोक्त वाक़िआ ख़ुद हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने बयान फ़रमाया, इसमें कई बातें समझने की हैं।

हज़रत उमर से लिखने के लिए काग़ज़ तलब करना

पहली बात यह है कि इसी तरह का एक वाक़िआ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के साथ भी पेश आया था। यह वाक़िआ जिसका ज़िक्र हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया, यह ख़ास उस दिन का वाक़िआ है जिस दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इन्तिक़ाल हुआ, और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के साथ इन्तिक़ाल से तीन दिन पहले ऐसा ही वाक़िआ पेश आया था।

उस दिन भी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तबीयत बोझल और नासाज़ थी और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु आपके पास थे। आप सल्ल० के चचा हज़रत अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु भी क़रीब थे। उस वक़्त भी आपने उन हज़रात से फ़रमाया था कि कोई काग़ज़ वग़ैरह ले आओ ताकि मैं ऐसी बात लिख दूँ जिसके बाद तुम गुमराह न हो।

हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु यह देख रहे थे कि सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तबीयत ज़्यादा नासाज़ है और इस हालत में अगर आप कुछ लिखवाने की मशक़्क़त उठाएँगे तो कहीं आपकी तबीयत और ज़्यादा ख़राब न हो जाए। इस वजह से हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! अल्लाह तआ़ला की किताब हमारे पास मौजूद है और आप पहले ही बहुत-से इरशादात बयान फ़रमा चुके हैं, इसलिए यह मशक़्क़त उठाने की ज़रूरत नहीं।

शियाओं का हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु पर बोहतान

यह वाक़िआ जो हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु के साथ

पेश आया था। इसको शियाओं ने एक पहाड़ बना लिया और इसकी बुनियाद पर हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु पर यह इल्ज़ाम लगाया कि ख़ुदा की पनाह! उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को वसीयत लिखने से रोका और दर हक़ीक़त हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यह वसीयत लिखना चाहते थे कि मेरे बाद हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु को ख़लीफ़ा बनाएँ मगर हज़रत फ़ारूक़े आज़म आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की इस मन्शा को समझ गये इसलिए उन्होंने बीच में आकर आपको इस वसीयत लिखने से मना फ़रमा दिया और रुकावट डाल दी, जिसके नतीजे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ख़िलाफ़त की वसीयत न लिखवा सके। इस वाक़िए को बुनियाद बनाकर शियाओं ने हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु के ख़िलाफ़ तोहमतों का एक तूफ़ान खड़ा कर दिया।

यह बोहतान ग़लत है

हालाँकि बात सिर्फ़ इतनी थी कि हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने यह देखा कि ऐसा न हो कि लिखने की मशक़्क़त की वजह से आपकी तबीयत और ज़्यादा ख़राब हो जाए। और यह भी जानते थे कि अगर कोई बहुत अहम बात लिखनी होगी तो सिर्फ़ मेरे कहने की वजह से हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उस बात को बयान करने से नहीं रुकेंगे। हक़ीक़त यह है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को अगर कोई बात बयान करनी होती और उस बात को आप ज़रूरी भी समझते तो क्या सिर्फ़ हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु के मना करने की वजह से उस बात को बयान करने से रुक जाते? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने तो हक़ बात पहुँचाने में किसी बड़े से बड़े इनसान की भी परवाह नहीं की। यह हिमाक़त और गुमराही की बात है जो इन शियाओं ने इख़्तियार की है।

हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु पर एतिराज़ क्यों नहीं करते?

और दूसरी तरफ़ इसी तरह का वाक़िआ हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु के साथ भी पेश आया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु से फ़रमाया था कि थाल ले आओ ताकि मैं कुछ लिखवा दूँ। लेकिन हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि उस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तबीयत इतनी नासाज़ थी कि मुझे अन्देशा हुआ कि अगर मैं लिखने के लिए थाल लेने जाऊँगा तो मेरे पीछे कहीं आपकी रूह परवाज़ न कर जाए इसलिए वह भी लिखने के लिए कोई चीज़ नहीं लाए।

अब देखिये कि हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने भी वही काम किया जो हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने किया था। इसलिए अगर हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु पर कोई एतिराज़ होता है तो हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु पर भी एतिराज़ होता है।

बल्कि हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु पर एतिराज़ ज़्यादा होता है क्योंकि हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु के साथ जो वाक़िआ पेश आया वह इन्तिक़ाल से तीन दिन पहले पेश आया और उस वाक़िए के बाद तीन दिन तक आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम दुनिया में तशरीफ़ फ़रमा रहे। इसलिए अगर कोई ज़रूरी बात लिखवानी थी तो आप बाद में भी लिखवा सकते थे। और हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु के साथ जो वाक़िआ पेश आया वह ठीक इन्तिक़ाल के वक़्त पेश आया और उस वाक़िए के फ़ौरन बाद आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इन्तिक़ाल हो गया। इसलिए अगर उस वाक़िए से हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु पर एतिराज़ हो सकता है तो हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु पर ज़्यादा हो सकता है।

दोनों बुज़ुर्ग सहाबा ने सही अ़मल किया

बात दर असल यह है कि दोनों बुज़ुर्गों ने वही काम किया जो एक

जाँनिसार सहाबी को करना चाहिये था। दोनों यह देख रहे थे कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तबीयत नासाज़ है। हम और आप उस वक़्त की हालत का अन्दाज़ा भी नहीं कर सकते जो उस मौक़े पर सहाबा किराम पर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को बीमार देखकर गुज़र रही थी। ये वे हज़रात सहाबा किराम थे जो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के एक साँस के बदले हज़ारों ज़िन्दगियाँ कुरबान करने के लिए तैयार थे। आपकी बीमारी और आपकी तकलीफ़ उन हज़रात के लिए रूह को तड़पाने वाली थी।

इसी लिए उन दोनों हज़रात ने वही काम किया जो एक जाँनिसार सहाबी को करना चाहिये था। वह यह कि ऐसे मौक़े पर सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को जहाँ तक मुमकिन हो तकलीफ़ से बचाया जाए और ये दोनों हज़रात जानते थे कि आपकी सारी ज़िन्दगी अल्लाह तआ़ला के दीन का पैग़ाम पहुँचाने में और फैलाने में ख़र्च हुई और कोई ज़रूरी बात ऐसी नहीं है जो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने खुले शब्दों में बयान न फ़रमा दी हो। इसलिए कोई ऐसी बात नहीं है जिसको इसी वक़्त लिखवाना ज़रूरी हो। और अगर कोई बात ऐसी होगी भी तो हम उसको ज़बानी सुनकर याद रखेंगे।

वे बातें आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद भी फ़रमा दीं

फिर साथ ही इस हदीस में यह भी आ गया है कि आप जो बातें लिखवाना चाहते थे वे उसी वक़्त इरशाद भी फ़रमा दीं। जिसकी वजह से पता चल गया कि आप क्या लिखवाना चाह रहे थे और वही बातें हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने रिवायत फ़रमा दीं जिसके नतीजे में यह बात सामने आ गई कि वे बातें जिनकी आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बार-बार ताकीद फ़रमा चुके थे उसी को और ज़्यादा ताकीद के साथ हमेशा के लिए महफ़ूज़ करने की ख़ातिर लिखवाना चाह रहे थे, चुनाँचे आपने फ़रमाया:

अस्सला-त वज़्ज़का-त व मा म-लकत् ऐमानुकुम्

अब नमाज़ की ताकीद और ज़कात की ताकीद और गुलामों के साथ अच्छे सुलूक की ताकीद कोई नयी बात नहीं थी लेकिन सिर्फ इसलिए ये बातें बयान फ़रमाईं ताकि उम्मत को पता चल जाए कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने दुनिया से जाते-जाते जिन बातों की ताकीद फ़रमायी वे ये थीं। इसलिए न ख़िलाफ़त का कोई मसला था और न ही अपने बाद किसी को जानशनी बनाने का मामला था।

बहरहाल! शियाओं ने हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु के ख़िलाफ़ एतिराज़ों का जो तूफ़ान खड़ा किया था उसका इस हदीस से बिल्कुल ख़ात्मा हो जाता है क्योंकि हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु के साथ वही मामला पेश आया जो हज़रत फ़ारूक़े आज़म के साथ पेश आया था।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हुक्म का पालन न करने की वजह

दूसरी बात जो इस हदीस से मालूम हुई वह यह कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु के वाक़िए में काग़ज़ मंगवाया और हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु के वाक़िए में थाल मंगवाया, लेकिन ये दोनों हज़रात ये चीज़ें नहीं लाए। अब बज़ाहिर देखने में यह नज़र आता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हुक्म की तामील नहीं हुई लेकिन तामील न होने की वजह अल्लाह की पनाह! यह नहीं थी कि सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हुक्म की कोई अहमियत नहीं समझी, बल्कि वजह यह थी कि ये हज़रात जानते थे कि अगर इस वक़्त कोई चीज़ लिखने के लिए लाएँगे तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तबीयत पर और ज़्यादा बोझ होगा।

यह बे-अदबी नहीं

इससे मालूम हुआ कि अगर अपना बड़ा कोई काम करने को कहे और छोटे यह देखें कि इस काम से उनको तकलीफ़ होगी और उससे

उनकी तबीयत पर बोझ होगा तो बड़े को तकलीफ़ से बचाने के लिए छोटे यह कह दें कि इस काम को दूसरे वक़्त के लिए टाल दें, तो इसमें न तो कोई नाफ़रमानी है और न ही इसमें कोई बे-अदबी है। बल्कि अदब और मुहब्बत का तक़ाज़ा ही यह है कि उनकी राहत का और उनकी सेहत का ख़्याल किया जाए।

पूरे दीन का ख़ुलासा

तीसरी बात जो इस हदीस को बयान करने का असल मक़सद है। वे नसीहतें हैं जो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस मौक़े पर इरशाद फ़रमाईं और जिन बातों की ताकीद फ़रमायी। इससे यह मालूम होता है कि सारी ज़िन्दगी दीन के जो अहकाम आप बयान फ़रमाते रहे और जो तालीमात लोगों के सामने फैलाते रहे उनका ख़ुलासा वे बातें हैं जो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने दुनिया से जाने के वक़्त इरशाद फ़रमाईं। एक और हदीस जो हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु से बयान की गयी है, जिसमें आपने फ़रमाया कि आख़िरी वक़्त में जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की आवाज़ आहिस्ता हो गयी तो मैंने आपके मुँह पर कान लगाकर सुना तो आख़िरी वक़्त तक आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़बान मुबारक पर ये अलफ़ाज़ थे:

अस्सला-त व मा म-लकत् ऐमानुकुम

अस्सला-त व मा म-लकत् ऐमानुकुम

यानी नमाज़ का ख़्याल करो और अपने मातेहतों का ख़्याल करो।

नमाज़ और मातेहतों के हुक़ूक़ की अहमियत

इससे मालूम हुआ कि सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को तमाम दीन के अहकाम और तालीमात में जिन चीज़ों का सबसे ज़्यादा एहतिमाम था वह अल्लाह के हक़ों में नमाज़ थी। एक और रिवायत में **"अस्सला-त वज़्ज़का-त व मा म-लकत् ऐमानुकुम"** के अलफ़ाज़ आए हैं। जिससे मालूम हुआ कि अल्लाह तआ़ला के जिन हुक़ूक़ का सबसे ज़्यादा एहतिमाम था, वे दो तरह के हुक़ूक़ थे- एक जानी और एक माली।

जानी हुक़ूक़ में नमाज़ और माली हुक़ूक़ में ज़कात। और बन्दों के हुक़ूक़ में गुलामों और ख़ादिमों और नौकरों और मातेहतों के हुक़ूक़।

इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को फ़िक्र और चिन्ता यह थी कि कहीं मेरी उम्मत मेरे बाद दीन के इन अहकाम में कोताही न करे। क्योंकि आप जानते थे कि इनमें कोताही का नतीजा तबाही है, जहन्नम है, और अल्लाह तआ़ला का अ़ज़ाब है। इसलिए दुनिया से जाते वक़्त आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इनकी ताकीद फ़रमा दी।

आख़िरत में नमाज़ के बारे में सबसे पहले सवाल होगा

क़ुरआन व हदीस नमाज़ की ताकीद से भरे हुए हैं। जगह-जगह "अक़ीमुस्सला-त, अक़ीमुस्सला-त" के अलफ़ाज़ बार-बार इरशाद फ़रमाए गये हैं। हदीस शरीफ़ में आता है कि आख़िरत में सबसे पहले नमाज़ के बारे में सवाल होगा। नमाज़ के बारे में हिसाब होगा कि कितनी नमाज़ें पढ़ीं, कितनी नमाज़ें छोड़ीं, कितनी नमाज़ें क़ज़ा करके पढ़ीं। आख़िरत की तैयारी के लिए सबसे पहला काम यह है कि इनसान सबसे पहले अपनी नमाज़ का हिसाब लगाए कि मेरे ज़िम्मे कोई नमाज़ बाक़ी है या नहीं?

मुख़्तसर तौबा का तरीक़ा

इसी वजह से हमारे बुज़ुर्गों का तरीक़ा यह है कि जब कोई शख़्स उनके पास "इस्लाही ताल्लुक़" (यानी अपने को सुधारने का ताल्लुक़) क़ायम करने की ग़रज़ से आता है। या उनसे बैअ़त करता है तो सबसे पहले "तौबा को पूरा करने" की तालीम दी जाती है। एक मुख़्तसर तौबा होती है और एक तफ़सीली तौबा होती है। मुख़्तसर तौबा यह है कि "सलातुत्तौबा" की नीयत से दो रक्अ़त नफ़िल पढ़े और फिर बहुत ही आ़जिज़ी और इन्किसारी के साथ अल्लाह तआ़ला के सामने अपने तमाम पिछले गुनाहों से तौबा करे कि या अल्लाह! मुझसे पिछली ज़िन्दगी में जितने गुनाह हुए हैं, छोटे हों या बड़े, और जितने फ़राईज़, वाजिबात मुझसे छूटे हैं, मैं आपसे उन सबकी माफ़ी माँगता हूँ। सबसे तौबा व इस्तिग़फ़ार करता हूँ। ऐ अल्लाह! मुझे माफ़ फ़रमा दीजिए और मेरी तौबा

को क़बूल फ़रमा लीजिए। यह "मुख़्तसर तौबा" है।

पिछली नमाज़ों का हिसाब

मुख़्तसर तौबा करने के बाद फिर तफ़सीली तौबा करे। तफ़सीली तौबा का मतलब यह है कि गुज़रे ज़माने में जो ग़लतियाँ हुई हैं उनमें से जिनकी तालफ़ी मुमकिन है उनकी तलाफ़ी शुरू कर दे। जैसे यह देखे कि अपनी पिछली ज़िन्दगी में मेरी नमाज़ें छूटी हैं या नहीं? इनसान जिस दिन बालिग़ हो जाता है उस दिन से उस पर नमाज़ फ़र्ज़ हो जाती है, चाहे वह लड़का हो या लड़की हो। लड़के का बालिग़ होना यह है कि बालिग़ होने की निशानियाँ ज़ाहिर हो जाएँ और लड़की का बालिग़ होना यह है कि उसकी माहवारी शुरू हो जाए। और बालिग़ होते ही दोनों पर नमाज़ फ़र्ज़ हो जाती है। इसलिए तफ़सीली तौबा करते वक़्त सबसे पहले यह देखे कि जिस दिन से बालिग़ हुआ हूँ उस दिन से आज तक मेरी कोई नमाज़ छूटी है या नहीं? अगर नहीं छूटी तो इस पर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करे। और अगर छूटी है तो फिर इसका हिसाब लगाए कि मेरे ज़िम्मे कौनसी नमाज़ कितनी बाक़ी हैं। अगर पूरी तरह ठीक-ठीक हिसाब लगाना संभव नहीं है तो फिर मोहतात अन्दाज़ा लगाए।

अगर बालिग़ होने की तारीख़ याद नहीं है तो फिर चौदह साल की उम्र के बाद से हिसाब लगाए। इसलिए कि हमारे इलाक़ों में चौदह साल पूरे होने पर बच्चे बालिग़ हो जाते हैं। इसलिए यह अन्दाज़ा लगाएँ कि चौदह साल की उम्र से लेकर आज तक कितनी नमाज़ें क़ज़ा हुई होंगी। इसका एक मोहतात अन्दाज़ा लगा ले। अन्दाज़ा लगाने के बाद किसी कापी में नोट कर ले। जैसे अन्दाज़ा लगाने के बाद पता चला कि तीन साल की नमाज़ें बाक़ी हैं। अब कापी के अन्दर लिख ले कि तीन साल की नमाज़ें मेरे ज़िम्मे हैं और फिर आज ही से उनको अदा करना शुरू कर दे। यह "क़ज़ा-ए-उम्री" कहलाती है।

क़ज़ा-ए-उम्री अदा करने का तरीक़ा

क़ज़ा-ए-उम्री की अदायगी का तरीक़ा यह है कि हर फ़र्ज़ नमाज़ के

साथ एक क़ज़ा नमाज़ पढ़ना शुरू कर दे। जैसे फ़ज्र के साथ फ़ज्र, ज़ोहर के साथ ज़ोहर, अस्र के साथ अस्र, मग़रिब के साथ मग़रिब, इशा के साथ इशा। और हर क़ज़ा नमाज़ की नीयत का तरीक़ा यह है कि जैसे फ़ज्र की नमाज़ क़ज़ा कर रहा है तो यह नीयत करे कि मेरे ज़िम्मे जितनी फ़ज्र की नमाज़ें क़ज़ा हैं उनमें से सबसे पहली फ़ज्र की नमाज़ पढ़ रहा हूँ। इसी तरह ज़ोहर की नमाज़ क़ज़ा करते वक़्त यह नीयत करे कि मेरे ज़िम्मे ज़ोहर की जितनी नमाज़ें क़ज़ा हैं उनमें से सबसे पहली ज़ोहर की नमाज़ पढ़ रहा हूँ। इसी तरह अस्र, मग़रिब और इशा में नीयत करे। और अगले रोज़ फिर यही नीयत करे और उससे अगले रोज़ फिर यही नीयत करे।

नमाज़ों के फ़िदये की वसीयत

और अपनी कापी के अन्दर यह लिख दे कि मैं आज की तारीख़ से क़ज़ा-ए-उम्री शुरू कर रहा हूँ। और हर नमाज़ के साथ एक नमाज़ पढ़ रहा हूँ और तीन साल की नमाज़ें मेरे ज़िम्मे क़ज़ा हैं। अगर क़ज़ा नमाज़ें पूरी होने से पहले मेरा इन्तिक़ाल हो जाए तो बाक़ी नमाज़ों का फ़िदया मेरे तर्के (छोड़े हुए माल) में से अदा कर दिया जाए। अगर आपने यह वसीयत नहीं लिखी तो फिर वारिसों के ज़िम्मे यह वाजिब नहीं होगा कि वे आपकी नमाज़ों का फ़िदया ज़रूर अदा करें, क्योंकि यह तुम्हारा माल उस समय तक तुम्हारा है जब तक तुम्हारी आँख खुली हुई है। जब मौत की बीमारी शुरू हो जाती है तो उसके बाद से वह माल तुम्हारा नहीं रहता बल्कि तुम्हारे वारिसों का हो जाता है। और अब तुम्हारे लिए उस माल में सिर्फ़ एक तिहाई की हद तक तसर्रुफ़ करना जायज़ है। एक तिहाई से ज़्यादा तसर्रुफ़ करना जायज़ नहीं। इसलिए अगर तुमने नमाज़ों का फ़िदया अदा करने की वसीयत नहीं की तो अगरचे तुम्हारे वारिसों को लाखों रुपये मिल गये हों तब भी उन पर यह वाजिब नहीं है कि वे तुम्हारी नमाज़ों का फ़िदया अदा करें। हाँ! अगर वे अपनी ख़ुशी से तुम्हारी नमाज़ों का फ़िदया अदा करें तो उनको इख़्तियार है।

इसलिए हर आदमी को यह वसीयत लिखनी चाहिये कि अगर मैं अपनी ज़िन्दगी में अपनी नमाज़ों की क़ज़ा न कर सका तो मैं वसीयत करता हूँ कि मेरे तर्के (छोड़े हुए माल) से मेरी नमाज़ों का फ़िदया अदा किया जाए। और साथ में नमाज़ें पढ़ना शुरू कर दो। अगर ये दो काम कर लिये तो फिर अल्लाह तआला की रहमत से उम्मीद है कि मान लो अगर नमाज़ें पूरी होने से पहले ही मर गये तो इन्शा-अल्लाह माफ़ी हो जाएगी। लेकिन अगर ये दो काम न किये, न तो वसीयत की और न ही नमाज़ों को अदा करना शुरू किया तो इसका मतलब यह है कि नमाज़ जैसे अहम और ज़रूरी फ़रीज़े से यह आदमी लापरवाह है।

आज ही से अदायगी शुरू कर दो

दुनिया के सारे काम-धन्धे चलते रहेंगे लेकिन हर इनसान के लिए सबसे ज़रूरी काम यह है कि वह यह देखे कि मेरे ज़िम्मे कितनी नमाज़ें बाक़ी हैं। अगर बाक़ी हैं तो आज ही से उनको अदा करना शुरू कर दे, कल पर न टाले। यह शैतान बड़ी अजीब चीज़ है। यह इनसान को इस तरह बहकाता है कि इनसान को पता भी नहीं चलता कि मुझको शैतान बहका रहा है। चुनाँचे यह शैतान मुसलमान के दिल में यह ख़्याल नहीं डालेगा कि नमाज़ कोई ज़रूरी चीज़ नहीं है कि इसको छोड़ दो, इसकी कोई अहमियत नहीं है, बल्कि दिल में यह ख़्याल डालेगा कि नमाज़ वैसे तो बड़ी ज़रूरी चीज़ है लेकिन ऐसे वक़्त में नमाज़ शुरू करो कि उसके बाद पाबन्दी से पढ़ो। इसलिए आज तो ज़रा तबीयत माईल नहीं है कल से नमाज़ शुरू करेंगे या परसों से शुरू करेंगे। क्योंकि अगर तुमने नमाज़ शुरू करके कल को छोड़ दी तो उल्टा तुम पर वबाल होगा। इसलिए अभी मत शुरू करो। पहले फ़लाँ काम निमटा लो और हफ़्ते-दस दिन के बाद शुरू करोगे तो फिर पाबन्दी हो जाएगी। शैतान टालता रहता है। चुनाँचे जिस काम की वजह से नमाज़ को टलाया था जब वह काम हो गया तो अगले हफ़्ते और कोई काम सामने आ जाएगा। इसी तरह शैतान आज को कल पर और कल को परसों पर टलाता ही चला जाएगा और फिर

ज़िन्दगी भर वह "कल" नहीं आती।

आज का काम कल पर मत टलाओ

काम करने का रास्ता यही है कि जिस काम को करना है उसको टलाना नहीं है। उस काम को आज ही से और अभी से और इसी वक़्त से शुरू कर दिया जाए तब तो वह काम हो जाएगा। लेकिन अगर तुमने उसको टला दिया तो उसका अन्जाम यह होगा कि फिर वह काम नहीं हो पाएगा। इसी वजह से एक हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जब सुबह का वक़्त हो तो शाम का इन्तिज़ार मत करो, और जब शाम का समय हो तो सुबह का इन्तिज़ार मत करो, और अपने आप को क़ब्र वालों में समझो।

गोया कि मैं आज क़ब्र में जाने वाला हूँ। इसलिए किसी काम को टलाओ नहीं।

सेहत और फ़ुरसत को ग़नीमत जानो

बहरहाल! जब गुज़रे ज़माने की नमाज़ें अदा करनी ही हैं तो फिर इन्तिज़ार किस बात का है? जब यह ज़रूरी काम है तो इसको फ़ौरन करो। अब अल्लाह तआ़ला ने सेहत दे रखी है। क्या पता कल को बीमारी आ जाए और उसकी वजह से नमाज़ अदा न कर सको। अब तो अल्लाह तआ़ला ने फ़राग़त दे रखी है, कल को यह फ़राग़त बाक़ी रहे या न रहे। अभी तो अल्लाह तआ़ला ने नमाज़ों की तलाफ़ी का जज़्बा दिया हुआ है, कल को यह जज़्बा बाक़ी रहे या न रहे। इसलिए जब नमाज़ों की अदायगी का ख़्याल आया तो उसको टलाओ नहीं, बल्कि अभी से और इसी वक़्त से शुरू कर दो।

क़ज़ा नमाज़ों की अदायगी में सहूलियत

फिर क़ज़ा नमाज़ के लिए अल्लाह तआ़ला ने यह सहूलियत रखी है कि उसको ऐसे वक़्त में भी पढ़ा जा सकता है जिस वक़्त में दूसरी नमाज़ें

नहीं पढ़ी जा सकतीं। जैसे सुबह सादिक़ के बाद से सूरज निकलने तक कोई नफ़िल या सुन्नत पढ़ना जायज़ नहीं। लेकिन क़ज़ा नमाज़ की इस वक़्त भी इजाज़त है। या जैसे अस्र की नमाज़ के बाद से सूरज के छुपने तक कोई नफ़िल या सुन्नत नहीं पढ़ सकते, यहाँ तक कि तवाफ़ की दो रक्अतें भी अस्र के बाद पढ़ना जायज़ नहीं। बल्कि अगर किसी ने अस्र की नमाज़ के बाद कई तवाफ़ कर लिए हैं तो उसके लिए हुक्म यह है कि वह मग़रिब की नमाज़ के बाद तमाम वाजिब तवाफ़ एक साथ अदा करे। लेकिन क़ज़ा नमाज़ उस वक़्त भी जायज़ है। अल्लाह तआला ने यह सहूलियत और आसानी इसी लिए दी है कि मुसलमान को जब भी अपनी क़ज़ा नमाज़ों को अदा करने का ख़्याल आए तो वह उसी वक़्त से अदा करना शुरू कर दे, उसके लिए कोई रुकावट न हो।

जागते ही पहले फ़ज्र की नमाज़ अदा करो

एक हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया। यह इरशाद याद रखने का है, ख़ास तौर पर उन लोगों को याद रखना चाहिये जिनकी नमाज़ें किसी वजह से क़ज़ा होती रहती हैं। फ़रमाया कि:

तर्जुमा: अगर कोई शख़्स नमाज़ से सो गया और नींद की हालत में नमाज़ का वक़्त गुज़र गया और जब जागा तो वक़्त गुज़र चुका था। या कोई शख़्स नमाज़ पढ़ना भूल गया और उस वक़्त याद आया जब नमाज़ का वक़्त गुज़र चुका था, तो ऐसे शख़्स के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमा रहे हैं कि जैसे ही वह जागे और जिस समय उसको याद आ जाए तो फ़ौरन नमाज़ पढ़ ले। क्योंकि जिस वक़्त उसको नमाज़ पढ़ना याद आया उसके लिए नमाज़ का समय वही है।

(मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा जिल्द 2 पेज 64)

फ़ज्र के लिए जागने का इन्तिज़ाम कर लो

जैसे कोई शख़्स उठने के लिए पूरा इन्तिज़ाम करके सोए। यानी किसी शख़्स को जगाने के लिए कह दिया और घड़ी का अलार्म भी लगा

दिया लेकिन उसके बावजूद वक़्त पर आँख नहीं खुली और उस वक़्त आँख खुली जब सूरज निकल चुका था, तो चूँकि जागने का इन्तिज़ाम करके सोया था इसलिए इन्शा-अल्लाह गुनाह नहीं होगा बशर्तेकि जैसे ही आँख खुले तो उस वक़्त पहला काम यह करे कि वुज़ू करके नमाज़ अदा करे। इसलिए कि उसके लिए यही नमाज़ का समय है। उस समय यह न सोचे कि नमाज़ क़ज़ा तो हो ही गयी चलो बाद में पढ़ लूँगा। अब तो जिस वक़्त भी पढ़ूँगा क़ज़ा ही होगी। बल्कि उसी वक़्त नमाज़ पढ़ ले, उसको आगे न टाले। अगर यह कर लिया तो नमाज़ क़ज़ा करने का गुनाह भी नहीं होगा। और अगर जागने का इन्तिज़ाम नहीं किया था तो फिर गुनाहगार होगा।

अल्लाह तआला ने क़ज़ा नमाज़ के लिए इतनी आसानियाँ रख दीं ताकि बन्दे के ज़िम्मे नमाज़ छोड़ने का वबाल और क़ज़ा का बोझ न रहे। इससे मालूम हुआ कि अल्लाह तआला और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हम पर बड़े मेहरबान हैं। इसलिए हर मुसलमान को इसकी फ़िक्र करनी चाहिये कि उसके ज़िम्मे नमाज़ का कोई हिसाब बाक़ी न रहे। अल्लाह तआला हम सबको इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन।

ज़कात का पूरा-पूरा हिसाब करो

दूसरी चीज़ "ज़कात" का बयान फ़रमाया। ज़कात की अहमियत भी नमाज़ के बराबर है। जहाँ क़ुरआन करीम में नमाज़ का हुक्म आया उसी के साथ ज़कात का हुक्म भी आया। फ़रमाया:

तर्जुमाः और नमाज़ अदा करो और ज़कात अदा करो।

(सूरः ब-क़रः आयत 43)

"ज़कात" का भी यही हुक्म है कि तौबा के मुकम्मल और पूरा होने के लिए यह ज़रूरी है कि आदमी ठीक-ठीक एक-एक पाई का हिसाब करके ज़कात अदा करे। हमारे समाज में ज़कात के बारे में भी बड़ी लापरवाही पाई जाती है। जो मुसलमान अल्लाह तआला के फ़ज़्ल व करम से ज़कात देने का एहतिमाम करते हैं और ज़कात निकालते हैं वे भी

ज़कात का पूरा हिसाब सही करके बहुत कम निकालते हैं, बल्कि वैसे ही अपने माल का अन्दाज़ा करके ज़कात दे देते हैं। हमारी ताजिर बिरादरी में अन्दाज़ा करके ज़कात निकालने का ज़्यादा रिवाज है, हालाँकि ज़कात निकालने का पूरा सही तरीक़ा यह है कि अपने माल का पूरा सही हिसाब करके फिर ज़कात निकालनी चाहिये।

ज़कात की अहमियत

बहरहाल! तौबा के मुकम्मल और पूरा होने का एक लाज़मी हिस्सा यह है कि माल का पूरा-पूरा हिसाब करके ज़कात निकाली जाए। आपने देखा कि सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुनिया से जाते वक़्त इस बात की नसीहत फ़रमा रहे हैं कि नमाज़ और ज़कात का एहतिमाम करो। ये दो चीज़ें तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह के हुक़ूक़ के बारे में ज़िक्र फ़रमाईं।

ग़ुलाम और बाँदियों का ख़्याल रखो

इसके बाद तीसरी चीज़ "बन्दों के हुक़ूक़" में से बयान फ़रमाई इसलिए इरशाद फ़रमायाः

व मा म-लकत् ऐमानुकुम

इसका शाब्दिक अर्थ यह है कि उन चीज़ों का ख़्याल रखो जो तुम्हारे दाहिने हाथ की मिल्कियत हैं। अरबी भाषा में इस शब्द से "ग़ुलाम" और "बाँदी" मुराद होते हैं। क़ुरआन करीम में भी यह शब्द इसी अर्थ में बार-बार इस्तेमाल हुआ है। पहले ज़माने में ग़ुलाम और बाँदियाँ होती थीं जो इनसान की मिल्कियत होती थीं। इसलिए इस शब्द के ज़ाहिरी मायने यह हैं कि ग़ुलामों और बाँदियों का ख़्याल रखो। उनके साथ अच्छा सुलूक करो और उनके हुक़ूक़ पूरी तरह अदा करो।

"मा म-लकत् ऐमानुकुम" में तमाम मातेहत दाख़िल हैं

मेरे वालिद माजिद हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाया करते थे कि यहाँ पर लफ़्ज़ "मा म-लकत्

ऐमानुकुम" में सिर्फ़ ग़ुलाम और बाँदियों की बात नहीं है बल्कि इस लफ़्ज़ से हर तरह के मातेहत मुराद हैं। चुनाँचे हज़रत वालिद साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि इसका तर्जुमा "मातेहत लोग" से किया करते थे। इसलिए नौकर, मुलाज़िम सब इसमें दाख़िल हैं। इसी तरह जो शख़्स दूसरे लोगों पर अमीर (हाकिम और सरदार) हो, उस अमीर के मातेहत जितने लोग हों वे सब इसमें दाख़िल हैं। और इसमें औ़रतें भी दाख़िल हैं, क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने घराने का अमीर मर्द को बनाया है और औ़रत को उसका मातेहत बनाया है। इसलिए इस शब्द में औ़रतें भी दाख़िल हैं। बहरहाल! हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कितना ठोस लफ़्ज़ बयान फ़रमाया जिसमें तमाम मातेहतों के हुक़ूक़ दाख़िल हो गये।

मातेहत अपना हक़ नहीं माँग सकता

इस लफ़्ज़ के ज़रिये हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह बता दिया कि जो लोग भी तुम्हारी मातेहती में हैं और जिन पर अल्लाह तआ़ला ने तुमको हाकिम बनाया है, उनके हुक़ूक़ का ख़ास तौर पर ख़्याल रखो। इसकी ताकीद इसलिए फ़रमाई कि जो आदमी बराबर का होता है वह तो किसी भी वक़्त अपने हक़ का मुतालबा कर लेता है। लेकिन जो बेचारा मातेहत है उसके लिए अपने हक़ का मुतालबा करने में रुतबा और दर्जा रुकावट है। कभी-कभी वह अपने हक़ का मुतालबा करने में बेज़बान होता है। इसलिए जब तक तुम्हारे दिल में अल्लाह तआ़ला का ख़ौफ़ नहीं होगा और जब तक तुम्हारे दिल में इस बात का ख़्याल नहीं होगा कि मुझे खुद इसके हुक़ूक़ (अधिकारों) का ख़्याल रखना है, उस समय तक उसके हुक़ूक़ ठीक-ठीक अदा नहीं हो सकते।

नौकर को कमतर मत समझो

इसी तरह आजकल जो मुलाज़िमीन और नौकर होते हैं उनको अपने से कमतर और हक़ीर समझना बड़ी जहालत की बात है। अगर तुमने किसी को अपना नौकर रखा है, चाहे वह घर के काम के लिए ही क्यों न रखा हो, सिर्फ़ इतनी बात है कि तुमने उसके साथ एक मुआ़हिदा किया है

वह नौकर मुआहिदे का एक पक्ष है, तुमने उसकी सेवाएँ ख़रीदी हैं, और उसने अपनी सेवाएँ तुम्हें बेची हैं, और उसके बदले में तुमने उसको पैसे और तन्ख़्वाह (वेतन) देना तय किया है। इसलिए तुम भी मुआहिदे के एक फ़रीक़ (पक्ष) हो और वह भी मुआहिदे को एक फ़रीक़ (पक्ष) है।

तुम और तुम्हारा नौकर दर्जे में बराबर हैं

मान लो कि तुम कहीं बाज़ार में किसी दुकान पर जाओ और दुकानदार से कोई सौदा ख़रीदो। तुम उसको पैसे दे रहे हो और दुकानदार सौदा दे रहा है। तो क्या इस लेन-देन करने के नतीजे में तुम्हारा दर्जा ज़्यादा हो गया और दुकानदार का दर्जा कम हो गया? नहीं! बल्कि तुम दोनों बराबर के फ़रीक़ हो। तुम पैसे दे रहे हो और वह सौदा दे रहा है। इसी तरह तुम्हारा मुलाज़िम और तुम्हारा नौकर भी इस मायने में तुम्हारा बराबर का फ़रीक़ है कि तुम पैसे दे रहे हो और वह अपनी सेवाएँ दे रहा है। इसलिए दर्जे के एतिबार से उसको कमतर और हक़ीर समझना और उसको अपमानित नज़रों से देखना किसी तरह भी जायज़ नहीं।

तुम्हारे नौकर तुम्हारे भाई हैं

एक हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः यानी तुम्हारे ख़ादिम, नौकर और मुलाज़िम सब तुम्हारे भाई हैं। सिर्फ़ इतनी बात है कि अल्लाह तआ़ला ने उनको तुम्हारा मातेहत बना दिया है। इसलिए उनको उसी खाने में से खिलाओ जो तुम खाते हो, और उसी कपड़े में से पहनाओ जो तुम पहनते हो। (बुख़ारी शरीफ़)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मातेहतों के बारे में यह शिक्षा दी। यह नहीं कि वह अगर तुम्हारा नौकर हो गया तो अब वह जानवर हो गया। और फिर उसके साथ जानवरों जैसा सुलूक करो और उसके साथ अपमान भरा व्यवहार करो। अरे वह मुलाज़िम तुम्हारा भाई है, उसके साथ भाईयों जैसा सुलूक करना चाहिये।

अल्लाह तआ़ला को तुम पर ज़्यादा कुदरत हासिल है

हदीस शरीफ़ में आता है कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व

सल्लम हज़रत अबू मसऊद अन्सारी रज़ियल्लाहु अ़न्हु के पास से गुज़रे। वह अपने गुलाम पर गुस्सा कर रहे थे और डाँट रहे थे, और क़रीब था कि वह उस गुलाम को मारें। जब सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनको देखा तो उनसे फ़रमायाः

तर्जुमाः जितनी क़ुदरत तुम्हें इस ग़ुलाम पर हासिल है, अल्लाह तआ़ला को उससे ज़्यादा तुम पर क़ुदरत हासिल है। (मुस्लिम शरीफ़)

इसलिए अगर तुम इसके साथ गुस्से का मामला करोगे या इसको मारोगे या इसके साथ ज़्यादती करोगे तो अल्लाह तआ़ला इसका बदला तुम से लेंगे। अबू मसऊद अन्सारी रज़ियल्लाहु अ़न्हु की शान देखिए कि गुस्सा आ रहा है। गुस्से की हालत में हैं और गुलाम को मारने के क़रीब हैं, और गुलाम को मारने के लिए हाथ उठा लिया है। लेकिन जब सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का एक जुमला (वाक्य) सुना कि अल्लाह तआ़ला को तुम पर इससे ज़्यादा क़ुदरत हासिल है जितनी क़ुदरत तुम्हें इस ग़ुलाम पर हासिल है। उसी वक़्त फ़रमाया कि या रसूलल्लाह! मैंने इस ग़ुलाम को आज़ाद कर दिया। कहाँ तो गुस्सा आ रहा है, उसको डाँट रहे हैं, और कहाँ उसको बिल्कुल आज़ाद कर दिया।

यह अहमक़ाना ख़्याल है

कभी-कभी हमारे दिमाग़ों में यह अहमक़ाना ख़्याल आ जाता है कि काश! हम भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में होते। याद रखिए! यह अहमक़ाना (मूर्खतापूर्ण) ख़्याल है। क्योंकि अगर उस ज़माने में होते तो मालूम नहीं किस गढ़े में गिरे होते। अल्लाह तआ़ला जिसको जो मुक़ाम देते हैं उसका ज़र्फ़ देखकर देते हैं। यह सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ही का ज़र्फ़ था कि वह सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सोहबत का हक़ अदा कर गये। सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम अपने एक-एक अ़मल से सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हुक्म की इताअ़त और तामील की मिसाल क़ायम करके चले गये। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के एक-एक

कलिमे पर उनके सारे जज़्बात कुरबान थे।

ज़्यादा सज़ा देने पर पकड़ होगी

बहरहाल! नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुनिया से जाते-जाते यह इरशाद फ़रमा गये कि अपने मातेहतों का ख़्याल करो। इसकी वजह यह है कि अल्लाह के हुक़ूक़ की तलाफ़ी तौबा व इस्तिग़फ़ार से हो जाती है, लेकिन अगर तुमने अपने मातेहतों पर जुल्म व ज़्यादती कर ली और वह मातेहत भी बेज़बान है जो तुम्हें कुछ नहीं कह सकता तो उसके साथ ज्यादती की तलाफ़ी का कोई रास्ता नहीं है।

हदीस शरीफ़ में आता है कि एक बार एक सहाबी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा या रसूलल्लाह! अगर मेरा गुलाम कोई ग़लती करे या कोई ग़लत काम करे तो मैं उसको सज़ा दे सकता हूँ या नहीं? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जवाब में फ़रमाया कि सज़ा तो दे सकते हो मगर इस बात का ख़्याल रखना कि तुम्हारी सज़ा उसकी ग़लती के बराबर होनी चाहिये। इसलिए अगर तुम्हारी सज़ा उस ग़लती से कम रही तो अल्लाह तआला तुम्हारा हक़ उस ग़ुलाम से आख़िरत में दिला देंगे, लेकिन अगर तुम्हारी सज़ा उसकी ग़लती से बढ़ गयी तो क़ियामत के दिन उसका हाथ होगा और तुम्हारा गिरेबान होगा। और अल्लाह तआला उस ज़्यादती का बदला तुमसे दिलवाएँगे। यह सुनकर वह सहाबी चीख़ पड़े और कहा कि या रसूलल्लाह! कहीं ऐसा न हो कि मुझसे ज़्यादती हो गयी हो। आपने फ़रमाया कि क्या कुरआन करीम में तुमने यह आयत नहीं पढ़ी?

तर्जुमाः जो शख़्स एक ज़र्रे के बराबर भी भलाई करेगा वह आख़िरत में अपने सामने उसको देखेगा। और जो शख़्स एक ज़र्रे के बराबर बुराई करेगा आख़िरत में अपने सामने उसको देखेगा। (सूरः ज़िल्ज़ाल आयत 7,8)

इसलिए अपने मातेहत को सज़ा तो दो लेकिन तौल कर दो। जितना उसका क़सूर है कहीं उससे ज़्यादा तो सज़ा नहीं दे रहे हो? उन सहाबी ने फ़रमाया कि या रसूलल्लाह! यह तो बड़ा मुश्किल काम है, मैं कहाँ से